● वर्ष-3
● अंक-64
रायपुर, रविवार
22 अक्टूबर 2023
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› 23 को दुर्गा विसर्जन

2024 से पहले मोदी सरकार की बड़ी तैयारी

योजनाओं के पूर्ण क्रियान्वयन के लिए शुरू करेगी व्यापक अभियान

नईदिल्ली। हाल ही में शीर्ष अधिकारियों के साथ बैठक में पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा था कि कल्याणकारी योजनाओं की संतृप्ति में तेजी लाने की जरूरत है। आधिकारिक सूत्रों ने इस बात की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वह चाहते हैं कि उनकी सभी योजनाएं अगले 6 महीनों में पूर्ण संतृप्ति तक पहुंच जाएं। फिर से एक कैबिनेट बैठक में, उन्होंने अपने कैबिनेट सहयोगियों को कड़ी मेहनत करने और यह सुनिश्चित करने के लिए प्रोत्साहित किया कि जिन लाभार्थियों को कल्याणकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिला है, उनतक वह तेजी से पहुंचें।

आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि सभी योजनाओं की पूर्ण संतृप्ति सुनिश्चित करने के लिए, भारत सरकार ने %विकसित भारत संकल्प यात्रा नामक एक मेगा संतृप्ति अभियान शुरू करने का निर्णय लिया है। यह अभियान देश की सभी 2.7 लाख पंचायतों में चलाया जाएगा और रथ लाभार्थियों तक पहुंचने और उनका नामांकन करने के लिए यात्रा करेंगे। यह संतृप्ति अभियान दिवाली के बाद शुरू होने वाला है और कई हफ्तों तक चलेगा। यह अभियान प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, पीएम किसान, फसल बीमा योजना, पोषण अभियान, उज्ज्वला योजना आदि आयुष्मान भारत, जनऔषधि योजना, पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना, कौशल विकास योजनाओं विश्वकर्मा योजना और बहुत कुछ जैसी योजनाओं की संतृप्ति सुनिश्चित करेगा।

इससे पहले नरेन्द्र मोदी ने महिलाओं के सशक्तीकरण और जन औषधि केंद्रों की संख्या बढ़ाने पर हुई प्रगति की समीक्षा के लिए मंगलवार को एक उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने स्वतंत्रता दिवस के भाषण में इन योजनाओं की घोषणा की थी। प्रधानमंत्री खुद सभी परियोजनाओं की समीक्षा कर रहे हैं। 2024 में लोकसभा चुनाव होने है। यही कारण है कि सरकारी योजनाओं में तेजी लाने की कोशिश हो रही है। यह अभियान ऐसे वक्त शुरू किया जा रहा है जब सत्तारूढ़ दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) मोदी के नेतृत्व में 2014 और 2019 के आम चुनावों में बड़ी जीत के बाद लगातार तीसरे कार्यकाल की तलाश में अगले साल अप्रैल-मई में होने वाले लोकसभा चुनावों के लिए तैयार हो रही है।

पूरे विश्व में जमी हुई है भारत की धाक- मोदी

सिंधिया स्कूल के 125वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि सिंधिया स्कूल के 125 वर्ष होने पर आप सभी को बहुत-बहुत बधाई। आज आज़ाद हिंद सरकार का स्थापना दिवस भी है, मैं आप सभी को इसकी भी बधाई देता हूं। उन्होंने कहा कि साल 2014 में जब देश ने मुझे प्रधानसेवक का दायित्व दिया तब मेरे पास 2 रास्ते थे- या तो सिर्फ तात्कालिक लाभ के लिए काम करें या दीर्घकालिक अप्रोच को अपनाएं। आज हमारी सरकार को 10 साल हो रहे हैं और इस दौरान देश ने दीर्घकालिक प्लानिंग के साथ जो फैसले किए वह अभूतपूर्व है।त्योहारों पर जमकर ऑनलाइन शॉपिंग कर रहे हैं। आज भारत सफलता की जिस ऊंचाई पर है वह अभूतपूर्व है। पूरे विश्व में भारत की धाक जमी हुई है।

आउट ऑफ द बॉक्स सोचिए

23 अगस्त को भारत चंद्रमा पर वहां पहुंचा, जहां अब तक कोई देश नहीं पहुंच पाया था। उन्होंने कहा कि पहले सैटेलाइट सिर्फ सरकार बनाती थी या विदेश से मंगवाती थी, हमने स्पेस सेक्टर को आप जैसे युवाओं के लिए खोल दिया है। हमने डिफेंस सेक्टर को आप जैसे युवाओं के लिए खोल दिया है। आपको मेक इन इंडिया के संकल्प को आगे बढ़ाना है। हमेशा आउट ऑफ द बॉक्स सोचिए। उन्होंने कहा कि आज भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था है। आज भारत ग्लोबल फिनटेक एडॉप्शन रेट में नंबर 1 पर है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज ही गगनयान के क्रू एस्केप सिस्टम का सफल परीक्षण किया गया... आज भारत के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। उन्होंने कहा कि भारत गरीबी भी दूर करेगा और विकसित भी बनेगा। आज का भारत जो भी कर रहा है वह मेगा स्केल पर कर रहा है। आपका सपना ही मेरा संकल्प है। चुनावी मौसम में मोदी ने कहा कि दो वजहों से ग्वालियर से मेरा विशेष नाता भी है- एक तो मैं काशी का सांसद हूं और काशी की सेवा करने में, हमारी संस्कृति के संरक्षण में, सिंधिया परिवार की बहुत बड़ी भूमिका रही है।

पाकिस्तानी की ओर से गोलीबारी की घटनाएं बढ़ी

नईदिल्ली। लगता है कि पाकिस्तानी सेना का एक बार फिर पिटने का मन कर रहा है इसीलिए वह उकसावे वाली कार्रवाई कर रही है। इस सप्ताह पाकिस्तानी सेना ने एलओसी के पार से दो बार अकारण गोलीबारी की जिसका भारतीय सुरक्षा बलों ने करारा जवाब दिया। भारतीय अधिकारियों ने यह मुद्दा पाकिस्तान के समक्ष उठाया भी है लेकिन झूठा पाकिस्तान आरोपों से मुकर गया है। सवाल यह है कि आखिर पाकिस्तान के मन में चल क्या रहा है? हम आपको यह भी बता दें कि पाकिस्तान की हर हरकत पर मोदी सरकार की नजर बनी हुई है इसीलिए गृह राज्य मंत्री एलओसी का दौरा कर आये हैं।

जहां तक पाकिस्तान की ओर से की गयी गोलीबारी की बात है तो आपको बता दें कि जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के केरन सेक्टर में नियंत्रण रेखा के पार से हुई गोलीबारी में शुक्रवार को एक सैनिक घायल हो गया। अधिकारियों ने बताया कि जवान को चांदनी चौकी के पास गोली लगी और उसे विशेष उपचार के लिए यहां सेना के 92 बेस अस्पताल में भेजा गया है। अधिकारियों ने बताया कि जवान का उपचार जारी है और उनकी हालत स्थिर बताई जा रही है। हम आपको यह भी बता दें कि इसी सप्ताह मंगलवार को भी अरनिया सेक्टर में अंतरराष्ट्रीय सीमा के निकट विक्रम बीओपी पर पाकिस्तान रेंजर्स की अकारण गोलीबारी में बीएसएफ के दो जवान घायल हो गए थे।

सीमा सुरक्षा बल ने भारत-पाकिस्तान सीमा के निकट अग्रिम चौकी पर सीमा पार से अकारण हुई गोलीबारी को लेकर पाकिस्तान रेंजर्स के समक्ष विरोध दर्ज कराया है। अधिकारियों ने बताया है कि बीएसएफ ने बृहस्पतिवार शाम आरएस पुरा सेक्टर में अंतरराष्ट्रीय सीमा के निकट बॉर्डर आउटपोस्ट (बीओपी) में हुई कमांडेंट स्तर की फ्लैग मीटिंग में पाकिस्तान रेंजर्स के समक्ष मुद्दा उठाया। बैठक के दौरान बीएसएफ के अधिकारियों ने सीमा पार से मादक पदार्थों की तस्करी का मुद्दा भी उठाया और कहा कि उनके पास बल द्वारा मारे गए तस्करों के सचित्र साक्ष्य हैं। हालांकि पाकिस्तान रेंजर्स ने हमेशा की तरह आरोपों से इंकार कर दिया। इस बीच, एक बड़ी खबर यह है कि केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने शुक्रवार को कश्मीर के अग्रिम इलाकों का दौरा किया और नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर तैनात सीमा सुरक्षा बल के जवानों से बातचीत की। बीएसएफ कश्मीर ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, भारत सरकार के गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने श्रीनगर के अग्रिम इलाकों का दौरा किया और नियंत्रण रेखा पर तैनात बीएसएफ कश्मीर के जवानों के साथ बातचीत की। बीएसएफ ने कहा कि गृह राज्य मंत्री ने देश की सीमाओं की सुरक्षा में सैनिकों के अटूट समर्पण की सराहना की। नित्यानंद राय ने मध्य कश्मीर के गांदरबल जिले का दौरा भी किया और 19 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का उद्घाटन करने के अलावा विकास कार्यों की आधारशिला रखी।

लखनऊ/अयोध्या। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को अयोध्या पहुंचे। यहां पहुंचने पर रामकथा पार्क पर उनका स्वागत किया गया। यहां से सीएम सीधे हनुमानगढ़ी मंदिर गए और संकटमोचन हनुमान के चरणों में शीश झुकाया। यहां से मुख्यमंत्री सीधे रामलला के दर्शन करने पहुंचे। यहां भी सीएम ने मर्यादा पुरुषोत्तम की पूजा-अर्चना की।

आने वाला है चक्रवात तेज

नईदिल्ली। अरब सागर से चले चक्रवात तेज के कारण मौसम विभाग अलर्ट पर आ गया है। भारतीय मौसम विभाग ने अरब सागर में विकसित होने वाले इस संभावित तूफान के मद्देनजर महाराष्ट्र शहर में मौसम परिवर्तन को लेकर भी चेतावनी जारी की है। मौसम विभाग ने मौसम का अपडेट भी किया है, जिसमें संभावना जताई गई है ये चक्रवात कई शहरों को प्रभावित कर सकता है।

तूफान के कारण महाराष्ट्र और खास तौर से मुंबई के लिए चेतावनी जारी हुई है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने चक्रवात के संबंध में शुक्रवार को बताया कि दक्षिण पूर्व और दक्षिण पश्चिम अरब सागर के ऊपर दबाव का क्षेत्र बना है। इससे 21 अक्टूबर की सुबह तक चक्रवाती तूफान बन जाएगा। बता दें कि इस वर्ष अरब सागर में बनने वाला ये दूसरा तूफान है। इस तूफान को तेज नाम दिया गया है।

अटल बिहारी वाजपेयी को राष्ट्रपति बनानी चाहती थी एनडीए

नईदिल्ली। 2002 में, पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपनी टीम की सलाह के बावजूद राष्ट्रपति बनने का मौका यह कहते हुए ठुकरा दिया था कि ऐसा कदम भारत के संसदीय लोकतंत्र को कमजोर कर देगा और भविष्य के नेताओं के लिए एक खतरनाक उदाहरण स्थापित करेगा, जैसा कि उनके मीडिया सलाहकार की एक नई किताब में दावा किया गया है। अशोक टंडन, जिन्होंने 1998 से 2004 के बीच प्रधान मंत्री के रूप में वाजपेयी के कार्यकाल के दौरान उनके मीडिया सलाहकार के रूप में कार्य किया, ने अपनी पुस्तक द रिवर्स स्विंग: कॉलोनियलिज्म टू कोऑपरेशन में कहा है कि यह पूर्व प्रधान मंत्री थे जिन्होंने केआर नारायण के कार्यकाल के बाद राष्ट्रपति पद के लिए एपीजे अब्दुल कलाम की सिफारिश की थी। इस सिफारिश पर कांग्रेस नेताओं को आश्चर्य हुआ लेकिन समाजवादी पार्टी द्वारा इस विचार का समर्थन करने के बाद सभी दल आम सहमति पर पहुंच गए। टंडन एक प्रसंग का वर्णन करते हैं जब श्री वाजपेयी की टीम ने सुझाव दिया कि उन्हें एनडीए के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में नामित किया जाए, जिससे प्रधान मंत्री पद लालकृष्ण आडवाणी के लिए छोड़ दिया जाए। लेकिन वाजपेयी को इस बात की चिंता थी कि यदि कोई मौजूदा प्रधानमंत्री राष्ट्रपति पद के लिए चुना जाता है, खासकर भारी बहुमत के साथ, तो यह भारत के संसदीय लोकतंत्र को कमजोर कर देगा और भविष्य के नेताओं के लिए एक खतरनाक मिसाल कायम करेगा।

टंडन ने लिखा कि मुझे याद है, सोनिया गांधी, प्रणब मुखर्जी और डॉ. मनमोहन सिंह उनसे मिलने आए थे। वाजपेयी ने पहली बार आधिकारिक तौर पर यह खुलासा करके उन्हें आश्चर्यचकित कर दिया था कि एनडीए ने राष्ट्रपति चुनाव के लिए डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम को मैदान में उतारने का फैसला किया है। टंडन लिखते हैं, वाजपेयी की आश्चर्यजनक घोषणा के बाद, कांग्रेस नेता सोनिया गांधी की आवाज़ से पहले एक स्तब्ध शांति छा गई। गांधी ने कहा, हम आपकी पसंद से आश्चर्यचकित हैं। हमारे पास उनका समर्थन करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। लेकिन आपके प्रस्ताव पर चर्चा करेंगे और निर्णय लेंगे।

प्रमुख समाचार

भाजपा ने जारी की राजस्थान के 83 उम्मीदवारों की दूसरी लिस्ट

नईदिल्ली। भाजपा ने शनिवार को आगामी राजस्थान विधानसभा चुनाव के लिए कुल 83 उम्मीदवारों की अपनी दूसरी लिस्ट जारी कर दी है। पूर्व सीएम वसुंधरा राजे झालरापाटन से चुनाव लड़ेंगी जबकि अंबर से सतीश पूनिया और तारानगर से राजेंद्र राठौड़ को टिकट दिया गया है। आपको बता दें कि भाजपा की वर्तमान राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया प्रदेश की झालरापाटन विधान सभा से वर्ष 2003, 2008, 2013 और 2018 में लगातार चार बार चुनाव जीत चुकी हैं। अन्य उम्मीदवारों की बात करें तो भाजपा ने शनिवार को जारी अपनी दूसरी लिस्ट में सिद्धि कुमारी को बीकानेर पूर्व, राजेंद्र राठौड़ को तारानगर, संतोष अहलावत को सुरजगढ़, सतीश पुनिया को अम्बेर, कालीचरण सराफ को मालवीय नगर, हेम सिंह भड़ाना को थानागाजी, नरपत सिंह राजवी को चित्तौड़गढ़, दीप्ति महेश्वरी को राजसमंद और गोविंद रानीपुरिया को मनोहर थाना से उम्मीदवार घोषित किया है।इससे पहले, भाजपा ने राजस्थान के लिए अपनी पहली लिस्ट 9 अक्टूबर को जारी की थी, जिसमें पार्टी ने 41 उम्मीदवारों की घोषणा की थी।

सुशांत केस में फंसे आदित्य ठाकरे छोड़ सकते हैं देश-नितेश

नईदिल्ली।बीजेपी नेता और विधायक नितेश राणे ने आदित्य ठाकरे पर निशाना साधते हुए कहा है कि दशहरा के बाद वह देश छोड़कर चले जाएंगे। एएनआई के मुताबिक, नितेश राणे ने कहा कि मुझे पता चला है कि सुशांत सिंह और दिशा सालियान मामले में गिरफ्तारी से बचने के लिए आदित्य ठाकरे दशहरे के बाद देश छोड़ सकते हैं। संजय राउत क्यों सोच रहे हैं कि ललित पाटिल की गिरफ्तारी (ड्रग्स मामले में) के बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि सुशांत सिंह राजपूत और दिशा सालियान मामले में हमने भी प्रमाण के साथ कई आरोप लगाए हैं। भाजपा नेता ने दावा किया कि आदित्य ठाकरे इतने डर गए हैं कि उन्होंने याचिका दायर किया है। नितेश राणे ने आगे कहा कि आदित्य ठाकरे का टिकट तैयार रखा गया है। जिस तरह से मामला कोर्ट में चल रहा है, ऐसे में उनकी गिरफ्तारी हो सकती है। उन्होंने कहा कि दिशा सालियान केस में आदित्य ठाकरे का नाम है और फिर भी कहा जा रहा है कि इसमें कुछ भी नहीं है। इतना ही नहीं उन्होंने आदित्य ठाकरे की आलोचना करते हुए कहा कि उन्हें दिशा सालियान मामले में गिरफ्तारी का डर है। इसके साथ ही नितेश राणे ने यह भी भविष्यवाणी की कि दशहरा सभा के बाद आदित्य ठाकरे देश छोड़ देंगे।

महुआ भारत में थीं, उनकी आईडी दुबई से हुई लॉगिन

नईदिल्ली। तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा पर एक बार फिर निशाना साधते हुए भारतीय जनता पार्टी के लोकसभा सदस्य निशिकांत दुबे ने शनिवार को कहा कि जब वह (मोइत्रा) भारत में थीं तब उनके संसदीय लॉगिन आईडी का इस्तेमाल दुबई में किया गया था। उन्होंने दावा किया कि राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र ने जांच एजेंसियों को इस बारे में खुलासा किया है। भाजपा नेता ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''कुछ पैसे के लिए एक सांसद ने देश की सुरक्षा को गिरवी रखा। दुबई से संसद के आईडी खोले गए,उस वक़्त कथित सांसद भारत में ही थे। पूरी भारत सरकार, देश के प्रधानमंत्री , वित्त विभाग, केन्द्रीय एजेंसियां इस एनआईसी का इस्तेमाल करते हैं।' एनआईसी ने यह जानकारी जांच एजेंसी को दी है।'' इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत आने वाला राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र केंद्र सरकार, राज्य सरकारों, संघ शासित प्रदेश प्रशासन, जिले और अन्य सरकारी निकाय को सूचना और संचार प्रौद्योगिकी समाधान अपनाने और ई-गवर्नेंस सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

राहत सामग्री से भरे 20 ट्रकों ने गाजा में किया प्रवेश

गाजा। इजरायल और हमास के बीच 7 अक्टूबर को भड़के संघर्ष के बाद शनिवार को पहली बार मानवीय सहायता से भरे 20 ट्रक गाजा में दाखिल हुए। इजरायल और हमास के बीच 7 अक्टूबर को भड़के संघर्ष के बाद दो सप्?ताह की नाकेबंदी में शनिवार को पहली बार ढील दी गई और मानवीय सहायता से भरे 20 ट्रक राफा क्रॉसिंग के माध्यम से गाजा में दाखिल हुए, जो तटीय एंक्लेव और मिस्र के बीच एकमात्र सीमा क्रॉसिंग है।लाइफ मेकर्स फाउंडेशन के जनसंपर्क अधिकारी अया अहमद ने समाचार एजेंसी शिन्हुआ को बताया कि ट्रकों में मिस्र की संस्थाओं नेशनल अलायंस फॉर सिविल डेवलपमेंट वर्क और इजिप्शियन रेड क्रिसेंट द्वारा दान की गई चिकित्सा सहायता भरी हुई थी।इससे पहले इज़राइल राफा क्रॉसिंग के माध्यम से गाजा में सहायता ले जाने वाले 20 ट्रकों को अनुमति देने पर सहमत हुआ। हालांकि उसने ईंधन की मदद को जाने की अनुमति नहीं दी। इससे पहले दिन में, इज़राइल में अमेरिकी दूतावास ने कहा कि उसे जानकारी मिली है कि रफ़ा क्रॉसिंग शनिवार सुबह 10 बजे (स्थानीय समय के अनुसार) खुलेगी।

50 साल से लंबित मामलों पर सुप्रीम कोर्ट ने जताई नाराजगी

नईदिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने अपने हालिया फैसले में 50 साल से अधिक समय से लंबित मुकदमेबाजी पर नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि न्यायिक देरी के कारण जनता का न्याय वितरण प्रणाली से मोहभंग हो रहा है। न्यायमूर्ति एस. रवींद्र भट्ट और न्यायमूर्ति अरविंद कुमार की पीठ ने राष्ट्रीय न्यायिक डेटा ग्रिड से डेटा निकाला और पाया कि देश का सबसे पुराना सिविल मामला 1952 से पश्चिम बंगाल के मालदा जिले में सिविल जज सीनियर डिवीजन की अदालत में लंबित है। पीठ ने कहा कि महाराष्ट्र में विभिन्न मजिस्ट्रेट अदालतों में लंबित शीर्ष तीन आपराधिक मामले 1961 और उससे भी पहले के हैं। इसमें कहा गया है कि कानून में कई खामियां, अनावश्यक और बड़ी कागजी कार्रवाई, गवाहों की अनुपस्थिति, बिना किसी उचित कारण के स्थगन मांगा और दिया गया, समन की सेवा में देरी, नागरिक प्रक्रिया संहिताके प्रावधानों के कार्यान्वयन की कमी और दंड प्रक्रिया संहिता देरी का प्रमुख कारण है। सुप्रीम कोर्ट ने लंबित मामलों की त्वरित सुनवाई के लिए विस्तृत दिशानिर्देश जारी करने की बात कही। कोर्ट ने कहा, न केवल सभी स्तरों पर लंबित मामलों के विशाल ढेर को निपटाने के लिए सक्रिय कदम उठाने की तत्काल आवश्यकता है।

मुसलमानों पर हमलों की शिकायत पर सुप्रीम कोर्ट का केंद्र राज्य को नोटिस

मंदिरों-गुरुद्वारा से जुड़ी याचिका से सुप्रीम कोर्ट ने बनाई दूरी

नईदिल्ली। सुप्रीम कोर्ट से लेकर लोअर कोर्ट तक के वीकली राउंड अप में इस सप्ताह कानूनी खबरों के लिहाज से काफी उथल-पुथल वाला रहा है। सुप्रीम कोर्ट पीएमएलए कानून की समीक्षा करेगा। गिरफ्तारी और संपत्ति कुर्की के अधिकार पर भी उठे सवाल। सुप्रीम कोर्ट ने कॉलिजियम की सिफारिशों पर केंद्र के रवैये से नाराजगी जताई है। राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता बहाली को चुनौती देने वाले याचिकाकर्ता पर सुप्रीम कोर्ट ने जुर्माना लगाया। सीपीआई की महिला शाखा ने मुसलमानों पर हमलों की को लेकर किया सुप्रीम कोर्ट का रूख। हिंदू, सिख, जैन और बौद्ध धार्मिक संस्थानों की संपत्ति के रखरखाव और प्रबंधन की जनहित याचिका पर नाराज हुआ सुप्रीम कोर्ट। इस हफ्ते यानी 16 अक्टूबर से 21 अक्टूबर तक क्या कुछ हुआ? कोर्ट के कुछ खास ऑर्डर/जजमेंट और टिप्पणियों का विकली राउंड अप आपके सामने लेकर आए हैं। कुल मिलाकर कहें तो आपको इस सप्ताह होने वाले भारत के विभिन्न न्यायालयों की मुख्य खबरों के बारे में बताएंगे।सुप्रीम कोर्ट कलीजियम की सिफारिश के बाद केंद्र सरकार द्वारा कुछ नाम को अधिसूचित किए जाने और कुछ को छोड़े जाने पर सुप्रीम कोर्ट ने चिंता जाहिर की है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इससे वरिष्ठता प्रभावित होती है। जस्टिस कौल ने कहा, यह नहीं होना चाहिए। इससे जजों के लिए लोग नाम वापस ले लेते हैं और हम अच्छे कैंडिडेट खो देते हैं। मामले में अगली है सुनवाई 7 नवंबर को होगी । सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर कहा गया है कि केंद्र सरकार सुप्रीम कोर्ट के 2021 के जजमेंट का पालन नहीं कर रही है, जिसमें कहा गया था कि कलीजियम सिफारिश से जजों के नामों को अधिसूचित करने के लिए एक टाइमलाइन बनाया जाए। याचिका पर शीर्ष अदालत में सुनवाई चल रही है। हाल ही में केंद्र सरकार ने सिफारिश से कई नाम क्लियर किए गए हैं और कई जजों के ट्रांसफर से संबंधित नोटिफिकेशन जारी किए गए हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने उस जनहित याचिका पर विचार करने से इनकार कर दिया, जिसमें हिंदुओं, जैनियों, बौद्धों और सिखों को मुसलमानों, पारसियों और ईसाइयों की तरह अपने धार्मिक स्थलों की स्थापना, प्रबंधन और रखरखाव का अधिकार देने की मांग की गई थी। कोर्ट ने कहा कि यह नीति का मामला है। भारत के मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने व्यक्तिगत रूप से याचिकाकर्ता, वकील अश्विनी कुमार उपाध्याय से कहा कि वह इतनी सामान्य प्रार्थना वाले मामले पर विचार नहीं कर सकते। सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ ने याचिकाकर्ता से कहा कि अपनी जनहित याचिका की प्रार्थना तो देख लीजिए। प्रार्थना ऐसी होनी चाहिए जिस पर हम विचार कर सकें। आपकी प्रार्थना तो लोकप्रियता पाने और मीडिया में बने रहने के लिए है।सुप्रीम कोर्ट द्वारा 3-2 के फैसले में समलैंगिक विवाह को कानूनी रूप से मान्यता देने से इनकार कर दिया। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली संविधान पीठ ने कहा कि ऐसा कानून बनाना संसद का क्षेत्र है और अदालतें केवल उनकी व्याख्या कर सकती हैं। इसमें यह भी माना गया कि गैर-विषमलैंगिक जोड़ों को संयुक्त रूप से बच्चा गोद लेने का अधिकार नहीं दिया जा सकता है। सीजेआई के अलावा जस्टिस संजय किशन कौल, एस रवींद्र भट, हिमा कोहली और पीएस नरसिम्हा की पीठ ने केंद्र, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि समलैंगिक समुदाय के साथ भेदभाव न किया जाए।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि पीएमएलए के बारे में ईडी की शक्तियों को बरकरार रखने के 2022 के फैसले पर पुनर्विचार में केवल कानूनी मुद्दे ही शामिल होंगे। कोर्ट ने इस बात पर गौर करने का फैसला किया है कि क्या पीएलएलए के तहत गिरफ्तारी और मनी लॉन्ड्रिंग में शामिल संपत्तियों को कुर्क करने की ईडी की शक्तियों को बरकरार रखने वाले उसके पिछले साल के फैसले पर पुनर्विचार की आवश्यकता है? कोर्ट ने यह भी कहा कि वह व्यक्तिगत मामलों पर गौर नहीं करेगा। पीठ ने एक व्यक्ति द्वारा दायर अंतरिम अर्जी पर सुनवाई करते हुए यह बात कही, जिसे ईडी ने मनी लॉन्ड्रिंग मामले में तलब किया है। पिछले साल के अपने फैसले में, शीर्ष अदालत ने पीएमएलए के तहत गिरफ्तारी, मनी लॉन्ड्रिंग में शामिल संपत्ति की कुर्की, तलाशी और जब्ती की ईडी की शक्तियों को बरकरार रखा था।

भरतपुर सोनहत विधानसभा में वोटिंग से पहले जुबानी जंग, रेणुका सिंह और गुलाब कमरो हैं आमने सामने

मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा में नंबर एक सीट भरतपुर सोनहत में इस बार कांटे का मुकाबला होगा। कांग्रेस के गुलाब कमरो के मुकाबले बीजेपी ने इस विधानसभा से रेणुका सिंह को उतारा है।साथ ही साथ विधानसभा में गोंडवाना गणतंत्र पार्टी का भी प्रभाव देखने को मिलेगा।इस विधानसभा में रेणुका सिंह के नामांकन के पहले तो शांति छाई रही।लेकिन जिस दिन से रेणुका सिंह ने नामांकन भरा और कांग्रेस खिलाफ प्रचार करना शुरु किया, उस दिन से पूरे विधानसभा में माहौल गर्माने लगा।

रेणुका सिंह जब भरतपुर सोनहत विधानसभा में नामांकन भरने के लिए आई।तो उन्हें स्थानीय कार्यकर्ताओं ने बाहरी बताया।जिस पर रेणुका सिंह ने इसे कांग्रेस की साजिश बताते हुए भरतपुर सोनहत को अपना मायका बता डाला।इसके बाद सोनिया गांधी को इटली भेजने की बात कही।इस बयान की निंदा प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने की।अभी मामला ठंडा नहीं हुआ था, कि रेणुका सिंह ने केल्हारी की सभा में बीजेपी कार्यकर्ताओं को उंगली लगाने पर हाथ काट लेने की बात कह डाली।

इससे पहले भी रेणुका सिंह ने कहा था कि जब-जब आतंक बढ़ता है, ऐसे ही अवतार होते हैं। मैं खुद के लिए और अपने परिवार के लिए नहीं करती हूं। यदि किसी निर्दोष व्यक्ति के साथ गलत होगा तो रेणुका सिंह न कभी चुप रही है न कभी रहेगी।

रेणुका सिंह के बयान पर जिला निर्वाचन अधिकारी

ने उन्हें नोटिस थमाया।जिसका जवाब रेणुका सिंह को तीन दिनों में देने को कहा गया था। वहीं इस नोटिस के बाद कांग्रेस प्रत्याशी गुलाब कमरो ने भी रेणुका सिंह पर पलटवार किया।

कांग्रेस प्रत्याशी गुलाब कमरो ने कहा भरतपुर में गुंडाराज नहीं,भरतपुर में भगवान राम का स्थान है।प्रेमनगर में गुंडाराज है जाकर देख लो। अधिकारी किस तरह डरे हुए हैं।उनके परिवार में पूछ लीजिए किस तरह का हाल है।बलरामपुर में जनपद सीईओ और तहसीलदार को बेल्ट से पीटने की बात सामने आई थी। उदयपुर में जनपद सीईओ को किस तरह बेल्ट से पिटाई की गई थी। मैं किसान का बेटा हूं, मैं इस तरह विवादित बयान से बचता हूं।

भरतपुर सोनहत विधानसभा में रेणुका सिंह के बयान और गुलाब कमरो के जवाब के राजनीति गर्म हो चुकी है।एक तरफ कांग्रेस विकास और स्थानीय बनाम बाहरी का मुद्दा उठा रही है।वहीं दूसरी तरफ बीजेपी प्रदेश समेत भरतपुर में गुंडाराज कायम हो जाने की बात कही है।अब देखना ये होगा कि आने वाले चुनाव में जनता किस नेता को चुनकर अपना फैसला सुनाती है।

बेमेतरा में नामांकन के पहले दिन 9 अभ्यार्थियो ने खरीदा फॉर्म

बेमेतरा। विधानसभा सामान्य निर्वाचन 2023 के लिए अधिसूचना शनिवार को जारी हो गई है और पहले दिन 9 प्रत्याशियो ने नामांकन प्रपत्र खरीदा। जिसमें विधानसभा क्षेत्र क्र 68 साजा से 03 अभ्यार्थियो ने नामांकन पत्र लिए। वही विधानसभा क्षेत्र बेमेतरा से 05 अभ्यार्थियो ने नामांकन लिए। विधानसभा क्षेत्र क्र. 70 नवागढ़ से 01 उम्मीदवार ने नामांकन प्राप्त किये। आज शनिवार को एक भी प्रत्याशी द्वारा नामांकन प्रपत्र दाखिल नहीं किया गया।

संयुक्त जिला कार्यालय एवं कलेक्टोरेट में जिले के तीनो विधानसभा क्षेत्र के नामांकन पत्र अलग-अलग कक्षो में विक्रय किये गये। कक्ष क्र. 31 में विधानसभा क्षेत्र साजा कक्ष क्र. 02 में विधानसभा क्षेत्र बेमेतरा और कक्ष क्र. 06 में विधानसभा क्षेत्र नवागढ़ के नामांकन पत्र क्रय किये गये थे। इन्ही कक्षो में नामांकन पत्र संबंधित क्षेत्र के रिटर्निंग ऑफिसर जमा करेगें। नामांकन जमा करने की अंतिम तिथि 30 अक्टूबर है।

कांकेर में विधानसभा चुनाव से पहले बड़ी नक्सली साजिश नाकाम

■ मुठभेड़ में 2 नक्सली ढेर, राइफल बरामद

कांकेर। छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले में कोयलीबेड़ा इलाके के चिलपरस गांव के सुरक्षाकर्मियों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में दो नक्सली मारे गए।

मुठभेड़ शनिवार सुबह करीब आठ बजे कोयलीबेड़ा पुलिस थाने की सीमा के अंतर्गत स्थित जंगल में हुई। पुलिस बल की एक इकाई, जिला रिजर्व गार्ड (डीआरजी) की एक टीम नक्सल विरोधी अभियान पर सर्चिंग पर निकली थी। इसी दौरान घात लगाए नक्सलियों ने उन पर फायरिंग शुरू कर दी। जवानों ने भी मुंहतोड़ जवाब देते हुए नक्सलियों पर अंधाधुंध फायरिंग की। जिसमें दो नक्सली मारे गए।

बस्तर आई जी सुंदरराज पी ने नक्सल एनकाउंटर की पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि गोलीबारी रुकने के बाद घटनास्थल से दो पुरुष नक्सलियों के शव मिले हैं। सर्चिंग के दौरान एक इंसास राइफल, एक 12 बोर राइफल और अन्य हथियार व गोला-बारूद बरामद किया गया। मृत नक्सलियों की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। आसपास के इलाकों में तलाशी अभियान अभी भी जारी है।

मंगलवार को बीजापुर जिले में मद्देड के बंदेपारा के जंगल में भी सुरक्षा बलों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई थी। इन मुठभेड़ में मद्देड एरिया कमेटी प्रभारी डीवीसीएम नागेश मारा गया था। उसका शव भी बरामद किया गया। मौके से एक एके 47 राइफल भी बरामद हुई थी।

बस्तर संभाग में 7 नवंबर को पहले चरण का चुनाव है। बस्तर संभाग की 12 सीटों पर मतदान होने के कारण पूरे संभाग में हाई अलर्ट है। चप्पे चप्पे पर सुरक्षा बलों के जवान, पुलिस, बस्तर फाइटर्स, सीआरपीएफ तैनात हैं। नक्सलियों के विधानसभा चुनाव के बहिष्कार के ऐलान के बाद सुरक्षा और कड़ी कर दी गई हैं।

बता दें कि छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव को देखते हुए सुरक्षाबलों के जवान लगातार गश्त पर हैं। कांकेर जिले के तीन निर्वाचन क्षेत्र उन 20 विधानसभा क्षेत्रों में शामिल हैं।

तखतपुर विधानसभा के प्रत्याशी सावधान! यहां के वोटर्स ने दी बड़ी चेतावनी

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव करीब है। जनता की जनप्रतिनिधियों से अपनी-अपनी उम्मीदें हैं। कुछ क्षेत्र की जनता अपने क्षेत्र के नेता के काम से संतुष्ट है तो कुछ क्षेत्रों की जनता नेताजी से काफी नाराज दिख रही हैं। तखतपुर विधानसभा के मोहनभाठा गांव के लोगों ने मीडिया से बात की और अपने मन की बात बताई। उन्होंने कहा कि ऐसा विधायक चाहिए जो पूरे 5 साल सक्रिए रहे और सड़क, पानी, बिजली का काम करें।

तखतपुर सीट बिलासपुर जिले की एक महत्वपूर्ण सीट हैं। यहां के मोहनभाठा गांव के एक मतदाता ने बताया कि उन्हें गांव में चुनावी माहौल नजर ही नहीं आ रहा है। यानी क्षेत्र के कांग्रेस भाजपा के विधानसभा चुनाव के प्रत्याशी अब तक जनसंपर्क करने नहीं पहुंचे हैं। उन्होंने बताया कि गांव में पानी और साफ सफाई की समस्या है। बिजली कभी नहीं रहती है।

गांव के ही एक और जागरूक मतदाता ने बताया कि बिजली की समस्या तो हैं ही। पीने के पानी की बहुत समस्या

है। काफी गंदा पानी आता हैं। कोई इसकी सुध लेने वाला नहीं है। पानी का बिल लेने जरूर पहुंचते हैं। लेकिन साफ पानी मिल रहा है या नहीं इसके बारे में कोई नहीं पूछता हैं।

एक और मतदाता ने कहा कि उनके पास रहने के लिए घर नहीं है। इसलिए उन्हें आवास चाहिए। गांव में कई लोगों को आवास नहीं मिल पाया हैं। जो हितग्राही है उन्हें आवास नहीं मिल रहा है।

मतदाता ने बताया कि गांव में एक पानी की टंकी है। लेकिन टंकी के पानी से पूरे गांव को पूर्ति नहीं होती है। आधा गांव बिना पानी के ही यहां वहां से पानी की आपूर्ति करता हैं। सीसी रोड पर पानी बहता रहता है। नाली की सुविधा नहीं है। जो नालिया है भी तो उसमें गंदगी भरी हुई हैं। बिजली की भी भारी कटौती होती हैं। वोटर्स ने कहा कि इस बार चुनाव में यहीं सब मुद्दा रहेगा। जो इन समस्याओं को दूर करेंगे। उन्हें वोट देकर विजयी बनाएंगे।

तखतपुर विधानसभा सीट पर दूसरे चरण में मतदान होना है। यहां के कुल मतदाताओं की संख्या 360377 है। यहां पुरुष मतदाता 182434 हैं। महिला मतदाता 177943 हैं। यहां पुरुष और महिला वोटरों की संख्या लगभग बराबर है। साल 2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी रश्मि सिंह ने जीत दर्ज की और विधायक बनी। लेकिन वोटर्स अपने विधायक से खुश नहीं दिख रहे हैं। कांग्रेस ने रशिम सिंह को ही दोबारा प्रत्याशी बनाया है। भाजपा ने धरमजीत सिंह को यहां से टिकट दिया हैं।

कौन हैं वो जिनके कारण नहीं बढ़ रहा मतदान प्रतिशत, घटती वोटिंग बनीं चिंता का सबब?

बिलासपुर। मतदान प्रतिशत का घटना या बढ़ना किसी भी उम्मीदवार के लिए जीत हार का फैसला करता है। बात यदि छत्तीसगढ़ की न्यायधानी बिलासपुर की करें तो पूरे प्रदेश की ही तरह इस बार भी मतदाताओं को जागरुक करने के लिए युद्ध स्तर पर अभियान चलाया गया है।जिसका नतीजा मतदान के बाद पता चलेगा।लेकिन पिछले तीन बार के विधानसभा के आंकड़ों को देखें तो ये मालूम चलेगा कि मतदान का प्रतिशत एक या दो फीसदी से ज्यादा नहीं बढ़ा।बिलासपुर जिले में विधानसभा, लोकसभा और नगरी निकाय के चुनाव में 58 से 65 फीसदी तक ही वोटिंग होती है। जबकि मतदाताओं की संख्या की बात करें तो जिले में 14 लाख 13 हजार से ज्यादा मतदाता हैं।

इस मामले में राजनीतिक के जानकार हबीब खान से बात करने पर उन्होंने बताया कि मध्यम वर्गीय और गरीब वर्ग के लोग ही मतदान को लेकर उत्साहित रहते हैं। इसलिए वो सुबह से ही मतदान करने के लिए पोलिंग बूथ में पहुंच जाते हैं। कई मतदान केंद्रों में सुबह से लेकर मतदान के आखिरी समय तक लंबी लाइन देखी जाती है।वहीं कुछ मतदान केंद्र ऐसे होते हैं जहां शुरुआती दो चार घंटों के बाद भीड़ नहीं दिखती।

उन्होंने कहा मतदान के लिए जो लोग लाइन

में लग सकते हैं वो तो अपने समय का इंतजार करके वोट डालते हैं।लेकिन जो उच्च वर्गीय परिवार हैं।उनके सदस्य जब पोलिंग बूथ जाते हैं तो लंबी लाइन में खड़े होने में हिचकिचाते हैं। यदि मतदान में लाइन लंबी हुई तो ऐसे सदस्य पोलिंग बूथ से ही लौट जाते हैं। वहीं कई परिवार तो वोटिंग को लेकर कोई भी उत्साह नहीं दिखाते।

लोगों के मन में मतदान करने की ललक पैदा करने के लिए चुनाव आयोग काफी मेहनत करता है। एड कैंपेन से लेकर मतदान बूथों में भी अब काफी सुविधाएं दी जाने लगी है।जैसे महिलाओं के लिए पिंक बूथ, दिव्यांगों और बुजुर्ग के लिए अलग व्यवस्था,युवाओं के लिए सेल्फी जोन जैसे अभियान चलाकर चुनाव आयोग लोगों को मतदान केंद्र तक लाना चाहता है।बावजूद इसके जिन्होंने ये ठान रखा है कि हमें नहीं जाना,वो जरा भी दिलचस्पी नहीं दिखाते।

महिलाओं को लोकतंत्र के महापर्व में शामिल होने के लिए उनके लिए एक अलग मतदान केंद्र की व्यवस्था बनाई गई है। इसे पिंक बूथ का नाम दिया गया है। सेल्फी जोन, पिंक बूथ जैसे कई नए प्रयोग कर मतदाताओं को मतदान के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। मतदाता मतदान केंद्र तक नहीं पहुंच रहे हैं। आंकड़ों की अगर बात करे तो पूरे राज्य में 90-95 परसेंट तक वोटिंग अब तक नहीं हुआ है। पूरे देश में भी यही हाल है। मतदान के लिए मतदाता जागरूक नहीं हो रहे हैं। पिछले चार चुनाव में सबसे कम वोटिंग बिलासपुर जिले में हुई है। बिलासपुर के मतदाताओं में जागरूकता की कमी देखी जा रही है। इतना ही नहीं हर चुनाव में यहां मतदान का प्रतिशत भी घटता जा रहा है। यदि राज्य बनने के बाद के पहले विधानसभा चुनाव के मतदान के आंकड़े देखे तो 2003 में यहां 62.40 फीसदी वोटिंग हुई, तो वहीं 2008 में ये घटकर 61.30 फीसदी हो गई। 2013 के चुनाव में यह 60.44 प्रतिशत में ही सिमट गया। वैसे ही 2018 के चुनाव में मतदान प्रतिशत 61.58 रहा। यानी 39 प्रतिशत लोग वोट देने के लिए घर से ही नहीं निकले। बिलासपुर जिले की जनसंख्या 16 लाख 28 हजार 202 है। यहां मतदान के लिए बनाए गए मतदान केंद्र 1684 हैं। अब देखना होगा कि जिले की इतनी बड़ी जनसंख्या होने के बाद भी कितने मतदाता मतदान के लिए आते हैं।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

चुनाव प्रशिक्षण में नहीं हुए उपस्थित, 14 को भेजा नोटिस

कबीरधाम। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी जनमेजय महोबे के निर्देश पर निर्वाचन कार्य में लापरवाही बरतने और प्रशिक्षण में अनुपस्थित रहने वाले 14 कर्मचारियों को नोटिस भेजा गया है। जारी आदेश में बताया गया है कि छत्तीसगढ़ विधानसभा आम निर्वाचन-2023 के लिए मतदान दलों का प्रशिक्षण गत दिवस आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण के दौरान मतदान दल के पीठासीन अधिकारी, मतदान अधिकारी क्रमांक दो और मतदान अधिकारी क्रमांक तीन सहित कुल 14 कर्मचारी प्रशिक्षण में अनुपस्थित पाए जाने पर नोडल अधिकारी प्रशिक्षण विधानसभा निर्वाचन एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत संदीप कुमार अग्रवाल ने नोटिस जारी करते हुए दो दिवस के भीतर उपस्थित होकर जवाब देने कहा है। मिली जानकारी अनुसार, कुल 14 कर्मचारियों में से तीन पीठासीन अधिकारी, चार मतदान अधिकारी क्रमांक दो और सात मतदान अधिकारी क्रमांक तीन शामिल हैं।

चांदनी ने भाजपा पर उपेक्षा का आरोप लगाते हुए दिया इस्तीफा

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव में प्रत्याशियों की घोषणा के बाद अब पार्टी में विरोध के स्वर भी उठने लगे हैं। बिलासपुर जिले की मस्तूरी विधानसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी की खिलाफ बगावत करते हुए जिला पंचायत सदस्य चांदनी भारद्वाज ने पार्टी छोड़कर जोगी कांग्रेस का दामन थामन लिया हैं। शनिवार को बिलासपुर प्रेस क्लब में चांदनी भारद्वाज ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि वह लंबे समय से मस्तूरी विधानसभा में एक्टिव है। उनकी मां कमला देवी पाटले जांजगीर से सांसद रही हैं। उनका पूरा परिवार भाजपा से जुड़ा हुआ है। वो खुद अपनी शादी के बाद से भाजपा कार्यकर्ता के रूप में काम करती रहीं हैं। इस दौरान मस्तूरी से वह जनपद अध्यक्ष भी बनीं, जिसके बाद भी पार्टी ने उन्हें कोई तवज्जो नहीं दिया। चांदनी ने कहा कि भाजपा में पूछपरख नहीं होने से उन्हें घुटन महसूस हो रही थी, जिसके कारण उन्होंने पार्टी छोड़ना मुनासिब समझा। अब उन्होंने मस्तूरी से जोगी कांग्रेस का दामन थामा है।

जगराता में बैठे लोगों पर चढ़ाई कार, तीन महिलाएं घायल

कबीरधाम। कबीरधाम जिले के पिपरिया थाना के तहत पुलिस चौकी दशरंगपुर क्षेत्र के ग्राम तमरूआ में एक हादसे में तीन महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गईं। इसमें से एक गंभीर है, जो जिंदगी और मौत के बीच जूझ रही है। मिली जानकारी के अनुसार गांव में शुक्रवार की रात को दुर्गा पंडाल के सामने जगराता का आयोजन किया गया था। इसी दौरान गांव का नौसिखिया युवक राजू सिन्हा अपनी कार को रिवर्स कर रहा था। तभी यह कार जगराता में बैठी महिलाओं के ऊपर चढ़ गई। इसके बाद अफरा-तफरी मच गई। मौके से कार चालक फरार हो गया। ग्रामीणों ने घायल महिला गीता सिन्हा, कुमारी ललीता व रिती सिन्हा को कवर्धा के अस्पताल में देर रात भर्ती कराया, जहां गीता सिन्हा की हालत गंभीर बनी हुई है। शनिवार तड़के रायपुर रेफर किया गया है। इस मामले में आरोपी कार चालक के खिलाफ एफआईआर दर्ज की जाएगी।

दुर्ग जा रही बस अनियंत्रित होकर एनएच पर पलटी

जगदलपुर। बैलाडीला से दुर्ग जा रही यात्री बस बीती रात कोंडागांव थाना क्षेत्र के अंतर्गत नारंगी नदी के पास पलट गई। इस हादसे में 12 यात्री घायल हो गए। घटना की जानकारी लगते ही कोंडागांव पुलिस मौके पर पहुंच घायलों को बेहतर उपचार के लिए जिला अस्पताल भिजवाया गया। वहीं, देर रात तक घायलों को बस से निकालने का काम भी जारी रहा। बताया जा रहा है कि कोंडागांव थाना क्षेत्र के नारंगी नदी पुल के पास शुक्रवार शनिवार की दरमियानी रात बैलाडीला से दुर्ग जा रही यात्री बस सड़क हादसे का शिकार हो गई। इस हादसे में 12 लोगों की घायल हो गए, कोंडागांव थाना प्रभारी प्रहलाद यादव ने बताया कि यह हादसा रात लगभग डेढ़ बजे का है। बैलाडिला से दुर्ग जाते वक्त नेशनल हाईवे 30 नारंगी नदी पुल के ठीक सामने बस अनियंत्रित होकर गड्ढे में जा पलटी। घायलों को यातायात पुलिस और कोंडागांव कोतवाली पुलिस के द्वारा रेस्क्यू किया गया है। बताया जा रहा है मामूली रूप से घायल यात्रियों को दूसरी बस से रवाना किया गया।

मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर में देवी जागरण

मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर। जिले के वनांचल क्षेत्र जनकपुर में नवदुर्गा उत्सव सेवा समिति की तरफ से देवी जागरण का आयोजन किया गया, जिसमे मशहूर गायिका शहनाज अख्तर और उनकी टीम ने एक से बढ़कर एक देवी गीत की प्रस्तुति दी। छत्तीसगढ़ की सुप्रसिद्ध गायिका शहनाज अख्तर ने हम भगवा धारी हैं, मईया पांव पैजनिया, ये भगवा रंग जैसे गीतों की मनमोहक प्रस्तुति दी। शहनाज अख्तर के भजनों को सुनकर देर रात तक हजारों दर्शक माता की भक्ति में झूमते नजर आए। शहनाज अख्तर ने बताया कि जनकपुर में वह पहली बार पहुंची। शहनाज ने कहा कि देवी जागरण जैसे कार्यक्रमों के आयोजन का उद्देश्य भक्ति होना चाहिए सिर्फ पॉपुलेरिटी नहीं होना चाहिए। शहनाज ने बताया कि 10 साल से ज्यादा समये से वह मुस्लिम धर्म का त्याग कर हिंदू धर्म अपना चुकी हैं। सनातन धर्म के अनुसार ही पूजा पाठ करती हैं। मां जगदंबा की कृपा है। प्रभु श्री राम का आशीर्वाद है। बाबा महाकाल को सबसे ज्यादा मानती हैं।

बिलासपुर में मां वैष्णो देवी, नवरात्र में उमड़ रही भक्तों की भीड़

बिलासपुर। जम्मू कश्मीर के कटरा में विराजी मां वैष्णो देवी के बारे में तो सभी जानते होंगे। लेकिन क्या आपको पता है कि बिलासपुर में भी मां वैष्णो विराजमान हैं। आइए शारदीय नवरात्र के मौके पर हम आपको बिलासपुर में विराजमान माता वैष्णों के बारे में बताते हैं।

बिलासपुर जिला स्थित बैमा नगोई गांव में भी माता वैष्णो देवी पिंडी रूप में विराजमान हैं। बिलासपुर के शर्मा परिवार ने माता वैष्णो देवी का ये मंदिर बनवाया है। मंदिर के भीतर भी वैष्णों मंदिर के तर्ज पर गुफा बनाया गया है। यहां पिंडी रूप में माता विराजमान हैं। खास बात यह है कि ये पिंडी वैष्णो देवी से लाकर यहां स्थापित किया गया है। इसके साथ ही श्रद्धालुओं के दर्शन के लिए यहां नवदुर्गा की मूर्तियां भी स्थापित की गई है। इस मंदिर में प्रवेश करते ही आपको लगेगा कि आप वैष्णो माता के मंदिर में प्रवेश कर गईं हैं।

मंदिर के पुजारी ने मीडिया को बताया कि, शहर के कांग्रेसी नेता और शिक्षाविद बसंत शर्मा और उनके भाई संजय शर्मा ने इस मंदिर को बनाने की पहल की थी। दोनो भाई जब भी जम्मू-कश्मीर के वैष्णो देवी दर्शन करने की मन में ठानते थे तो किसी न किसी कारण से यात्रा टल जाती थी। काफी प्रयास के बाद जब संयोग बना, तब वो देवी के दर्शन करने गए। इसके बाद से

लगातार करीब तीस सालों से वो माता के दर्शन के लिए जाते थे। संजय शर्मा के मन में एक दिन विचार आया कि उनके तरह हजारों लोग ऐसे हैं, जिनकी इच्छा जम्मू-कश्मीर के माता वैष्णो देवी मंदिर जाने की होती है। हालांकि वो किसी कारणवश नहीं जा पाते। ऐसे में उन्होंने अपने शहर के आसपास हूबहू वैष्णो देवी मंदिर का निर्माण कराने का सोचा। इसके बाद इस मंदिर का उन्होंने निर्माण कराया।

बताया जा रहा है कि मंदिर निर्माण में करीब पांच साल लग गए। मंदिर निर्माण में लगने वाला सामान बिलासपुर में ही उपलब्ध हो गया था। हालांकि माता के गर्भगृह निर्माण की सामग्री वैष्णो देवी मंदिर कटरा से लाया गया। करीब 5 कारीगर कटरा से बुलाए गए। इन कारीगरों ने गुफा और पिंडी को मंदिर में वैष्णो देवी के तर्ज पर सेट किया।

बिलासपुर के अशोकनगर होते बैमा नगौई से पौसरा जाने वाले मार्ग में ये मंदिर स्थित है। यहां 2000 वर्ग फीट में माता का भव्य मंदिर बना हुआ है। मंदिर के निर्माण का काम साल 2017 में शुरू किया गया था। हालांकि किसी कारण ये काम रुका हुआ था। करीब 5 साल बाद अब ये मंदिर पूरी तरह से बनकर तैयार हुआ है। 23 जून को इसी साल मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा की गई। 26 जून से मंदिर को भक्तों के लिए खोल दिया गया। अब हर दिन सैंकड़ो श्रद्धालु यहां माता के दर्शन को पहुंचते हैं।

भले ही मंदिर निर्माण कुछ दिनों पहले ही हुई हो, लेकिन यहां के लोगों की इस मंदिर के प्रति श्रद्धा अटूट है। यही कारण है कि भक्त हर दिन माता के दरबार पर अर्जी लगाने पहुंच रहे हैं। नवरात्र के मौके पर यहां भक्तों की भीड़ भी देखने को मिल रही है।

लुंड्रा में डॉक्टर प्रीतम राम पर कांग्रेस का भरोसा बरकरार

सरगुजा। लुंड्रा विधायक और कांग्रेस प्रत्याशी डॉ प्रीतम राम ने मीडिया से खास बातचीत की। इस दौरान डॉ प्रीतम राम ने विकास के नाम पर जीत का दावा किया। प्रीतम राम ने कांग्रेस हाई कमान का आभार प्रकट किया और कहा कि क्षेत्र में कांग्रेस ने विकास किया है। उन्हीं बातों को लेकर वो क्षेत्र में जनता के बीच जा रहे हैं। डॉ प्रीतम राम ने बताया कि पूरे क्षेत्र में सड़कों का जाल बिछ चुका है।जिस क्षेत्र में अभी हैं। यहां सोहगा में आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल खुल गया है। जल्द ही एयरपोर्ट चालू होने वाला है। नहर बनाई गई है, कई विकास कार्य हुए हैं और कई हो रहे हैं। डॉक्टर से नेता बनने के सवाल पर डॉ प्रीतम राम ने कहा कि आज भी पूरे प्रदेश में कहीं भी आपरेशन करने चला जाता हूं। क्षेत्र में पार्टी के आयोजनों के बाद मरीजों का इलाज करता हूं। दवाइयों का एक बाक्स मेरे साथ हमेशा रहता है। परिवार से 3 लोग 6 बार विधायक बन चुके हैं।अब सातवी बार की तैयारी है। लोगों का साथ है कभी किसी को शिकायत नहीं रहती है। यही वजह है कि जनता का और कांग्रेस हाई कमान का भरोसा बना रहता है। लुंड्रा विधानसभा काफी अनोखी है।क्योंकि इस विधानसभा में छह तहसीलों के पोलिंग बूथ आते हैं।जो अलग-अलग जिलों में है। लुंड्रा विधानसभा क्षेत्र में लुंड्रा ब्लॉक के 61 मतदान केंद्र और धौरपुर के 67 मतदान केंद्र आते हैं। लखनपुर के 53, अम्बिकापुर ग्रामीण के 35, दरिमा के 36 और नगर निगम अम्बिकापुर के 2 पोलिंग स्टेशन इस विधानसभा में आते हैं। चुनाव में बूथ मैनेजमेंट का जिम्मा ब्लॉक इकाइयों के पास होता है।

संक्षिप्त समाचार

भाजपा नेता की हत्या को लेकर केदार गुप्ता का कांग्रेस पर हमला

रायपुर। छत्तीसगढ़ बीजेपी प्रवक्ता केदार गुप्ता ने भाजपा नेता की हत्या को लेकर कांग्रेस पर जमकर हमला बोला है। केदार गुप्ता ने कहा कि कांग्रेस आदिवासी समाज के बीच अपना जनाधार खो चुकी है। कांग्रेस का आदिवासी समाज में वर्चस्व खत्म हो चुका है। भाजपा नेता और प्रवक्ता के दार गुप्ता ने आगे कहा कि बीजेपी कार्यकर्ताओं को टारगेट करके मारा जा रहा है, पहले भी छह कार्यकर्ताओं को टारगेट किलिंग करके मारा गया था। पश्चिम बंगाल की तरह छत्तीसगढ़ में भी दंगा फसाद करने की कोशिश लगातार की जा रही है।

सदर बाजार व पुरानी बस्ती में डामरीकरण प्रारंभ नहीं हुआ तो अनशन करेंगे कन्हैया

रायपुर। सत्यमेव जयते फाउंडेशन के प्रदेश संयोजक कन्हैया अग्रवाल ने जिला कलेक्टर को पत्र लिखकर 24 घंटे के अंदर सदर बाजार, पुरानी बस्ती की सड़कों का डामरीकरण प्रारंभ नहीं कराए जाने पर आमरण करने की चेतावनी दी है। सत्यमेव जयते फाउंडेशन के संयोजक कन्हैया अग्रवाल ने उक्ताशाय का बयान जारी करते हुए कहा कि नवरात्र, दशहरा और दीपावली जैसे सबसे बड़े त्यौहार के दौरान शहर की बदहाल सड़कों के कारण श्रद्धालुओं और बाजार जाने वाले ग्राहकों का निकलना मुश्किल हो गया है। सदर बाजार, सत्ती, कंकालीपारा, बुढ़ेश्वर मंदिर, पुरानी बस्ती थाना से लाखेनगर चौक तक सड़क अत्यंत जर्जर हालत में है। धूल से पूरा एरिया सराबोर है ,ठंड के मौसम में धूल के कारण सर्दी ,खांसी दमे की शिकायत लगातार बढ़ रही है। श्री अग्रवाल ने कहा कि बदहाल सड़क का निर्माण प्रशासन तुरंत प्रारंभ कराए, सारी सड़कों का निर्माण का टेंडर जारी होने के बाद काम प्रारंभ नहीं होना दुर्भाग्य जनक है। निगम प्रशासन ठेकेदारों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई करे। कन्हैया अग्रवाल ने कहा कि सड़क निर्माण अगर 24 घंटे में प्रारंभ नहीं हुआ तो 23 अक्टूबर सोमवार की सुबह से मैं घर/कार्यालय में अन्न जल त्याग कर आमरण अनशन करूंगा।

ईडी की लगातार दूसरे दिन कार्रवाई से मचा हड़कंप

कोरबा। कोरबा जिले में ईडी की कार्रवाई लगातार दूसरे दिन भी जारी है। दो अलग-अलग जगहों पर ईडी ने दबिश दी है। वहीं ईडी की कार्रवाई से जिले में हड़कंप मचा हुआ है। कटघोरा राईस मिलर्स एसोसिएशन संघ के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल और कोरबा लालू राम कॉलोनी निवासी अमित अग्रवाल के घर पर ईडी ने दबिश दी है। अमित अग्रवाल के पहंदा स्थित राईस मिल में कल ईडी ने छापेमारी की थी। आज सुबह फिर घर पर जांच जारी है।

विधानसभावार तीन केंद्रों से होगा मतदान सामग्री वितरण

दुर्ग। विधानसभा चुनाव के लिए विधानसभावार तीन केंद्रों से मतदान दलों को सामग्री वितरण कर मतदान केंद्रों के लिए रवाना किया जाएगा। वहीं मतदान के बाद मतदान दलों द्वारा शंकराचार्य कॉलेज में मतदान सामग्री जमा कराया जाएगा। इसके लिए कलेक्टर व जिला निर्वाचन अधिकारी पुष्पेन्द्र मीणा ने मतदान सामग्री वितरण के लिए नोडल व सहायक नोडल अधिकारी नियुक्त किया है। जिला निर्वाचन कार्यालय से प्राप्त जानकारी अनुसार विधानसभा क्षेत्र दुर्ग ग्रामीण व अहिवारा के सामग्री वितरण केन्द्र शासकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज के लिए आयुक्त नगर पालिक निगम रिसाली आशीष देवांगन, विधानसभा क्षेत्र पाटन, दुर्ग शहर, साजा (आंशिक) व बेमेतरा (आंशिक) में सामग्री वितरण केन्द्र मानस भवन के लिए आयुक्त नगर पालिक निगम लोकेश चन्द्राकर और विधानसभा क्षेत्र भिलाई नगर व वैशाली नगर में सामग्री वितरण केन्द्र शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वाशासी महाविद्यालय (साइंस कॉलेज) के लिए आयुक्त नगर पालिक निगम भिलाई चरोदा अजय त्रिपाठी नोडल अधिकारी नियुक्त किए गए है। आयुक्त नगर पालिक निगम दुर्ग तीनों वितरण केन्द्र के संपूर्ण कार्य के नोडल अधिकारी रहेंगे।

निर्वाचन कार्य में अधिकारियों-कर्मचारियों को मिलेगी निःशुल्क चिकित्सा सुविधा

रायपुर। विधानसभा निर्वाचन-2023 के लिए निर्वाचन कार्य में नियोजित शासकीय अधिकारियों और कर्मचारियों को राज्य के समस्त शासकीय चिकित्सालयों में निःशुल्क चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग द्वारा जारी आदेश के अनुसार राज्य के शासकीय अस्पतालों में आवश्यक स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध नहीं होने अथवा आपातकालीन स्थिति के लिए अधिकारी-कर्मचारी राजधानी रायपुर के 4 तथा राज्य के बाहर 2 निजी अस्पतालों में अपना इलाज करा सकेंगे। उल्लेखनीय है कि छत्तीसगढ़ विधानसभा निर्वाचन 2023 को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने के उद्देश्य से आयोग के निर्देश पर विभिन्न विभागों के अधिकारियों-कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। निर्वाचन कार्य में आदेशित अधिकारियों-कर्मचारियों के लिए राज्य के समस्त शासकीय अस्पतालों में निःशुल्क चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। शासकीय अस्पतालों में आवश्यक सुविधा उपलब्ध ना होने की स्थिति में अथवा आपातकालीन स्थिति के लिए निःशुल्क चिकित्सा सुविधा प्रदान करने हेतु राज्य एवं राज्य के बाहर अस्पतालों को भी चिन्हांकित किया गया है।

मोहला मानपुर में भाजपा नेता की हत्या, आईजी ने जताई नक्सली घटना की संभावना

छत्तीसगढ़ में बंगाल जैसे हालात: रमन

राजनांदगांव। मोहला मानपुर अंबागढ़ चौकी में बीजेपी नेता की हत्या पर पूर्व सीएम रमन सिंह ने भूपेश बघेल पर हमला किया है। उन्होंने कहा कि चुनाव से पहले प्रदेश में इस तरह के हालात ये बताते हैं कि छत्तीसगढ़, बंगाल बन रहा है।

छत्तीसगढ़ में कानून व्यवस्था बद से बदतर होते जा रही है। छत्तीसगढ़ के हालात पश्चिम बंगाल जैसे हो गए। चुनाव का दौर शुरू होते ही भाजपा नेताओं पर दबाव बनाया जा रहा है। औंधी के पास बिरजू तारम जो भाजपा का वरिष्ठ कार्यकर्ता था। उसकी निर्मम हत्या कर दी। उसने आज ही मोहला मानपुर में मेरे कार्यक्रम में स्वागत किया था। रैली में भी शामिल था। उसका अपराध सिर्फ यही है कि वह भाजपा का कार्यकर्ता है। वह दुर्गा माता के स्थापना कार्यक्रम में योगदान देता है। कुछ लोगों ने उसे धमकी दी थी। उसी का असर है।

रमन सिंह ने कहा छत्तीसगढ़ सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी हुई हैं। भाजपा नेता के कार्यकर्ताओं को सुरक्षा देने में असफल रही है। मोहला मानपुर में भाजपा नेता की हत्या के लिए भूपेश सरकार दोषी है। वहां का स्थानीय प्रशासन दोषी है। पहले से इस तरह की धमकी देने वालों पर कार्रवाई होती तो इस तरह की घटनाएं नहीं होती।

छत्तीसगढ़ बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव ने भाजपा नेता की हत्या को टारगेट किलिंग बताया है। साव ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता की शहादत बेकार नहीं जाने देंगे। गुंडाराज को संरक्षण देने वाली कांग्रेस सरकार को उखाड़ कर शांति देने वाली सरकार लेकर आएंगे।

नवगठित जिला मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी के औंधी थाना क्षेत्र के सरखेड़ा में शुक्रवार देर शाम भाजपा नेता बिरजू तारम की हत्या कर दी गई। अज्ञात लोगों ने घर में घुसकर भाजपा नेता को गोली मारी और फरार हो गए। इसके बाद से ही पूरे इलाके में दहशत का माहौल है। परिजनों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी है। घटना को नक्सली एंगल से भी देखा जा रहा है।मृतक बिरजू तारम भाजपा किसान मोर्चा का जिला उपाध्यक्ष था।

आईजी राहुल भगत ने कहा बिरजू तारम की गोली मारकर हत्या हुई है। उनकी उम्र लगभग 60 वर्ष है। इस घटना के बाद पुलिस फोर्स, आईटीबीपी, डीआरजी के जवान मौके पर पहुंचे और छानबीन शुरू कर दी गई है। परिजनों और गांव के लोगों से पूछताछ की जा रही है। सभी रूट पर चैकिंग चल रही है। मौके पर कुछ राउंड्स के खोखे मिले हैं। नक्सल प्रभावित क्षेत्र होने के कारण नक्सलियों द्वारा घटना को अंजाम देने की संभावना बनी हुई हैं। अधिकारियों के नेतृत्व में टीम का गठन किया जा रहा हैं। जांच के बाद मिले फैक्ट्स के अनुसार कार्रवाई होगी।

भाजपा नेता की हत्या पर बोले गौरव भाटिया, भूपेश को खून की होली पसंद है और हमें समुदाय की संस्कृति

रायपुर। मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले में भाजपा नेता बिरजूराम तारम की हत्या पर भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया ने कहा कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि राज्य में भाजपा नेताओं की हत्या हो रही है क्योंकि छत्तीसगढ़ में लगाया कानून व्यवस्था ध्वस्त है और भूपेश बघेल मस्त है। भूपेश को खून की होली पसंद है और हमें समुदाय की संस्कृति पसंद है। एकात्म परिसर स्थित भाजपा कार्यालय में पत्रकारों से चर्चा करते हुए गौरव भाटिया ने कहा कि राजनांदगांव जिले से अलग होकर बने नवगठित जिला मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी में अज्ञात व्यक्तियों द्वारा घर में घुसकर भाजपा नेता की गोली मारकर हत्या कर दी गई। भाजपा नेता की हत्या के बाद मुख्यमंत्री बघेल का बयान नहीं आ रहा है। उन्होंने मुख्यमंत्री पर निशाना साधते हुए कहा कहा कि भूपेश को खून की होली पसंद है और हमें समुदाय की संस्कृति पसंद है। भूपेश बघेल के राजनीतिक दिन कम है। पत्रकारवार्ता में भारतीय जनता पार्टी के पूर्व जिला अध्यक्ष श्रीचंद सुंदरानी, प्रदेश मीडिया प्रभारी अमित चिमनानी, सहमीडिया प्रभारी अनुराग अग्रवाल उपस्थित थे।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव ने बताया टारगेट किलिंग

राजनांदगांव। औंधी थाना क्षेत्र के सरखेड़ा में शुक्रवार देर शाम कुछ अज्ञात व्यक्तियों ने सरखेड़ा निवासी भाजपा नेता बिरजू तारम के घर में घुसकर गोली मारकर हत्या कर दी। घटना के बाद से क्षेत्र में दहशत का माहौल है। घटना को नक्सली एंगल से भी देखा जा रहा है। विधानसभा चुनाव 2023 आदर्श आचार संहिता लगी हुई है। वहीं, घटना को किसने अंजाम दिया यह जांच का विषय है। पूरे मामले में पुलिस द्वारा एफआईआर दर्ज कर अज्ञात आरोपियों की तलाश पुलिस द्वारा शुरू कर दी गई है। जांच के बाद ही पूरे मामले का खुलासा हो पाएगा। भाजपा नेता की निर्ममता से हत्या पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव ने कहा कि ये टारगेट किलिंग है । कार्यकर्ताओं शहादत व्यर्थ नहीं जाने देंगे। उन्होंने कहा कि कि गुंडाराज को संरक्षण दे रही सरकार को उखाड़ फेकेंगे। शांति और कानून का राज कायम करेंगे।

छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण के लिए अधिसूचना

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण के लिए अधिसूचना जारी हो गई है। 21 अक्टूबर से जारी अधिसूचना की आखिरी तारीख 30 अक्टूबर है। नामांकन की स्क्रूटनी 31 अक्टूबर है। दूसरे चरण के लिए नामांकन वापसी की आखिरी तारीख 2 नवंबर है।

21 अक्टूबर से 30 अक्टूबर तक प्रत्याशी नामांकन दाखिल कर सकते है। हालांकि आज शनिवार और कल रविवार पड़ने के कारण नामांकन नहीं हो सकेगा। इसके बाद 24 अक्टूबर को दशहरा, 28 अक्टूबर को शनिवार और 29 अक्टूबर को रविवार की छुट्टी होने के कारण भी प्रत्याशी इस दिन नामांकन नहीं कर पाएंगे। इस तरह दूसरे के विधानसभा चुनाव के नामांकन के लिए सभी दलों के प्रत्याशियों को सिर्फ 6 दिन का ही समय मिलेगा।

छत्तीसगढ़ विधानसभा के दूसरे चरण के लिए 17 नवंबर को चुनाव होना है। इस चरण में 70 सीटों पर चुनाव होना है। भाजपा ने अब तक 86 सीटों पर प्रत्याशियों की घोषणा कर दी हैं। जबकि कांग्रेस ने सात सीटों पर अब भी सस्पेंस बना कर रखा हैं।

पहले चरण की 20 विधानसभा क्षेत्रों के लिए नामांकन जमा करने का काम शुक्रवार को पूरा हुआ। नामांकन जमा करने के आखिरी दिन 254 नामांकन पत्र दाखिल किए गए। इस प्रकार पहले चरण में निर्वाचन के लिए कुल 294 अभ्यर्थियों ने 455 नामांकन पत्र दाखिल किए हैं। आज इन नामांकन पत्रों की समीक्षा की जाएगी। इसके बाद अभ्यर्थी 23 अक्टूबर को अपना नाम वापस ले सकेंगे।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय मिली जानकारी के अनुसार राजनांदगांव विधानसभा क्षेत्र में 33, कवर्धा में 29, पंडरिया में 20, भानुप्रतापपुर में 15, जगदलपुर और दंतेवाड़ा में 14-14, डोंगरगढ़, डोंगरगांव और अंतागढ़ में 12-12, खैरागढ़ और कोण्डागांव में 11-11, बीजापुर और कोण्टा में 10-10, चित्रकोट में 9, नारायणपुर और खुज्जी में 8-8, कांकेर और केशकाल में 7-7, बस्तर और मोहला-मानपुर में 6-6 नामांकन पत्र भरे गए।

मौका मिला तो मुझे भी कर सकते हैं गिरफ्तार : भूपेश

- भूपेश बघेल का केंद्र सरकार पर बड़ा आरोप

रायपुर। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने केंद्र सरकार पर आरोप लगाया कि वह अपनी शक्ति के साथ साथ केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग कर रहे हैं। सीएम ने कहा कि केंद्र सरकार को अगर मौका मिले तो वह उन्हें भी गिरफ्तार कर सकते हैं। सीएम ने कहा उन्हें कोई मौका नहीं मिल रहा है इसलिए चुप बैठे हैं।

सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि केंद्र अपनी शक्तियों का दुरुपयोग कर रही है। पिछले दिनों साजिश के तहत ईडी ने छत्तीसगढ़ के नौकरशाहों को गिरफ्तार किया। उनके करीबी लोगों के घरों में पहुंचकर छापेमारी की। ऐसे में ईडी उन्हें भी गिरफ्तार कर सकती है।

सीएम ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के पास जनता को आकर्षित करने के लिए कोई कार्यक्रम या योजनाएं नहीं हैं, इस वजह से वे छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार को बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। राज्य में भाजपा अब चुनाव लड़ने में सक्षम नहीं है। 15 साल तक सत्ता में रहने के कारण, उन्हें विशेषाधिकारों का लाभ उठाने की आदत हो गई है। इस वजह से वे सरकार को बदनाम कर रहे हैं। कोरबा में चावल व्यापारी के ठिकाने पर ईडी की दबिश पर भूपेश बघेल ने कहा कि 1 नवंबर से छत्तीसगढ़ में धान खरीदी शुरू हो रही है। धान खरीदी अभियान को प्रभावित करने के लिए ईडी ने चावल व्यापारी के घर धावा बोला है।

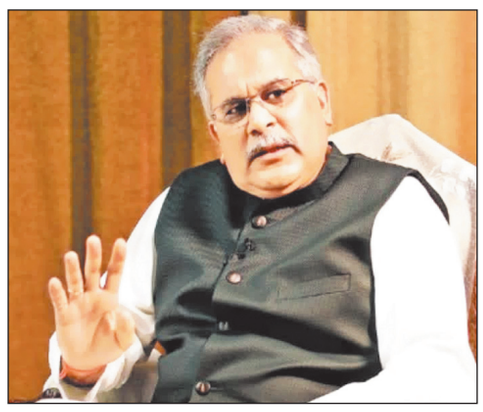

महादेव सट्टेबाजी ऐप पर बैन लगाने के आवेदन के मुद्दे पर भूपेश बघेल ने केंद्र सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि महादेव सट्टेबाजी बैन करने का अधिकार केंद्र सरकार को है। राज्य सरकार इस मामले में आरोपियों पर सिर्फ कार्रवाई ही कर सकती है। जो कर भी रहे हैं। अब तक 450 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। लुकआउट सर्कुलर जारी करने की वकालत की और महादेव एप्लिकेशन के उन संचालकों की गिरफ्तारी के निर्देश जारी किए जो इस समय विदेशों में हैं। सीएम ने कहा कि केंद्र सरकार महादेव एप पर प्रतिबंध क्यों नहीं लगा रही है। बघेल ने केंद्र से सवाल किया कि भाजपा ने क्या चुनाव के लिए महादेव एप से फंड लिया है।

सीएम भूपेश ने कहा कि छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 में कांग्रेस सरकार 75 से ज्यादा सीटें हासिल करेगी। सीएम ने कहा 2018 में छत्तीसगढ़ में सरकार बनाने के बाद कांग्रेस ने प्रदेश के किसानों, मजदूरों, युवाओं और महिलाओं के लिए कई योजनाएं लेकर आई। लोग इससे संतुष्ट भी है। इसीलिए हम कह रहे हैं कि 75 पार।

7 नवंबर को छत्तीसगढ़ में पहले चरण का मतदान- छत्तीसगढ़ की 20 सीटों के लिए पहले चरण का मतदान 7 नवंबर को होगा जबकि दूसरे चरण का चुनाव 17 नवंबर को होना है। लेकिन इसके आसपास छठ पूजा होने के कारण राज्य चुनाव आयोग ने केंद्रीय चुनाव आयोग को 17 नवंबर की मतदान तारीख बदलने को लेकर पत्र लिखा है। इससे पहले सीएम भूपेश बघेल, पूर्व सीएम रमन सिंह और टीएस सिंहदेव ने भी त्योहारों के बीच पड़ने वाले मतदान की तारीख बदलने का आग्रह किया था।

दूरदर्शन व आकाशवाणी पर मान्यता प्राप्त दलों को नि:शुल्क प्रसारण के लिए मिलेगा समय

रायपुर। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा राष्ट्रीय दलों और संबद्ध राज्य के मान्यता प्राप्त राज्यीय राजनीतिक दल को दूरदर्शन और आकाशवाणी पर निःशुल्क प्रसारण के लिए समय उपलब्ध कराने के संबंध में दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों को दूरदर्शन एवं आकाशवाणी पर निःशुल्क प्रसारण के माध्यम से मतदाताओं को अपनी नीतियों और कार्यक्रमों, घोषणा पत्रों और प्रमुख मुद्दों के संबंध में अपने विचारों के बारे में जानकारी देने का अवसर प्राप्त होता है। निर्वाचकों के लिए भी विभिन्न दलों के नीति संबंधी मुद्दों को समझने के लिए यह सूचना का महत्वपूर्ण स्त्रोत होता है।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार विधानसभा निर्वाचन-2023 हेतु सभी राष्ट्रीय दलों और छत्तीसगढ़ में मान्यता प्राप्त राज्यीय दल को दूरदर्शन और आकाशवाणी के क्षेत्रीय नेटवर्क पर प्रचार के लिए प्रारंभिक रूप से 45 मिनट की एक समान अवधि उपलब्ध कराए जाने के भारत निर्वाचन आयोग के निर्देश हैं। साथ ही राजनीतिक दलों द्वारा पिछले विधानसभा निर्वाचनों या लोकसभा के पिछले साधारण निर्वाचनों, जैसी भी स्थिति हो, में दलों के मतदान निष्पादन के आधार पर अतिरिक्त समय आबंटन का निर्णय आयोग द्वारा लिया जाता है। प्रसारण के लिए एक बार में 15 मिनट से अधिक का समय नहीं दिया जाएगा। राजनीतिक दलों को दूरदर्शन और आकाशवाणी पर प्रसारण के लिए निर्वाचन हेतु प्रत्याशियों की सूची के प्रकाशन के दिन से लेकर प्रत्येक चरण के मतदान दिवस के दो दिन पहले तक दिया जाएगा।

छत्तीसगढ़ विधानसभा निर्वाचन-2023 में छत्तीसगढ़ में राजनीतिक दलों को प्रसारण के लिए दूरदर्शन पर कुल 629 मिनट तथा उसी प्रकार रेडियो पर प्रसारण हेतु कुल 629 मिनट निर्धारित किया गया है। इसमें सभी दलों के लिए अनुपातिक रूप से समय दिया गया है। उक्त दिशा निर्देशों के परिपालन में प्रसारण हेतु दिन एवं समय का निर्धारण मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय में मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों की उपस्थिति में दूरदर्शन एवं प्रसार भारती के अधिकारियों द्वारा लॉट निकालकर 19 अक्टूबर 2023 को किया गया। प्रदेश में राजनीतिक दलों को प्रसारण की यह सुविधा दूरदर्शन और आकाशवाणी के क्षेत्रीय प्रसारण केन्द्रों तथा राजधानी रायपुर स्थित प्रसारण केन्द्र से दी जाएगी। इसे छत्तीसगढ़ में स्थित दूरदर्शन और आकाशवाणी के अन्य रिले केन्द्र भी प्रसारित करेंगे। राजनीतिक दलों को आयोग द्वारा निर्धारित मापदंडों का कड़ाई से पालन करना होगा।

मूणत परिवहन मंत्री रहते भगवान राम, हनुमान और माता के नाम पर वसूली टोकन चलाते थे

रायपुर। राजेश मूणत के बयान पर पलटवार करते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेन्द्र वर्मा ने कहा है कि परिवहन मंत्री रहते राजेश मूणत वसूली के नए-नए तरीके अपनाते रहे। परिवहन मंत्री रहते भगवान राम और हनुमान के नाम पर वसूली टोकन चलाने वाले राजेश मूणत बैरियर बंद करने का जुमला फेंक रहे। राजेश मूणत यह बताएं कि उनके कार्यकाल में परिवहन विभाग का होलोग्राम वाला नीलम टोकन क्या था?

वर्मा ने कहा है रमन सरकार के दौरान बैरियर में टोकन के जरिए वाहन चालकों से करोड़ों की वसूली का आरोप था। भाजपा के झंडे के कलर का टोकन, मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम जी के नाम पर बना टोकन, जय मां दुर्गा एवं अन्य नाम से बने टोकन के जरिए राजेश मूणत के परिवहन मंत्री रहते रमन सरकार में अवैध वसूली जारी रही। तमाम मिडिया रिपोर्ट में भाजपा के भ्रष्टाचार उजागर हुए हैं। मूणत बताए कि रमन राज में परिवहन में हर साल 100 करोड़ से अधिक की अवैध वसूली की रकम किसके खाते में जाता था? 1400 करोड़ से अधिक के कमीशन में कौन कौन हिस्सेदार थे? 2400 रूपए लेकर 1500 की रसीद के साथ में 900 का नीलम टोकन देना सभी बैरियर में अनिवार्य कर दिया गया था। परिवहन मंत्री रहते राजेश मूणत का भ्रष्टाचार रमन सिंह के संरक्षण में लगातार जारी रहा। अवैध वसूली के सरगना भाजपाई अब बैरियर बंद करने की हास्यास्पद बात कर रहे हैं। उन्होंने कहा है कि दरअसल राजेश मूणत, रमन सिंह सहित तमाम भाजपा नेता अपराध और अपराधियों के राष्ट्रीय संरक्षक की भूमिका में हैं। अपराध और तस्करी रोकने में अंतराज्यीय बॉर्डर के बैरियर महत्वपूर्ण होते हैं। छत्तीसगढ़ लैंडलॉक प्रदेश है सात राज्यों से हमारी सीमा लगी हुई है, ऐसे में बॉर्डर पर निगरानी के लिए बैरियर ज़रूरी है, लेकिन कोचियों और तस्करों को संरक्षण देने वाले भाजपाई केवल चुनावी लाभ के लिए नए-नए जुमले परोस रहे हैं।

नगरनार और धान खरीदी पर झूठ बोल रहे मोदी शाह: मुख्यमंत्री

रायपुर। छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव सिर पर है। ऐसे में राजनीतिक दल अपने-अपने तरीकों से वोटर्स को अपने पाले में करने की कोशिश कर रहे हैं।वहीं सत्ताधारी दल कांग्रेस भी केंद्र और बीजेपी की पूर्व राज्य सरकार पर हमला करने से नहीं चूक रही है। इसी कड़ी में सीएम भूपेश बघेल ने बीजेपी पर जोरदार तरीके से हमला बोला है। कांग्रेस सरकार के खिलाफ बीजेपी के आरोपों को साजिश बताते हुए सीएम भूपेश ने इसे केंद्र और केंद्रीय जांच एजेंसियों की भूमिका पर सवाल उठाए।

सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि प्रदेश में पहले बीजेपी की सरकार थी।केंद्र में भी उस दौरान बीजेपी ही थी।लेकिन 2014 से 2018 के बीच डबल इंजन की सरकार ने नक्सलियों को रोकने के लिए कोई कदम नहीं उठाए।उल्टा नक्सली हिंसा में इजाफा हुआ। लेकिन जब कांग्रेस प्रदेश में सत्ता में आई तो सरकार की विकास, विश्वास और सुरक्षा की तीन-आयामी रणनीति के परिणामस्वरूप नक्सलियों को बैकफुट पर धकेला गया।

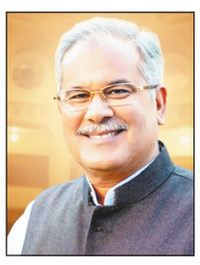

आपको बता दें कुछ दिन पहले ही अमित शाह ने बस्तर में रैली के दौरान भूपेश सरकार पर आरोप लगाए थे कि कांग्रेस राज में नक्सलवाद बढ़ा जबकि केंद्र के नौ साल के शासन में नक्सली हिंसा में 52 फीसदी कमी आई।इस पर सीएम बघेल ने कहा हम केवल बल के इस्तेमाल से नक्सलवाद से नहीं लड़ सकते।हमारे कार्यकाल में कोर इलाकों में पुलिस कैंप खोले गए। जो कैंप 2009 से लंबित थे, उन्हें स्थापित किया गया। सरकार में 90 कैंप खोले गए और लगभग 600 गांवों को नक्सलवाद से मुक्त कराया गया। हजारो किलोमीटर लंबी सड़कें बनीं,नक्सली क्षेत्रों में तीन सौ स्कूल खुले। ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति बेहतर की।

सीएम भूपेश ने कहा कि बीजेपी ने गोबर खरीदी में 1300 करोड़ घोटाले का आरोप लगाया।ये इसलिए नहीं हो सकता क्योंकि गोबर 271 करोड़ में खरीदा गया,वो भी योजना की शुरुआत से।इसका पैसा सीधा लाभार्थियों के खाते में गया।तो घोटाला कहां हुआ। वहीं शराब घोटाले पर स्पष्टीकरण देते हुए सीएम ने कहा कि जिस नकली होलोग्राम की बात हो रही है,वो कहां चिपकाया जाएगा।ये काम कारखानों में ही हो सकता है।ऐसे में ईडी फैक्ट्री संचालकों पर कार्रवाई क्यों नहीं कर रही।जबकि दूसरों की गिरफ्तारी हो रही है।ये तो ब्लैकमेल करने का काम हुआ।

भूपेश बघेल ने कहा 2161 करोड़ रुपये का घोटाले की बात हो रही है।आप फैक्ट्री मालिकों को गिरफ्तार क्यों नहीं करते। उनसे पूछताछ क्यों नहीं करते? आप सिर्फ आधारहीन आरोप लगा रहे हैं। पहले आईटी और फिर ईडी ने छापे मारे और अब उन्होंने अदालत का दरवाजा खटखटाया है। मामले की सीबीआई जांच की मांग की है।

भूपेश बघेल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और ईडी निदेशक को पत्र लिखकर पिछली रमन सिंह सरकार के तहत कथित चिटफंड घोटाले की जांच की मांग की थी। जो मनी लॉन्ड्रिंग का सबसे अच्छा मामला है, लेकिन कुछ नहीं किया गया। पनामा पेपर्स मामले में कथित तौर पर अभिषेक सिंह (पूर्व सांसद और रमन सिंह के बेटे) का नाम आया है।अमित शाह ने हाल ही में कहा कि भ्रष्टाचारियों को उल्टा लटका देना चाहिए।तो पहले अपनी ही पार्टी के लोगों को उल्टा लटकाएं। सीएम भूपेश के मुताबिक सरकार ने 27 प्रतिशत का प्रावधान करने वाला एक विधेयक पारित किया था। ओबीसी के लिए आरक्षण को लेकर लेकिन ये राजभवन के पास लंबित है। राहुल गांधी जी ने कांग्रेस के सत्ता में वापस आने पर जाति जनगणना कराने का वादा किया है। देश में जाति जनगणना के लिए माहौल बन रहा है, जिससे कई जातियों के वंचित लोगों को मदद मिलेगी - चाहे वह अनुसूचित जनजाति हो, अनुसूचित जाति हो, ओबीसी हो या उच्च वर्ग हो।

सीएम भूपेश बघेल ने केंद्र सरकार के धान खरीदनी की बात को झूठा बताया है। सीएम बघेल ने कहा कि राज्य सरकारें ही केवल धान खरीदती है।पंजाब में केवल एफसीआई धान खरीदता है।हम इस कदम का स्वागत करते हैं कि केंद्र पंजाब के फॉर्मूले को ही पूरे देश में लागू करे। पीएम मोदी और शाह वोटों के लिए झूठ बोल रहे हैं।साथ ही साथ सीएम भूपेश ने पीएम मोदी के नगरनार स्टील प्लांट के निजीकरण नहीं करने के बयान पर भी पलटवार किया है। भूपेश की माने तो चुनाव को देखते हुए केंद्रीय गृहमंत्री ने झूठा बयान दिया है। केवल कांग्रेस ही स्टील प्लांट को निजी हाथों में जाने से बचा सकती है।

जाति गणना से नकारात्मकता की आशंका

श्यौराज सिंह बेचैन

इस वर्ष अब तक हमारे देश में दो बड़ी घटनाएं हुई हैं- एक महिला आरक्षण विधेयक का पारित होना और दूसरी बिहार में जाति गणना। ये दोनों घटनाएं भारतीय लोकतंत्र के लिए राजनीतिक व सामाजिक महत्व की हैं। यह आशंका निराधार नहीं है कि अल्पसंख्यक जातियों पर बहुसंख्यक जातियां प्रभुत्व जमा सकती हैं और उनका शोषण कर सकती हैं। लेकिन गुणवत्तापूर्ण जीवन बगैर किसी भी जाति का केवल संख्या बल के आधार पर वर्चस्व स्थापित करना तो दूर, वाजिब हक पाना भी मुश्किल है। हम सभी जानते हैं कि अल्पसंख्यक ब्रिटिशों ने बहुसंख्यक भारतीयों पर करीब दो-ढाई शतक तक राज किया। तो फिर ऐसा क्यों लगता है कि जाति गणना की आंधी में अब तक वर्चस्वशाली रही जातियों के तंबू-डेरे उखड़ जाएंगे? सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संदर्भों में इस का कतिपय दूरगामी प्रभाव अवश्य होगा। इसलिए अच्छा यह हो कि विविधता के मद्देनजर देश सम्यक सुधार की नीति अपनाए। असल में जाति गणना को राजनीतिक दल वोटों के समीकरण के हिसाब से देख रहे हैं, परंतु बौद्धिकों के लिए यह एक गंभीर अध्ययन का विषय है। जहां तक कथित छोटी या अनुसूचित जातियों की स्थिति में सुधार की बात है, वह केवल बढ़ती संख्या दिखने पर नहीं हो सकता। उनके पक्ष में कानून बनने पर भी तब तक सुधार संभव नहीं है, जब तक उन नीतियों पर अमल नहीं होता और सामाजिक न्याय को स्वीकार्यता नहीं मिलती है। संविधान लागू होने के बाद के सत्तर सालों का अनुभव सामने है। 95 फीसदी दलित तो ऐसे हैं, जिन्हें अंग्रेजी राज से लेकर आज तक कभी कोई आरक्षण नहीं मिला। वे ग्रामीण भारत में भूमिहीन कृषि मजदूर हैं और शहरों में बेघर असंगठित मजदूर। दलितों के प्रति सवर्ण जातियों की दबंगई जगजाहिर है। उनके खिलाफ उत्पीड़न और अत्याचारों का ग्राफ भी बढ़ा है। बेशक अनुसूचित जातियों की भी संख्या बढ़ी है, फिर भी उन्हें इससे अपेक्षित लाभ नहीं मिल सका। चूंकि 'पूना पैक्ट' के बाद अनुसूचित जाति के बीच से उनके राजनीतिक प्रतिनिधि संसद और विधानसभाओं में जाते रहे, लेकिन निर्णायक पदों पर उनकी अनुपस्थिति बनी रही। ऐसे में जाति गणना से कौन-सी गैर दलित जाति विलुप्त हो जाएगी? जहां तक जातियों की प्रगति-दुर्गति का प्रश्न है, यह राजनीतिक समीकरण पर निर्भर करता है। डॉ. आंबेडकर संविधान में खूबियां गिना कर गए। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि 'संविधान कितना भी अच्छा हो, उसे लागू करने वाले लोग अच्छे नहीं होंगे, तो अच्छा संविधान भी अच्छा परिणाम नहीं देगा।% अंग्रेजों ने जनगणना से प्राप्त जाति विषयक जानकारियों का दस्तावेजीकरण किया। लेकिन दलितों के लिए तो खुद अंग्रेज अफसरों की नाक के नीचे जलाशय तक 'ठाकुर का कुआं% बने रहे। भारतीय संत परंपरा से लेकर संविधान तक 'जाति% न पूछने की इच्छा व्यक्त की गई। लेकिन हमारी सेवाओं के आवेदनों में, साक्षात्कारों में, बेटी-बेटों के रिश्तों में, पूजा स्थलों पर प्रवेश के दौरान जाति पूछी, बताई और दर्शाई जाती रही। जातियां संविधानेतर व्यवस्थाओं में समान दर्जा न पाने के कारण लाभ-हानि की वजह बनती रहीं। जाति के कारण किसी ने अतिरिक्त लाभ प्राप्त किया, तो जाति के ही कारण किसी को मानवाधिकारों से वंचित किया गया। जनसंख्या में वृद्धि के लिए कई कारक जिम्मेदार रहे हैं। इसके लिए राजनीतिक वर्ग भी जिम्मेदार है, जिसने अपने चुनावी हित के लिए इसे प्रोत्साहित किया। इसके अलावा शिक्षा-ज्ञान को सीमित करने वाले और आर्थिक, सामाजिक असंतुलन को बढ़ाने वाले लोग भी जिम्मेदार हैं। ऐसे में वंचित लोगों के सामने भविष्य की सुरक्षा के लिए यही विकल्प रहा कि वे ज्यादा से ज्यादा बच्चे पैदा करें। जातियां टूटने पर ही राष्ट्रीयता जुड़ेगी। 'हम भारत के लोग% कब तक जातियों के लोग बने रहेंगे? दलितों के प्रति समाज में उग्रता व आक्रामकता बरकरार है, उनमें और वृद्धि हो सकती है।

महुआ मोईत्रा की राजनीति दांव पर

अजय सेतिया

महुआ मोईत्रा का लोकसभा की एथिक्स कमेटी में तो जो होगा, सो होगा, ममता बनर्जी उनका राजनीतिक कैरियर खत्म करने वाली हैं। दुर्गा पूजा के बाद तृणमूल कांग्रेस की अनुशासन समिति का डंडा चलेगा। इसके बाद उन्हें लोकसभा का टिकट भी नहीं दिया जाएगा। सिर्फ यह एक मामला नहीं है कि महुआ मोईत्रा पर संसद में सवाल पूछने के बदले मोटी रकम और गिफ्ट वसूलने का आरोप लगा है, इसलिए ममता बनर्जी उनसे नाराज हो गई है। ममता बनर्जी पिछले तीन सालों में अनेक बार महुआ मोईत्रा की हरकतों पर उन्हें डांट चुकी थी।

दर्शन हीरानन्दानी का तथाकथित हल्फिया बयान सामने आने के बाद ममता बनर्जी ने अपनी पार्टी के नेताओं को संकेत दे दिया है कि वे इस मामले में कुछ भी नहीं बोलें। ममता बनर्जी ने उन्हें कहा है कि यह पार्टी का मामला नहीं है। यह महुआ मोईत्रा का व्यक्तिगत मामला है। अगर उसने गलती की है, तो लोकसभा उन्हें सजा देगी, और अगर उन्होंने गलती नहीं की है, तो वह बरी हो जाएंगी। एक तरह से तृणमूल कांग्रेस ने उनका कोई बचाव करने से इंकार कर दिया है।

डेनमार्क निवासी अपने पति से तलाक के बाद भारत लौटी महुआ मोईत्रा ने 2008 में कांग्रेस ज्वाईन की थी। उनकी मां और पिता भी कांग्रेस में एक्टिव थे। उनके पिता ने चुनाव भी लड़ा था, लेकिन वह जीत नहीं पाए थे। महुआ ने 2010 में जब तृणमूल कांग्रेस ज्वाईन करने का फैसला किया, तो उनकी मां उससे सहमत नहीं थी। लेकिन महुआ ऐसा मानती है कि तृणमूल कांग्रेस ज्वाईन करके उसने अपने राजनीतिक भाग्य के दरवाजे खोल लिए, 2016 में वह विधायक चुनी गई और विधायक रहते हुए ही 2019 में लोकसभा की सदस्य भी चुनी गई।

सांसद चुने जाने के बाद लोकसभा के पहले ही सत्र में भाजपा और मोदी के खिलाफ हमलावर भाषण ने उन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मीडिया में सुर्ख़ियों में ला दिया था। भारत के मोदी विरोधी मीडिया ने उनके भाषण की तारीफ़ करते हुए लिखा था महुआ मोईत्रा ने लोकसभा में अपने पहले ही भाषण में मोदी राज के बढ़ते फासीवाद की पोल खोल कर रख दी और सरकार की कमर तोड़कर रख दी। सोशल मीडिया पर कई लोगों ने उनके भाषण को वर्ष का भाषण लिखा था।

पिछले साढ़े चार सालों में अपने हर भाषण के साथ वह लोकप्रिय होती चली गई। लेकिन बंगाल और तृणमूल कांग्रेस की घरेलू राजनीति में वह कुछ न कुछ ऐसा करती रहीं कि अपनी पार्टी की नेता ममता बनर्जी की नजरों में जितनी तेजी से चढ़ी थी, उतनी तेजी से गिरती चली गई।

महुआ मोईत्रा ने जब पिछले साल देवी काली पर अपमानजनक टिप्पणी करते हुए कहा कि उनकी नजर में काली मीट खाने और शराब पीने वाली देवी है, तो इसकी बंगाल में बड़ी तीखी प्रतिक्रिया हुई थी। तब भी ममता बनर्जी ने उन्हें डांटा था। उससे एक साल पहले दिसंबर 2021 में नादिया जिले की एक पार्टी बैठक में ममता बनर्जी ने महुआ मोईत्रा से कहा था कि वह सोशल मीडिया पर ज्यादा एक्टिव रहने के बजाए अपने निर्वाचन क्षेत्र पर ज्यादा ध्यान दे।

2022 में भी ममता बनर्जी ने महुआ मोईत्रा को सार्वजनिक मंच से नसीहत दी थी कि वह अपने लोकसभा क्षेत्र तक सीमित रहें, दूसरे क्षेत्रों और पार्टी के संगठनात्मक मामलों में दखल न दें। यह बात उन्होंने तब कही थी जब वह अपने पुराने विधानसभा क्षेत्र के मामलों में जरूरत से ज्यादा दखल दे रही थीं, और उनके सांसद चुने जाने के बाद उनकी जगह बने विधायक ने ममता बनर्जी से उनकी शिकायत की थी।

अब महुआ अपने सिर्फ तेरह साल के राजनीतिक कैरियर में पैसे के बदले लोकसभा में सवाल पूछने के मामले में बुरी तरह फंस गई है, तो उनकी पार्टी ने पूरी तरह किनारा कर लिया है। क्योंकि अगर वह दोषी पाई जाती है और उन्हें लोकसभा से बर्खास्त किया जाता है, तो तृणमूल कांग्रेस और इंडी एलायंस की भी बड़ी बदनामी होगी। लोकसभा की एथिक्स कमेटी की ओर से दोनों शिकायतकर्ताओं निशिकांत दूबे और जय अनंत देहदराई को तलब किए जाने के बाद तय है कि महुआ मोईत्रा और उन्हें कैश और महंगे गिफ्ट देने वाले व्यापारी दर्शन हीरानन्दानी को भी बुलाया जाएगा।

इससे घबरा कर महुआ मोईत्रा ने 19 अक्टूबर को शिकायतकर्ता अपने पूर्व मित्र जय अनंत देहदराई के साथ समझौते की पेशकश की। महुआ मोईत्रा के वकील गोपाल शंकर नारायण ने जय अनंत को फोन करके उनके सामने प्रस्ताव रखा कि अगर वह सीबीआई और सांसद निशिकांत दूबे को भेजी गई शिकायत वापस ले ले, तो वह उसे उसका कुत्ता लौटा देगी।

महुआ मोईत्रा और जय अनंत कई सालों से अंतरंग मित्र थे, उन दोनों के हम प्याला होने वाले कई फोटो भी वायरल हुए हैं। इन दोनों की दोस्ती टूटने के बाद जय अनंत ने दोस्ती को बरकरार रखने के कई बार प्रयास किए थे। लेकिन जब प्रयास विफल होते दिखे तो वह महुआ के घर से अपना कुत्ता जिसका नाम हेनरी है, उठा ले गया था। महुआ ने उसे अपना कुत्ता बताते हुए पुलिस में जय अनंत के खिलाफ कुत्ता चोरी की शिकायत दर्ज करवा दी थी। पुलिस के दखल से जय अनंत ने वह कुत्ता महुआ को दे दिया था। दोनों ने पुलिस में एक दूसरे के खिलाफ कई शिकायतें दर्ज करवाई थीं, जिन्हें दोनों ने सितंबर में ही वापस लिया गया था।

अब महुआ मोईत्रा ने कुत्ता वापस लौटाने की पेशकश कर के यह बात भी मान ली कि उसने पुलिस में झूठी एफआईआर दर्ज करवाई थी। कुत्ता लौटाने की पेशकश का खुलासा खुद जय अनंत ने शुक्रवार सुबह 6.48 बजे एक्स पर ट्विट लिख कर किया। निशिकांत दूबे को टैग करते हुए उन्होंने लिखा कि वह सीबीआई को इस बातचीत का पूरा ब्योरा देंगे। इस पर निशिकांत ने एक्स पर अपने जवाब में लिखा जिस पार्टी की नेता साधारण साड़ी व चप्पल पहनती है, उस पार्टी की सांसद लुई वितोन और गुच्ची के महंगे तोहफे लेती है, और बंगाली संस्कृति की दुहाई देती है?

महुआ मोईत्रा ने शिकायतकर्ता जय अनंत देहादराई, सांसद निशिकान्त दूबे और 18 मीडिया घरानों के खिलाफ मानहानि का केस दर्ज करवाया था। शुक्रवार को दिल्ली हाईकोर्ट में जैसे ही सुनवाई शुरू हुई, जय अनंत ने कहा कि कल महुआ मोईत्रा के वकील गोपाल शंकर नारायण ने उन्हें फोन कर के समझौते की पेशकश की थी, जिसमें शिकायत वापस लेने के बदले उनका कुत्ता उन्हें वापस दिलाने की बात कही गई थी। जय अनंत ने कहा कि उनके पास सारी बातचीत की रिकार्डिंग है।

यह सुनते ही कोर्ट में सनसनी फ़ैल गई और महुआ मोईत्रा के वकील गोपाल शंकर नारायण के पैरों तले की जमीन खिसक गई, क्योंकि उनका यह कृत्य वकालत के सिद्धांतों के खिलाफ है। इस पर उनका कोर्ट में प्रेक्टिस का लाईसेंस भी रद्द हो सकता है। इसलिए उन्होंने खुद को केस से अलग करने की घोषणा कर के अपना पिंड छुड़ाना ही उचित समझा। अब महुआ मोईत्रा को नया वकील ढूंढना पड़ेगा। कोर्ट ने 31 अक्टूबर तक केस की सुनवाई टाल कर महुआ मोईत्रा की मीडिया पर खबरें छापने पर रोक लगवाने की कोशिश भी नाकाम कर दी है। इसमें कोई शक नहीं है कि महुआ मोईत्रा चारों तरफ से घिर गई हैं। वह जितना भी बचने की कोशिश कर रही हैं, उतनी ही उलझती जा रही हैं। संसद में सवाल पूछने के लिए महुआ मोइत्रा को रिश्वत देने के आरोपी व्यवसायी दर्शन हीरानंदानी एक तरह से सरकारी गवाह बन गए हैं। उन्होंने तीन पन्नो के हलफनामे में दावा किया कि सुश्री मोइत्रा ने अपने संसद के लॉगिन का पासवर्ड उन्हें दिया था ताकि वह सीधे उनकी ओर से प्रश्न पोस्ट कर सकें। महुआ मोईत्रा ने पहले तो हल्फिया बयान को झूठ का पुलंदा बताया, लेकिन बाद में कहा कि पीएमओ ने बंदूक की नोक पर हल्फिया बयान दर्ज करवाया है। उन्होंने एक्स पर लिखा, दर्शन हीरानंदानी को अभी तक सीबीआई या एथिक्स कमेटी या किसी भी जांच एजेंसी ने तलब नहीं किया है। फिर उन्होंने यह हलफनामा किसे दिया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा....

महोपनिषद् (भाग-22)

गतांक से आगे...

पुन: महर्षि ऋभु ने कहा- हे पुत्र ! मेरे द्वारा कहे वचनों को भली प्रकार सुनो। अज्ञान और ज्ञान इन दोनों की सात-सात भूमिकायें हैं। इनके बीच में अनेक दूसरी भूमिकायें उत्पन्न होती हैं। अहंभाव ही मूल स्वरूप से पृथक् करने वाला है। स्वरूप में अवस्थित होना ही मुक्ति है। शुद्ध सत्तारूप बोध ही आत्मा का रूप हैं, जो उस बोध की अवस्था से हटते नहीं, ऐसे साधकों को अज्ञान से पैदा हुए राग-द्वेषादि दूषित विकार प्रभावित नहीं कर पाते। आत्मस्वरूप से हटकर वासनात्मक स्वरूप में जो चित् का डूबना है, इससे अधिक मोहग्रस्त होना दूसरा नहीं कहा जाएगा और न हो सकता है।

एक विषय से दूसरे विषय में प्रवेश करते हुए जो मध्य में मन की अवस्था होती है, उसे ध्वस्तमनन के स्वरूप वाली स्थिति समझा जाता है, लेकिन सभी संकल्पों के पत्थर की शिला के समान भली प्रकार शान्त हो जाने पर निश्चेष्ट अवस्था जिसमें जाग्रत् और स्वप्नावस्था भी प्राय: चेष्टारहित होती है, वही परास्वरूप स्थिति कहलाती है। अहंभाव के क्षीण हो जाने पर शान्त, चेतन तथा भेदभाव से रहित चित्त की स्थिति ही स्वरूप अवस्था कहलाती है।

मोह के सात प्रकार कहे गये हैं, जो इस प्रकार हैं-1. बीज जाग्रत् अवस्था, 2. जाग्रत् अवस्था, 3. महाजाग्रत अवस्था 4. जाग्रत्स्वप्नावस्था 5 स्वप्नावस्था 6. स्वप्न जाग्रत् अवस्था, 7. सुषुप्तावस्था। तत्पश्चात् यही परस्पर मिलकर असंख्य रूप धारण कर लेते हैं। अब इन सबके अलग-अलग लक्षण सुनें। प्रथम बीज जाग्रत् अवस्था वह है, जो नामरहित शुद्धचेतन की भविष्यत् में घटित होने वाली, चित्त- जीव आदि नाम के शब्दार्थरूप सम्बोधन से युक्त अवस्था है। वह बीजरूप में स्थित जाग्रत् अवस्था बीज जाग्रत् नाम से प्रसिद्ध है। यह ज्ञाता की नूतन अवस्था है। अब आप जाग्रत् अवस्था की यथार्थ स्थिति सुनें।

नवजात जीव के अन्तरंग में यह मैं हूँ, यह मेरा है अर्थात् मैं और मेरेपन के भावों की स्थिति ही मोह की दूसरी जाग्रत अवस्था कही जाती है; क्योंकि उससे पूर्व यह भावना नहीं थी। महाजाग्रत अवस्था वह है, जिसमें यह वह व्यक्ति है, यह मैं हूँ, वह मेरी चीज है आदि भावनाएँ पूर्वजन्मों के संस्कार सहित विदित होती हैं। अप्रचलित (अरूढ़) अथवा प्रचलित (रूढ़ एवं तन्मय होकर जो मन की काल्पनिक रचना जाग्रत् अवस्था में होती है, वह जाग्रत् स्वप्न कही गयी है। एक चन्द्रमा की जगह दो चन्द्रमाओं का, सीप में चाँदी का तथा मृग मरीचिका में (बालू में) जल का आभास होना इत्यादि (जाग्रत् अवस्था में) अभ्यास को प्राप्त हुए जाग्रत् स्वप्न के विभिन्न प्रकार हैं। स्वप्नावस्था वह कहलाती है, जिसमें कुछ समय पूर्व देखा गया दृश्य पुन: दृष्टिगोचर न हो और जागने पर उस दृश्य की मनुष्य को स्मृति मात्र शेष रहे।

क्रमश: ...

स्वामी रामतीर्थ

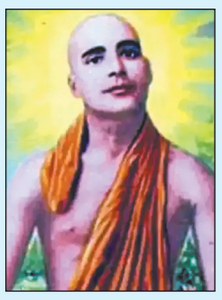

शहंशाह स्वामी रामतीर्थ—संन्यास से पूर्व स्वामी रामतीर्थ का नाम गोस्वामी तीर्थ राम था। इनका जन्म 22 अक्टूबर, 1873 को तत्कालीन पंजाब प्रांत के जिला गुजरांवाला के ग्राम मुरारीवाला में हुआ था, जो इस समय पाकिस्तान में है। गोस्वामी तीर्थराम का संबंध कुछ लोग 'रामचरित मानस' के रचनाकार संत तुलसीदास जी से मानते हैं, जबकि कुछ के विचार से इसी नाम के एक और संत थे, जिनकी प्रसिद्धि उत्तरी-पश्चिमी सीमा पंजाब प्रांत में थी, जिनकी गद्दी 'चित्रल' के पास स्थित 'स्वाट' में थी। यहां, अपने पूर्वजों की गद्दी पर तीर्थराम अपने पिता के साथ समय-समय पर माथा टेकने जाया करते थे।

सभी जानते हैं कि उस समय समाज में बाल-विवाह की प्रथा थी। इसके अनुसार कम आयु में ही बच्चों की शादी कर दी जाती थी। तीर्थराम के साथ भी ऐसा ही हुआ। उनका विवाह मुरारीवाला से 6-7 कोस की दूरी पर स्थित 'विरोके' ग्राम के एक ब्राह्मण परिवार की बेटी 'शिवो देवी' के साथ कर दिया गया।

यहां तीरथराम के जीवन की उन महत्त्वपूर्ण घटनाओं का जिक्र करना बहुत जरूरी है, जिन्होंने उनके जीवन की गति को तेज घुमावदार मोड़ दिया। पहली घटना है स्वामी विवेकानंद का 5 नवंबर, सन् 1897 को लाहौर आगमन। यहां स्वामी जी के 'हिंदूधर्म', 'भक्ति' तथा 'वेदांत' इन तीन विषयों पर भाषण हुए। इन भाषणों ने लाहौर क्या पूरे पंजाब के प्रबुद्ध जिज्ञासुओं के हृदयों में मानो नई चेतना का संचार कर दिया। इस प्रभाव से गोस्वामी तीरथराम भी अछूते नहीं रहे। इन भाषणों का आयोजन गोस्वामी तीरथराम ने ही किया था। वे उस समय लाहौर की सनातन धर्म सभा के महामंत्री थे। प्रचलित है कि गोस्वामी तीरथराम ने स्वामी विवेकानंद के समक्ष 'भक्ति' के प्रतिपादन के संदर्भ में असंतुष्टि की बात कही थी, तभी अगले दिन 'वेदांत' पर स्वामी जी ने अपना ओजस्वी भाषण दिया था। यहां यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि स्वामी विवेकानंद के इस अद्वैत- परक व्याख्यान को सुनकर, जिसमें जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति और विषयों के त्याग पर बल दिया गया था—गोस्वामी तीरथ राम के वैराग्य को मानो पंख मिल गए थे। अब उनके लिए एक-एक पल बिताना मुश्किल हो रहा था।

दूसरी घटना है द्वारका मठ के तत्कालीन शंकराचार्य श्री स्वामी माधवतीर्थ जी से मिली प्रेरणा। संभवतया, उन्हीं से मिले मार्गदर्शन के फलस्वरूप गोस्वामी तीरथराम ने संन्यास लिया था—अर्थात् स्वयं से स्वयं को दीक्षा। ऐसे अन्य उदाहरण पुराणों में भी मिलते हैं। वैराग्य के परम उत्कर्ष पर होने की स्थिति में इस दीक्षा का विधान शास्त्रों में दिया गया है। लेकिन इसे नियम नहीं, 'विशेष स्थिति' कहा जाता है। इस आदेश के बाद 'गुरु'की खोज का बंधन भी गोस्वामी तीरथराम के समक्ष नहीं रह गया था। जब आत्मा ही गुरु है, तो उसकी तलाश भीतर ही क्यों न की जाए। अक्टूबर सन् 1897 को वे जीवन के सत्य की खोज में लाहौर से हरिद्वार पहुंच गए। देवभूमि में प्रवेश का यह द्वार जिज्ञासुओं को सदा से अपनी ओर आकर्षित करता आ रहा है। मां गंगा की पावन धारा के किनारे बसी इस तप:स्थली का यह माहात्म्य ही है कि इसने दक्ष प्रजापति को दिव्य यज्ञ करने के लिए अपनी गोद में आमंत्रित किया। विदित हो कि इसके एक ओर जहां मां चंडी का पीठ विराजमान है, वहीं दूसरी ओर मनसादेवी अपने भक्तों की मनोकामना को पूर्ण कर रही हैं। प्रत्येक 12 वर्षों के बाद महाकुंभ का यहां लगना भी तो इसके आध्यात्मिक महत्त्व का बखान करता है। गोस्वामी तीरथराम का मन बेचैन था। यह बेचैनी ही तो 'परम' को साधने का परम साधन है। यह स्थिति ऐसी थी, मानो किसी ने प्राणों को रोक दिया हो, तब जीवन के परम लक्ष्य को साधने का अंतिम क्षण बिलकुल सामने स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

गाजा में युद्ध से परे शांति की संभावना

शेखर गुप्ता

जहां बहुत मामूली क्षमता से काम हो सकता था वहां इस कदर शक्ति प्रदर्शन करने का बेंजामिन नेतन्याहू का रवैया विवेकसम्मत नहीं है। मृत शिशुओं की तस्वीरों से पटी इस जंग में यह सवाल बेमानी हो जाएगा कि वास्तविक पी?ड़ित कौन है। हमास के हिंसक हमले के बाद उत्पन्न भूराजनीतिक संकट को एक सप्ताह का समय बीत चुका है और हम इसे तीन पहलुओं में बांट कर देख सकते हैं। पहला, जैसी कि आप उम्मीद करेंगे, यह बहस कि इसे सही ढंग से कैसे व्याख्यायित की जाए, खासकर यह देखते हुए कि बीबीसी और उसके कनाडाई संस्करण सीबीसी में चलने वाली बहसों को लेकर हुए विवाद के बीच जहां कहा जा रहा है कि हमास को आतंकवादी न कहा जाए। हमने दुनिया भर में दो तरह की प्रतिक्रिया देखी है। पहली प्रतिक्रिया में इन हमलों को आतंकवाद बताकर इनकी आलोचना की गई और कहा गया कि इजरायल को अपना बचाव करने का हक है। पश्चिम में इजरायल के दोस्तों और पश्चिमी गठबंधन का यही नजरिया रहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ट्वीट को देखें तो भारत का भी यही रुख रहा है।

दूसरा विचार एक 'लेकिन' के इर्दगिर्द बुना गया। ये हमले गलत हैं 'लेकिन' इजरायल भी लंबे समय से फिलिस्तीनी नागरिकों के साथ गलत व्यवहार कर रहा है। हमारे देश में भी इस विषय पर काफी बहस देखने को मिली है। भारतीयों की पूरी एक या बल्कि दो पीढ़ियां ऐसी हैं जो इजरायल और फिलिस्तीन की हालत को शीतयुद्ध की विचारधारा से जोड़कर देखती हैं, इसमें नैतिकता का पहलू रखते हैं और 'लेकिन' के साथ निंदा में यकीन रखते हैं। यह रुख न केवल पीड़ित को दोषी बताता है बल्कि नैतिकता के पैमाने

पर भी यह विफल है। इस बारे में विचार कीजिए- भारत 2008 में 26/11 के हमलों से जूझ रहा है और कई देश जिनमें हमारे मित्र देश शामिल हैं, वे कुछ इस तरह की बात करें 'यह बहुत भयानक है। लेकिन आपको पता है, अगर आपने कश्मीर मुद्दे को अनसुलझा नहीं छोड़ा होता, अगर आपने मुस्लिमों के साथ बेहतर व्यवहार किया होता और अयोध्या की मस्जिद का क्या?' कल्पना कीजिए भारत और उसकी सरकार को तब कितना बुरा लगता।

अमेरिका ने 9/11 के हमले के बाद अपना रुख बदल दिया। 2008 के बाद 15 वर्षों तक किसी ने भारत को आतंकवाद की बुनियादी दिक्कत के बारे में भाषण देने का साहस नहीं किया। हमने 2002 में ऑपरेशन पराक्रम के दौरान भारत आने वाले पश्चिमी नेताओं को ऐसा करते देखा था। किसी ने भी कश्मीर या किसी अन्य मसले का जिक्र नहीं किया था। मुझे साफ तौर पर याद है कि ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर ने उस वक्त कहा था, 'हम पूरी तरह भारत के साथ हैं।' हमें भी इजरायल में हमास के अत्याचारों पर सबसे पहले और स्पष्ट प्रतिक्रिया देनी चाहिए। इस मामले में केवल एक पीड़ित है और वह है इजरायल। केवल एक आततायी है और वह है हमास। यह एक आतंकवादी संगठन है। जिन लोगों को अभी भी नैतिक स्तर पर शकोशुबहा हो, उनके लिए बता दें कि संयुक्त राष्ट्र के महासचिव ने भी इसे आतंकी कार्रवाई बताया है। फिलिस्तीन का प्रश्न बरकरार है और उसे हल करना होगा, ठीक कश्मीर की तरह। बहरहाल, यह दलील देना अशोभनीय होगा कि जब तक ये मसले हल नहीं होते तब तक किसी को भी आतंकवाद का बतौर नीति इस्तेमाल करने देना सही होगा। हमें समझना होगा कि फिलिस्तीन को लेकर एक नजरिया नहीं है। अनिवार्य अंतर यह है कि फिलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गनाइजेशन ने 1988 में इजरायल को मान्यता दे दी थी जबकि हमास इस्लामी मान्यताओं के अनुसार सभी यहूदियों के खात्मे पर यकीन करता है।

उधर, नेतन्याहू के पास अपने अलग पवित्र ग्रंथ हैं और उन्होंने दो मुल्कों वाले विचार को खारिज कर दिया है? जबकि इसी ने इजरायल को फिलिस्तीन से मान्यता दिलवाई। यह भी एक तरह की बेशर्मी है। इसने इजरायल को नैतिक और राजनीतिक तौर पर कमजोर किया है। इसने इजरायल के दोस्तों के लिए भी हालात मुश्किल किए हैं। जल्दी ही उनके मित्र उन्हें याद दिलाएंगे कि उनका देश फिलिस्तीन की संप्रभुता को लेकर क्या वादे कर चुका है। भारत शायद ऐसा करने वाला पहला देश है जिसने विदेश मंत्रालय के संवाददाता सम्मेलन के माध्यम से ऐसा किया है। अमेरिका शायद आखिर में ऐसा करे। इस बात का दूसरा पहलू नेतन्याहू के उस बयान में देखा जा सकता है कि उनके लिए हमास का हर व्यक्ति मर चुका है। इस बयानबाजी की अनदेखी की जा सकती है लेकिन इसमें दो राय नहीं कि बड़ी तादाद में हमास के लोग मारे जाएंगे। इससे भी अहम बात यह है कि एक संगठन के रूप में हमास समाप्त हो जाएगा। इस पीढ़ी का इतिहास बताता है कि बुरे विचार और विचारधाराएं कभी खत्म नहीं होतीं। वे रूप बदलकर फैलती रहती हैं। अल-कायदा और आईएस के बारे में सोचिए जो हमारे दौर के सबसे खूंखार संगठन रहे हैं। भौगोलिक और भू-राजनीतिक संगठन के रूप में उनका अस्तित्व समाप्त हो गया है। बहरहाल, विचार बरकरार रहते हैं। बुरी तरह से नाराज कोई भी खराब आदमी इंटरनेट पर तरीके सीख सकता है 'इस्लामिक स्टेट' की टी-शर्ट पहनकर वीडियो संदेश जारी कर सकता है और खुद को भीड़ भरे बाजार में बम से उड़ा सकता है। 2019 में ईस्टर के अवसर पर श्रीलंका में हुए धमाकों को याद कीजिए। इजरायल की प्रतिक्रिया नाराजगी भरी है। हालिया इतिहास बताता है कि बड़ी शक्तियों की नाराजगी काफी नुकसान पहुंचा सकती है, मौतों की वजह बन सकती है। वे अपनी आबादी के भावनात्मक तारों को छेड़ सकती है लेकिन उनकी जीत कभी नहीं होती। वरना अमेरिका को अफगानिस्तान में पूरी तरह और इराक में आंशिक हार का सामना नहीं करना पड़ता। अल-कायदा आखिर में आईएस में बदल गया। मृत बच्चों की तस्वीरों, मेरा बनाम तुम्हारा की लड़ाई में यह सवाल बेमानी रहेगा कि पीड़ित कौन है।

तीसरा आयाम इजरायल की अत्यधिक शक्तिशाली सैन्य और खुफिया व्यवस्था की सबसे बड़ी और दोनों में शायद सबसे बड़ी नाकामी में निहित है। सन 1973 के योम किप्पर युद्ध में इजरायल आसानी से उबरने में कामयाब रहा और उसने अपना हिसाब भी बरकरार कर लिया। बाद की जांचों में पता चला कि इस बारे में तमाम खुफिया जानकारी मौजूद थी कि बड़े पैमाने पर हमले की योजना बनाई गई थी लेकिन इजरायली कमांडरों ने उसे गंभीरता से नहीं लिया।

हिन्द स्वराज्य

शिक्षा (भाग-3)

गतांक से आगे...

प्रश्न- अगर ऐसा ही है तो मैं आपसे एक सवाल करूँगा। आप ये जो सारी बातें कह रहे हैं, वह किसकी बदौलत कह रहे हैं? अगर आपने अक्षर-ज्ञान और ऊँची शिक्षा नहीं पायी होती, तो ये सब बातें आप मुझे कैसे समझा पाते?

उत्तर- आपने अच्छी सुनायी। लेकिन आपके सवाल का मेरा जवाब भी सीधा ही है। अगर मैंने ऊँची या नीची शिक्षा नहीं पायी होती. तो मैं नहीं मानता कि मैं निकम्मा हो जाता। अब ये बातें कहकर मैं उपयोगी बनने की इच्छा रखता हूँ। ऐसा करते हुए जो कुछ मैंने पढ़ा उसे मैं काम में लाता हूँ; और उसका उपयोग, अगर वह उपयोग हो तो, मैं अपने करोड़ों भाइयों के लिए नहीं कर सकता, सिर्फ आप जैसे पढ़े-लिखों के लिए ही कर सकता हूँ। इससे भी मेरा ही बात का समर्थन होता है। मैं और आप दोनों गलत शिक्षा के पंजे में फँस गये थे। उसमें से मैं अपने को मुक्त हुआ मानता हूँ। अब वह अनुभव मैं आपको देता हूँ और उसे देते समय ली हुई शिक्षा का उपयोग करके उसमें रही सड़न मैं आपको दिखाता हूँ। इसके सिवा, आपने जो बात मुझे सुनायी उसमें आप गलती खा गये, क्योंकि मैंने अक्षर-ज्ञान को (हर हालत में) बुरा नहीं कहा है। मैंने तो इतना ही कहा है कि उस ज्ञान की हमें मूर्ति की तरह पूजा नहीं करनी चाहिए। वह हमारी कामधेनु नहीं है। वह अपनी जगहपर शोभा दे सकता है। और वह जगह यह है- जब मैंने और आपने अपनी इन्द्रियों को बस में कर लिया हो, जब हमने नीति की नींव मजबूत बना ली हो, तब अगर हमें अक्षर ज्ञान पाने की इच्छा हो, तो उसे पाकर हम उसका अच्छा उपयोग कर सकते हैं। वह शिक्षा आभूषण के रूप में अच्छी लग सकती है। लेकिन अक्षर-ज्ञान का अगर आभूषण के तौरपर ही उपयोग हो तो ऐसी शिक्षा को लाजिमी करने की हमें जरूरत नहीं। हमारे पुराने स्कूल ही काफी हैं। वहाँ नीति की शिक्षा को पहला स्थान दिया जाता है। वह सच्ची प्राथमिक शिक्षा है। उसपर हम जो इमारत खड़ी करेंगे वह टिक सकेगी।

क्रमश: ...

युवा और महिला मतदाताओं पर होगा जीत हार का दारोमदार

उमेश चतुर्वेदी

पांच राज्यों की विधानसभा चुनावों का बिगुल बज चुका है। राजनीतिक दलों के सियासी गणित में जोड़-घटाव स्वाभाविक है। लेकिन चुनाव आयोग के आंकड़ों पर भरोसा करें तो इन चुनावों में सबसे अहम भूमिका युवा मतदाताओं की होने जा रही है। माना जा रहा है कि जिन्होंने युवाओं को साध लिया, जीत उसके हाथ लगने की संभावना ज्यादा है। इसकी वजह है, इन राज्यों में नए वोटर बने कुल मतदाताओं की संख्या। पांचों राज्यों में पहली बार करीब साठ लाख वोटर मतदान करने वाले हैं। जाहिर है कि उनमें पहली बार वोट डालने का उत्साह है और वे अपने मतदान के अधिकार का प्रयोग भी पूरे उत्साह से करेंगे।

जिन राज्यों में चुनाव हो रहे हैं, उनमें जनसंख्या के लिहाज सबसे बड़ा राज्य मध्य प्रदेश है। यहां सबसे ज्यादा 22 लाख 36 हजार नए वोटर बने हैं। राज्य में 230 विधानसभा सीटें हैं। इस लिहाज से देखें तो औसतन हर सीट पर करीब 9722 नए वोटर होंगे। लेकिन प्रति सीट नए वोटर के लिहाज से राजस्थान की स्थिति मध्य प्रदेश से बेहतर है। राजस्थान विधानसभा चुनावों में पहली बार करीब 22 लाख चार हजार वोटर वोट डालने जा रहे हैं। राज्य की 200 विधानसभा सीटों के लिहाज से देखें तो हर सीट पर करीब 11020 नए वोटर होंगे। इसी तरह छत्तीसगढ़ में सात लाख 23 हजार नए वोटर बने हैं। जिनका प्रति सीट औसत आठ हजार 33 हो रहा है। इसी तरह मिजोरम में 50 हजार 611 नए वोटर पहली बार वोट डालेंगे। यानी प्रति विधानसभा इनकी औसत संख्या करीब साढ़े बारह सौ है। इसी तरह तेलंगाना में 8 लाख 11 हजार नए वोटर बने हैं। जिनका प्रति विधानसभा औसत 6815 बैठता है।

नए वोटरों के रूझान और उससे पड़ने वाले सियासी प्रभावों के पहले तीनों राज्यों में महिला वोटरों की संख्या पर ध्यान दिया जाना चाहिए। इसकी वजह यह है कि पिछले कुछ चुनावों से महिलाओं के मतदान का रूझान अपने परिवारों से कुछ अलग नजर आया है। पहले माना जाता रहा कि परिवार के पुरूष मुखिया के वैचारिक रूझान के हिसाब से ही महिलाएं भी वोट देती रही हैं। लेकिन अब महिलाएं अपनी पसंद के हिसाब से वोट डालने लगी हैं। 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों में मोदी की जीत के पीछे महिलाओं और युवा वोटरों का साथ माना गया था।

छत्तीसगढ़ और मिजोरम ऐसे राज्य हैं, जहां पुरूष

वोटरों की तुलना में महिला वोटरों की संख्या ज्यादा है। छत्तीसगढ़ के एक करोड़ एक लाख पुरूष वोटरों की तुलना में महिला वोटरों की संख्या एक करोड़ दो लाख है। जाहिर है कि हर सीट पर करीब 1111 महिला वोटर पुरूष वोटरों की बनिस्बत ज्यादा हैं। इसी तरह मिजोरम में करीब चार लाख 13 हजार पुरूष वोटरों की तुलना में महिला वोटरों की संख्या करीब चार लाख 39 हजार है। हालांकि मध्य प्रदेश और राजस्थान में ऐसी स्थिति नहीं है। राजस्थान में दो करोड़ 74 लाख वोटरों के सामने करीब दो करोड़ 52 लाख ही महिला वोटर हैं। इसी तरह मध्य प्रदेश के दो करोड़ 88 लाख पुरूष वोटरों के अनुपात में महिला वोटरों की संख्या दो करोड़ 72 लाख ही है। इसी तरह तेलंगाना के करीब एक करोड़ 59 लाख पुरूष वोटरों की तुलना में महिला वोटरों की संख्या एक करोड़ 58 लाख है।

इन आंकड़ों पर फौरी तौर पर निगाह देने की जरूरत विगत के मतदान में में युवा और महिला वोटरों की भागीदारी का रूझान है। दोनों वर्गों के मतदाताओं ने जिसे चाहा, जीत उसे ही हासिल हुई। विगत के हिमाचल चुनावों में महिलाओं ने कांग्रेस को सबसे ज्यादा समर्थन दिया, जिसकी वजह से कांग्रेस को भाजपा के मुकाबले कुल 36 हजार से कुछ ज्यादा मत मिले और वह जीत हासिल करने में कामयाब रही। कुछ ऐसी ही स्थिति कर्नाटक में भी रही। वहां के स्थानीय मुद्दों खासकर पांच गारंटी और महंगाई ने महिलाओं और युवाओं को ज्यादा लुभाया। इस लिहाज से देखें तो राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के चुनावों में भी महिला और युवा वोटर बड़ी भूमिका निभाने जा रहे हैं। शायद यही वजह है कि तीनों ही राज्यों के दोनों प्रमुख प्रतिद्वंद्वी दलों की कोशिश महिलाओं और युवाओं को रिझाने की है। महिला सम्मान निधि और युवाओं को बेरोजगारी भत्ता आदि देने के जो दनादन वायदे किये जाते रहे, उसकी वजह यही रही।

साल 1989 के चुनावों के पहले तत्कालीन राजीव सरकार ने युवाओं के मतदान के लिए उम्र सीमा को 21 से घटाकर 18 साल कर दिया था। राजीव को उम्मीद थी कि उन्हें युवाओं का साथ मिलेगा। साल 2014 के ठीक पहले सचिन तेंदुलकर को भारत रत्न देने के पीछे तत्कालीन कांग्रेस सरकार की सोच सचिन को सम्मानित करने के साथ ही इसके जरिए युवाओं में पैठ बनाने की थी। यह बात और है कि दोनों ही बार कांग्रेस का दांव नाकाम रहा। चुनावी पंडित मानते हैं कि राजीव की हार में नए बने करोड़ों वोटरों ने बड़ी भूमिका निभाई थी।

हाल के वर्षों में महिलाओं ने जिस तरह खुलकर अपनी पसंद के हिसाब से मतदान करना और उम्मीदवार को चुनना शुरू किया है, वह अब छुपा नहीं है। 2020 के बिहार विधानसभा चुनावों में विपरीत हालात के बाद नीतीश को जीत मिली, उसकी बड़ी वजह महिलाओं का समर्थन रहा। इसी तरह 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में योगी सरकार को महिलाओं ने खूब समर्थन दिया। पश्चिम बंगाल में ममता के साथ महिला वोटर पूरे दम के साथ खड़ी रहीं। इन चुनावों के नतीजे सामने हैं।

इस लिहाज से देखें तो राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के चुनावी नतीजों पर बड़ा दारोमदार महिलाओं पर ही होगा। छत्तीसगढ़ में तो महिलाएं पुरूषों के मुकाबले ज्यादा ही हैं, इसलिए वहां तो यह साफ लग रहा है कि जिधर महिलाएं गईं, उसी के नेता के सिर ताज होगा। उनके वोटों में अगर युवाओं का साथ मिल गया तो उस दल के लिए वह सोने पर सुहागा ही होगा।

अभी इन तीनों राज्यों में चुनावी तापमान धीरे-धीरे बढ़ रहा है। उम्मीद की जा रही है कि तीनों राज्यों के मैदान में सियासी छक्का लगाने के लिए उतरने वाले दल अपने-अपने हिसाब से महिलाओं और युवाओं को लुभाने की भरपूर कोशिश करेंगे, ताकि बाजी उनके ही हाथ लगे।

तेलंगाना में राहुल ने चला पूरे साउथ के लिए डोसा पॉलिटिक्स दांव

आशीष तिवारी

राहुल गांधी ने तेलंगाना में शुक्रवार को ताबड़तोड़ तीन रैलियां, नुक्कड़ सभाएं और जनसभाओं के माध्यम से न सिर्फ तेलंगाना राज्य में सियासी पिच मजबूत की। बल्कि दक्षिण भारत में भी अपने राजनैतिक इशारे और सियासी आगाज के अंदाज भी स्पष्ट कर दिए। तेलंगाना में डोसा बनाकर राहुल गांधी ने दक्षिण भारत में डोसा पॉलिटिक्स के सहारे आने वाले लोकसभा चुनाव का भी एक तरीके से सियासी संदेश दे दिया है। जबकि तेलंगाना में %हल्दी और शक्कर% के साथ जातिगत जनगणना से आने वाले विधानसभा चुनाव में राजनीतिक पकड़ को मजबूत करने का बड़ा सियासी दांव भी चला है। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि राहुल गांधी ने जिस तरीके से शुक्रवार को तेलंगाना में जनता से मुखातिब होकर अपनी बात कही है, वह सिर्फ विधानसभा ही नहीं बल्कि लोकसभा के चुनावों में भी जारी रहने वाली है। राहुल गांधी ने शुक्रवार को तेलंगाना में अपनी भारत जोड़ो यात्रा के बढ़े हुए स्वरूप के दौरान डोसा बनाने वाले से मुलाकात कर वहां की सियासी नब्ज को पकड़ा। इस मुलाकात के दौरान राहुल गांधी ने डोसा बनाकर न अपनी रैली में सिर्फ इस बात का जिक्र किया बल्कि लोगों से कहा कि यहां आकर आप लोगों ने मुझे डोसा बनाना भी सिखा दिया है। इस दौरान राहुल गांधी ने अपनी बहन प्रियंका गांधी का जिक्र कर और उनके तेलंगाना आने की बात के साथ स्थानीय लोगों से सीधे तौर पर भावनात्मक रूप से जुड़ने का प्रयास किया। सियासी जानकारों का कहना है कि राहुल गांधी ने अपने भाषण में जिस तरीके से स्थानीय खानपान का जिक्र किया। उसका संबंध सिर्फ तेलंगाना तक ही सीमित नहीं रहने वाला है। राजनीतिक विश्लेषक हेमेंद्र शर्मा कहते हैं कि अगर शुक्रवार की रैली, नुक्कड़ सभाएं और जनसभाओं को आप बारीकी से अध्ययन करें, तो आपको राहुल गांधी की रैलियों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जनता से सीधे जुड़ने वाला पुट नजर आएगा। शर्मा कहते हैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी जनता से उनके स्थानीय रहन-सहन और खानपान से सीधे जुड़कर अपना एक भावनात्मक कनेक्ट बनाते हैं। वह कहते हैं कि बीते कुछ दिनों में राहुल गांधी की रैलियों, जनसभाओं और नुक्कड़ सभाओं के दौरान उनकी बॉडी लैंग्वेज के साथ-साथ जनता से मुखातिब होने की जो शैली है, वह न सिर्फ दो तरफा संवाद की तरह है बल्कि यह स्थानीयता और भावनात्मकता का पूरा निचोड़ रखती है। राजनीति विश्लेषक कहते हैं कि राहुल गांधी ने डोसा बनाकर और डोसे का भरी जनसभा में जिक्र करके न सिर्फ तेलंगाना बल्कि दक्षिण भारत के अन्य सभी राज्यों को भी इससे सीधे तौर पर जोड़ने का प्रयास किया है। राहुल गांधी ने शुक्रवार को सिर्फ डोसा ही नहीं, बल्कि राज्य के किसानों की बड़ी समस्या हल्दी और शुगर फैक्ट्री का भी जिक्र कर कांग्रेस से सीधे जुड़ने की अपील की। उन्होंने इस दौरान किसानों से कहा कि वह हल्दी के उत्पादक किसानों को 12 से 15 हजार रुपये प्रति कुंतल की लागत के साथ उनकी फसल की कीमत दिलवाएंगे। बल्कि अन्य फसलों पर तय एमएसपी से 500 रुपये प्रति कुंतल की ज्यादा रकम भी दिलवाएंगे। राहुल गांधी ने अपनी इस शुक्रवार को तेलंगाना रैली में किसानों को फोकस करते हुए तेलंगाना में बंद पड़ी शुगर फैक्ट्रीज को चालू करवाने की भी बात कही। सियासी जानकारों का कहना है कि तेलंगाना में हल्दी उत्पादक किसानों और शुगर मिल के बंद होने से यहां के लोगों को बड़ा नुकसान हो रहा है। राजनीतिक विश्लेषक ओम प्रकाश मिश्रा कहते हैं कि अगर कांग्रेस पार्टी यहां के किसानों को बंद पड़ी शुगर मिलों के चालू होने के साथ-साथ उनकी फसलों को अच्छी कीमत दिलवाने का भरोसा जीत लेते हैं, तो इस बार के चुनाव में कुछ बदली हुई तस्वीर दिख सकती है। राजनीतिक विश्लेषक डी. किरण कुमार कहते हैं कि राहुल गांधी ने अपनी छह गारंटियों के साथ-साथ तेलंगाना में एक बार फिर से जातीय जनगणना का बड़ा सियासी दांव चला है। अपनी जनसभा और नुक्कड़ सभाओं के दौरान राहुल गांधी ने जिस तरीके से जातिगत जनगणना को लेकर तेलंगाना में सियासी हुंकार भरी वह सिर्फ विधानसभा ही नहीं बल्कि आने वाले लोकसभा के चुनावों में कांग्रेस के एजेंडे को भी दिखलाती है। किरण कहते हैं कि तेलंगाना से लेकर दक्षिण भारत के सभी राज्यों में जातिगत जनगणना की बात से एक बड़ा करंट तो पैदा ही हो रहा है। अगर राहुल गांधी या कांग्रेस पार्टी जातिगत जनगणना के मामले में भी सियासी तौर पर दक्षिण भारत में मजबूती से अपने पक्ष में माहौल बना लेती है, तो यह सियासी नजरिए से कांग्रेस के लिए बड़ा मुनाफे का सौदा हो सकता है।

मोदी के दौर में राज्यों में असली क्षत्रप कौन

आदर्श शर्मा

मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में भाजपा की पहली सूची सबसे पहले आ गई, वहीं कांग्रेस पिछड़ती दिखी। बाद में कांग्रेस ने मध्यप्रदेश में बढ़त बना ली और एक सीट छोड़कर सारे उम्मीदवार घोषित कर दिए। अब नजर राजस्थान पर है। सभी चुनावी राज्यों में मुफ्त की योजनाओं का मुद्दा हावी है, वहीं चेहरे भी चर्चा में हैं। भाजपा बड़े चेहरों को विधानसभा चुनाव लड़वा रही है। वह अब गैलेक्सी ऑफ लीडरशिप चाहती है, लेकिन यह अचानक हुआ है। पहले भाजपा इस बारे में बात नहीं करती थी। वहीं, राज्यों में नेतृत्व को लेकर कांग्रेस में तस्वीर साफ है। भाजपा को सबसे ज्यादा उम्मीद राजस्थान से ही नजर आ रही है। 2013 में जब वहां विधानसभा चुनाव हुए थे, तब देश में अन्ना हजारे के आंदोलन का असर था। तब राजस्थान में कांग्रेस चुनाव हार गई, वहीं मध्यप्रदेश में भाजपा जीत गई। हो सकता है कि इस बार दोनों दलों के बीच कड़ा मुकाबला हो। 2012-13 में जो कमजोर हालत यूपीए की थी, केंद्र में वैसी सत्ता विरोधी लहर अभी 2023 में भाजपा को लेकर नहीं है। इसलिए भाजपा की राह कुछ आसान नजर आती है, बाकी नतीजों से तस्वीर साफ होगी। 2014 में जब भाजपा जीती तो महाराष्ट्र, हरियाणा, उत्तर प्रदेश में भाजपा की तरफ से कोई चेहरा नहीं था। सभी दलों की अपनी-अपनी रणनीति होती है। यह कुल्हड़ और कंबल जैसा मामला है। जहां कंबल की जरूरत है, वहां कूलर काम नहीं आ सकता। हालात इस तरह बदले हैं कि अब राज्य की राजनीति में भी केंद्र की योजनाएं हावी हैं। जमीनी स्तर पर यह बदलाव तो आया है। रोटी, कपड़ा, मकान के बहाने केंद्र सरकार की राज्यों के मुद्दों में एंट्री हुई है। युवाओं का मतदान प्रतिशत इस बार बढ़ेगा। कोरोना के दौर के बाद आम मुद्दे लोगों के जनजीवन से जुड़ गए हैं। युवाओं की महत्वाकांक्षाएं और उनसे जुड़े मुद्दे अब प्रभावी हैं। विकास का मुद्दा प्रासंगिक बना हुआ है। राजनीतिक दल अपनी खामियों को जल्दी से दूर करते नजर आते हैं। कांग्रेस दो बार से केंद्र की सत्ता से गायब है। चुनाव को कांग्रेस जितना आसान बता रही है, उतना है नहीं। मध्यप्रदेश के चुनाव में भाजपा को वोट तो ज्यादा मिले, लेकिन सीटें कम मिलीं। छत्तीसगढ़ में ही भाजपा पूरी तरह हारी थी। भाजपा इस बार जो प्रयोग कर रही है, उसे दीर्घकालिक राजनीतिक सुधारों की दृष्टि से देखना चाहिए। इस देश में एक नेतृत्व पर निर्भरता के कारण ही संतोष या असंतोष पैदा होता है। मोदी जी खुद ही चाहते हैं कि एक नेता पर निर्भरता न रहे। भाजपा गैलेक्सी ऑफ लीडर्स चाहती है। केंद्र का नेता राज्य में भी जा सकता है। पहले जो भेद था, वो इसे खत्म करना चाहते हैं। कांग्रेस ने पहले पितृ पक्ष का इंतजार जरूरी समझा था। यहां कूलर और कंबल की बात हुई, राजस्थान में कूलर के बजाय कमल का इस्तेमाल हो रहा है। इस बार मोदी मैजिक चलता नहीं दिख रहा। हर वोट मोदी को जाएगा, यह बात नहीं कही जा रही। भाजपा की सियासत इस विधानसभा चुनाव में ऐसी हो गई है कि जो होना हो, वह हो जाए, हमें तो 2024 पर फोकस करना है।

आलाकमान पर हावी होती कमलनाथ-दिग्विजय की जोड़ी?

संतोष पाठक

अखिलेश यादव के प्रकरण ने एक बार फिर से यह साबित कर दिया है की मध्य प्रदेश के दो पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ और दिग्विजय सिंह की जोड़ी कांग्रेस आलाकमान पर भारी पड़ती हुई नजर आ रही है। आगे बढ़ने से पहले आपको याद दिलाते हैं कि कमलनाथ और दिग्विजय सिंह की इसी जोड़ी के कारण राहुल गांधी के सबसे करीबी बल्कि बिना किसी अपॉइंटमेंट के राहुल गांधी से सीधे मिलने वाले ज्योतिरादित्य सिंधिया को भी कांग्रेस छोड़कर अपने समर्थक विधायकों के साथ भाजपा में जाने के लिए मजबूर होना पड़ा था। उस समय भी यही कहा गया था कि दिल्ली में राहुल गांधी जो कहते हैं या जो वादा करते हैं मध्य प्रदेश में उस समय के मुख्यमंत्री कमलनाथ और उनके जोड़ीदार दिग्विजय सिंह उसे अपने हिसाब से तोड़ मरोड़ कर अंजाम देते हैं।

अखिलेश यादव प्रकरण में भी कुछ-कुछ ऐसा ही होता नजर आ रहा है। 2024 के लोकसभा चुनाव में किसी भी कीमत पर नरेंद्र मोदी को हराकर प्रधानमंत्री पद से हटाने के लिए बेचैन कांग्रेस ने या यूं कहें कि कांग्रेस आलाकमान ने अपने तमाम मतभेदों को किनारे रखकर कई विपक्षी दलों के साथ बैठना स्वीकार किया। हालांकि कांग्रेस ने भाजपा को हराने के लिए विपक्षी एकता की शुरुआत इंडिया गठबंधन बनने से काफी पहले महाराष्ट्र में उस समय ही शुरू कर दी थी जब गांधी परिवार ने शरद पवार के कहने पर उस शिवसेना के सुप्रीमो उद्धव ठाकरे को मुख्यमंत्री बनाना स्वीकार कर लिया था जो शिवसेना कांग्रेस से ज्यादा सीधे कांग्रेस आलाकमान यानी गांधी परिवार पर हमला बोला करती थी। बाद में जब कांग्रेस के कहने पर नीतीश कुमार ने विपक्षी दलों को एकजुट करना शुरू किया तो अपने राज्य के नेताओं की मांगों, यहां तक कि लोकसभा में अपने नेता अधीर रंजन चौधरी की

मांग को नजरअंदाज कर कांग्रेस आलाकमान ने बड़ा दिल दिखाते हुए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के साथ बैठना भी मंजूर कर लिया जिन पर पश्चिम बंगाल के कांग्रेस के अपने नेता यह आरोप लगाते रहते हैं कि उनकी सरकार बंगाल में कांग्रेस कार्यकर्ताओं की हत्या तक करवा रही है। गांधी परिवार ने आम आदमी पार्टी के उन मुखिया अरविंद केजरीवाल तक के साथ बैठना स्वीकार कर लिया जो केजरीवाल साहब अन्ना आंदोलन के समय गांधी परिवार को पानी पी-पीकर कोसा करते थे और जिनकी पार्टी ने पंजाब में न केवल कांग्रेस का सुपड़ा साफ कर उसे सत्ता से बाहर कर दिया, दिल्ली में कांग्रेस के अस्तित्व पर ही संकट खड़ा कर दिया बल्कि गुजरात में चुनाव लड़कर कांग्रेस को सबसे बड़ी हार के कगार पर पहुंचा दिया। केजरीवाल अब यहीं तक नहीं रुक रहे हैं बल्कि आने वाले पांच राज्यों के विधान सभा चुनाव में भी पूरे दम-खम के साथ चुनाव लड़ रहे हैं।

विपक्षी गठबंधन में शामिल कई ऐसे दल हैं जिनके साथ कांग्रेस के रिश्ते कभी खट्टे कभी मीठे रहे हैं लेकिन भाजपा को हराने के नाम पर कांग्रेस ने इन सब दलों के साथ बैठना और सीटों को लेकर समझौता तक करना स्वीकार कर लिया है। लेकिन कांग्रेस के दो पूर्व मुख्यमंत्रियों की जोड़ी ने समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव को नाराज कर विपक्षी गठबंधन के भविष्य पर एक बड़ा प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिया है। अखिलेश यादव दावा कर रहे हैं कि मध्य प्रदेश प्रदेश विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने सपा को 6 सीटें देने का वादा किया था लेकिन बाद में मुकर गई। इस बारे में जब कमलनाथ से सवाल पूछा गया तो वह बहुत ही हल्के अंदाज में यह कहते नजर आए की अरे भई, छोड़ो अखिलेश-वखिलेश। अब आप खुद सोचिए की एक ऐसी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जो जिनकी पार्टी सबसे ज्यादा ताकतवर उत्तर प्रदेश में है जहां से लोकसभा में 80 सांसद चुनकर आते हैं और जिनके साथ कांग्रेस एक बार गठबंधन करके चुनाव लड़ चुकी है। उस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के बारे में इस तरह की भाषा का इस्तेमाल करने का मतलब सीधा एक ही होता है कि आप अपने ही पार्टी के राष्ट्रीय आलाकमान की मेहनत पर पानी फेरते हुए नजर आ रहे हैं क्योंकि यहां इस बात को ध्यान रखना जरूरी है कि शुरुआत में अखिलेश यादव इस गठबंधन में शामिल नहीं होना चाहते थे लेकिन कांग्रेस के कहने पर नीतीश कुमार ने बार-बार अखिलेश यादव से संपर्क साधा और बहुत मुश्किल से अखिलेश यादव इस गठबंधन में शामिल होने के लिए तैयार हुए थे और ऐसे में मध्य प्रदेश में 6 या हो सकता है तीन या चार सीट देकर ही सपा को मनाया जा सकता था लेकिन जिस तरह का व्यवहार किया गया और उसके बाद जिस तरह की टिप्पणी की गई उसने दोनों दलों के बीच एक खटास पैदा कर दी है और अब सपा ने मध्य प्रदेश में 22 विधानसभा सीटों पर अपने उम्मीदवार उम्मीदवार खड़े करके अपना तेवर दिखा दिया है और इसके साथ-साथ अखिलेश यादव ने यह भी कह दिया है कि कांग्रेस जिस तरह का व्यवहार सपा के साथ मध्य प्रदेश में कर रही है उसी तरह का व्यवहार सपा उत्तर प्रदेश में कांग्रेस के साथ करेगी और जब लोकसभा चुनाव के समय उत्तर प्रदेश में सीटों के बंटवारे की बात होगी उस समय समाजवादी पार्टी सोचेगी कि उसे क्या करना है मतलब अखिलेश ने सीधे-सीधे कांग्रेस को धमकी दे दी है।

राजस्थान में भाजपा और कांग्रेस, दोनों पार्टियां बदलाव के बड़े दौर से गुजर रही हैं

रमेश सर्राफ धमोरा

राजस्थान में पिछले तीस वर्षों से हर पांच साल बाद सत्ता बदलने का रिवाज चला आ रहा है। अगले महीने होने वाले राजस्थान विधानसभा के चुनाव में जहां भाजपा हर बार राज बदलने के रिवाज को बनाए रखने का प्रयास कर रही है। वहीं सत्तारुढ़ कांग्रेस पार्टी फिर से सरकार बनाकर रिवाज बदलना चाहती है। चुनाव में दोनों ही पार्टियों पूरे दमखम के साथ उतरने जा रही हैं। तीसरे मोर्चे के रूप में बसपा, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी, आम आदमी पार्टी, ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिममीन, भारतीय आदिवासी पाटी, वामपंथी पार्टिया जैसे छोटे राजनीतिक दल भी प्रदेश की राजनीति में तीसरी शक्ति बनकर सत्ता की चाबी अपने हाथ में लेना चाहते हैं।

राजस्थान में पिछले 30 वर्षों से मुख्यमंत्री अशोक गहलोत कांग्रेस की मुख्य धुरी बने हुए हैं। तीन बार मुख्यमंत्री रह चुके अशोक गहलोत के इर्द-गिर्द ही कांग्रेस की राजनीति घूमती है। कांग्रेस पार्टी में जैसा गहलोत चाहते हैं वैसा ही होता है। 1998 में कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष रहते अशोक गहलोत जब पहली बार मुख्यमंत्री बने थे। तब राजस्थान में कांग्रेस की राजनीति में कई दिग्गज नेता सक्रिय थे। जिनमें मुख्य परसराम मदेरणा, शीशराम ओला, नवल किशोर शर्मा, कुंवर नटवर सिंह, शिवचरण माथुर, जगन्नाथ पहाड़िया, हीरालाल देवपुरा, बलराम जाखड़, चौधरी नारायण सिंह, रामनारायण चौधरी, कमला बेनीवाल, खेत सिंह राठौड़, प्रद्युम्न सिंह, गुलाब सिंह शक्तावत जैसे दिग्गज नेता प्रमुख थे। उस वक्त गहलोत ने इन सभी को मात देकर मुख्यमंत्री का पद हासिल किया था।

बाद में गहलोत ने एक-एक कर सभी बड़े नेताओं को सक्रिय राजनीति से किनारे लगा दिया। आज स्थिति यह है कि कांग्रेस की राजनीति में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के प्रतिद्वंद्वी बनकर उभरे सचिन पायलट भी साइड लाईन हो चुके हैं। गांधी परिवार के वफादार भंवर जितेंद्र सिंह का व्यक्तित्व इतना बड़ा नहीं है कि उनके नाम पर मुख्यमंत्री पद के लिए आम सहमति बन सके। 2008 के विधानसभा चुनाव में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष रहते सीपी जोशी मुख्यमंत्री पद के सबसे मजबूत दावेदार बने थे। मगर उनकी एक वोट से हुई हार ने उनका राजनीतिक कैरियर ही चौपट कर दिया था। गत वर्ष कांग्रेस आलाकमान ने गहलोत के स्थान पर सचिन पायलट को मुख्यमंत्री बनाने का प्रयास किया था। जिसके लिए मल्लिकार्जुन खड़गे व अजय माकन पर्यवेक्षक बन कर जयपुर आए थे। मगर विधायकों द्वारा विधायक दल की बैठक का बहिष्कार कर देने से सचिन पायलट दूसरी बार मुख्यमंत्री बनते बनते रह गए थे।

मुख्यमंत्री गहलोत पिछले पांच साल से लगातार अपनी सभाओं में कहते आ रहे हैं कि वह चौथी बार भी मुख्यमंत्री बनेंगे। मगर लगता है कि अब कांग्रेस में भी बड़ा उलट-पुलट होने वाला है। विधानसभा चुनाव के बाद यदि कांग्रेस पार्टी फिर से सरकार बनती है तो गहलोत के स्थान पर किसी नए नेता को ही कमान मिलने की अधिक संभावना नजर आने लगी है। पिछले पांच वर्षों में जिस तरह से गहलोत ने सरकार चलाई है। उससे कांग्रेस नेता राहुल गांधी संतुष्ट नहीं बताये जा रहे

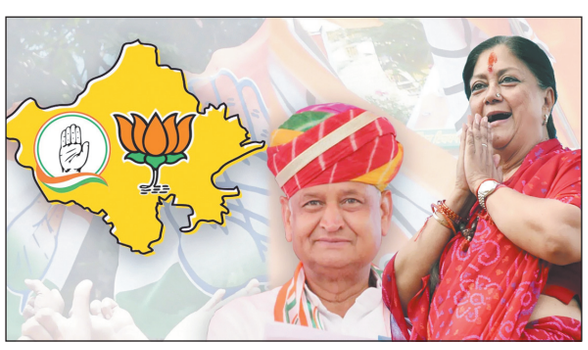

हैं।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा हायर की गई एक निजी प्रचार एजेंसी डिजाइन बॉक्स को लेकर भी पार्टी में बड़ा विवाद हुआ था। डिजाइन बॉक्स को गहलोत ने अपनी छवि चमकाने के लिए हायर किया था। इस एजेंसी की कार्यप्रणाली को लेकर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा की डिजाइन बॉक्स के फाउंडर नरेश अरोड़ा से तकरार हो चुकी है। डिजाइन बॉक्स की नियुक्ति कांग्रेस आलाकमान को पसंद नहीं आ रही है। कांग्रेस आलाकमान कर्नाटक चुनावों में कांग्रेस के रणनीतिकार रहे सुनील कानुगोलू को राजस्थान में कांग्रेस की चुनावी रणनीति बनाने के लिए नियुक्त करना चाहता था। मगर मुख्यमंत्री गहलोत के विरोध के चलते उन्हें मध्य प्रदेश भेजना पड़ा था।

कांग्रेस आलाकमान ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को इस बार कांग्रेस कार्य समिति का सदस्य भी नहीं बनाया है। जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी सचिन पायलट व कैबिनेट मंत्री महेंद्रजीत मालवीय को कार्य समिति में लिया गया है। आदिवासी नेता महेंद्रजीत मालवीय को कार्य समिति में लाकर राहुल गांधी प्रादेशिक नेतृत्व में बदलाव के संकेत दे रहे हैं। गहलोत के स्थान पर राजस्थान में सचिन पायलट, भंवर जितेंद्र सिंह, महेंद्रजीत मालवीय, सीपी जोशी जैसे नेताओं को बड़ी भूमिका मिल सकती है।

राजस्थान में भाजपा भी पूरे बदलाव के दौर से ही गुजर रही है। 2002 से लेकर अब तक पार्टी की एक छत्र नेता रही वसुंधरा राजे के स्थान पर पार्टी में कई नेताओं को आगे बढ़ाया जा रहा है। भाजपा में नया नेतृत्व लाने के लिए ही पार्टी ने इस बार किसी भी नेता के चेहरे पर चुनाव नहीं लड़ने का फैसला किया है। भाजपा सामूहिक नेतृत्व व कमल के निशान पर चुनाव मैदान में उतरने जा रही है। अभी प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़, उपनेता प्रतिपक्ष सतीश पूनिया, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, कैलाश चौधरी, अर्जुन मेघवाल, सांसद दीया कुमारी, किरोड़ीलाल मीणा, राज्यवर्धन राठौड़ अग्रिम पंक्ति के नेताओं में शुमार हैं। प्रदेश में यदि भाजपा की सरकार बनती है तो इनमें से ही कोई मुख्यमंत्री बन सकता है।

जिस तरह से वसुंधरा राजे समर्थक नेताओं के टिकट काटे जा रहे हैं उससे लगता है कि आने वाला समय वसुंधरा राजे के लिए अच्छा नहीं रहने वाला है। 2013 से 18 के कार्यकाल में वसुंधरा राजे के इर्द-गिर्द ऐसे चापलूस नेताओं की का जमावड़ा हो गया था जो सिर्फ उनकी जी हजूरी में ही लगे रहते थे। उस कार्यकाल में वसुंधरा राजे ने एक मुख्यमंत्री की बजाय महारानी के रूप में शासन चलाया था। जिसके चलते ही 2018 के विधानसभा चुनाव में भाजपा 163 सीटों से घटकर 73 सीटों पर सिमट गई थी।

प्रदेश में पार्टी की करारी हार से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वसुंधरा राज्य से नाराज हो गए। उसके बाद से ही उन्हें प्रदेश की राजनीति में अलग थलग करना शुरू हो गया। 2019 के लोकसभा चुनाव में भी वसुंधरा को बड़ी भूमिका नहीं दी गई थी। उसके उपरांत भी भाजपा ने प्रदेश की सभी 25 सीटों पर जीत दर्ज की थी। इससे भाजपा के राष्ट्रीय नेताओं को यह बात समझ में आ गई कि बिना वसुंधरा के भी राजस्थान में भाजपा मजबूती से पैर जमा सकती है।

इस बार के विधानसभा चुनाव में वसुंधरा राजे को अभी तक कोई बड़ी भूमिका नहीं दी गई है। उनके कट्टर समर्थकों के टिकट भी काटे जा रहे हैं। वसुंधरा राजे गुट के कालीचरण सर्राफ, अशोक परनामी, यूनुस खान, प्रताप सिंह सिंघवी, भवानी सिंह राजावत, देवी सिंह भाटी, रोहिताश शर्मा, कालूलाल गुर्जर, नरपतसिंह राजवी, राजपाल सिंह शेखावत, खेमाराम मेघवाल, अशोक लाहोटी जैसे नेताओं के स्थान पर नए लोगों को टिकट देकर पार्टी वसुंधरा राजे का रहा सहा प्रभाव भी खत्म करने का प्रयास कर रही है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि राजस्थान में इस बार बड़ी संख्या में नये नेता चुन कर आयेंगे। जिससे आने वाले समय में प्रदेश की राजनीति में बड़ा बदला बदलाव देखने को मिलेगा।

शक्ति तीर्थ: महाराष्ट्र में सात पर्वतों से घिरा देवी मंदिर इसलिए नाम पड़ा सप्तश्रृंगी

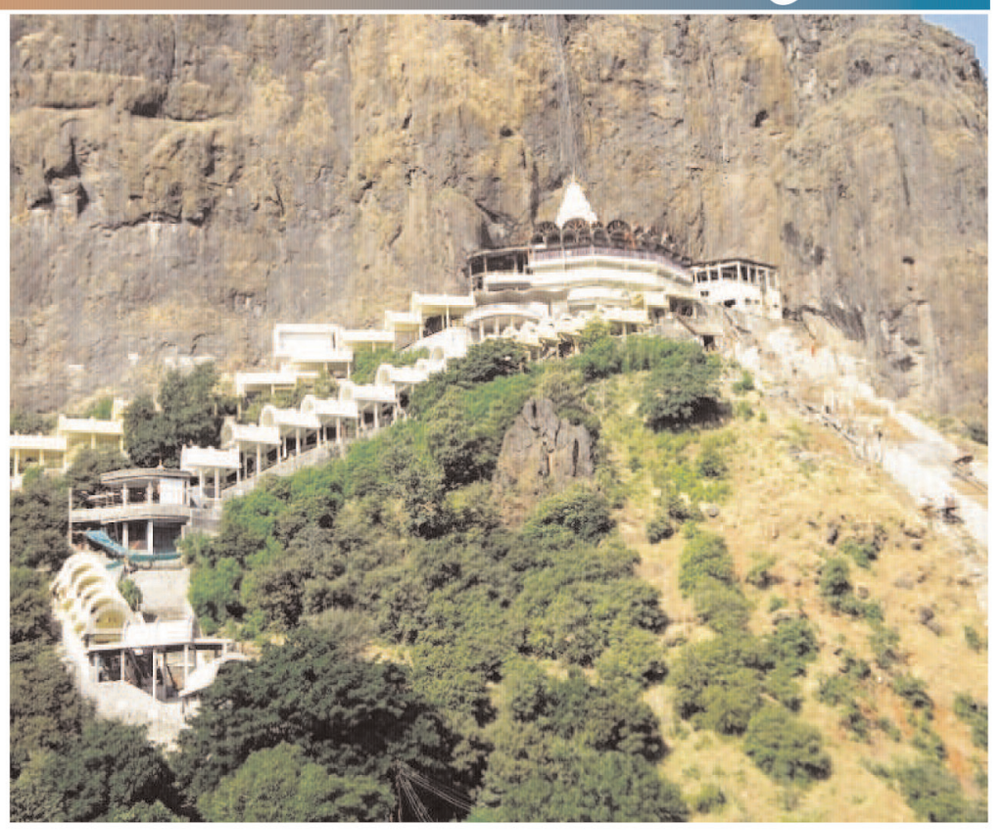

मान्यता: जहां महिषासुर का वध हुआ वहां बना सप्तश्रृंगी तीर्थ, कलकत्ता की महारानी को सपने में दिया था मंदिर बनवाने का आदेश

महाराष्ट्र में नासिक के पास वणी गांव में देवी सप्तश्रृंगी का मंदिर है। ये मंदिर खास इसलिए है क्योंकि माना जाता है देवी ने यहीं महिषासुर का वध किया था। गोदावरी नदी के किनारे बने इस मंदिर में देवी की पूजा तीन महाशक्तियों यानी सरस्वती, काली और महालक्ष्मी के रूप में की जाती है। वहीं, कलकत्ता का काली घाट मंदिर इसलिए प्रसिद्ध है क्योंकि ग्रंथों के मुताबिक वहां देवी सती के दाएं पैर की 4 अंगुलियां गिरी थी। गंगा नदी के किनारे बने दक्षिणेश्वर काली मंदिर में देवी कालिका की विशेष पूजा की जाती है। यहीं रामकृष्ण परमहंस ने देवी की विशेष आराधना की थी। उनके द्वारा की गई देवी पूजा से जुड़े कई चमत्कार आज भी सुनाए जाते हैं। ये मंदिर शिव-शक्ति का प्रतिक है। यहां मुख्य मंदिर के चारो ओर शिवजी के 12 मंदिर बने हुए हैं।

सप्तश्रृंगी माता: सात पर्वतों की देवी

महाराष्ट्र के नासिक के वणी गांव में सप्तश्रृंगी देवी मां का यह मंदिर गोदावरी नदी के किनारे बना हुआ है। इस पर्वत पर पानी के 108 कुंड हैं। जो इस स्थान की सुंदरता को कई गुना बढ़ाते देते हैं। यहां देवी को ब्रह्मस्वरूपिणी के नाम से भी जाना जाता है। कहा जाता है कि ब्रह्म देवता के कमंडल से निकली गिरिजा महानदी देवी सप्तश्रृंगी का ही रूप है।

मान्यता: यहीं हुआ था महिषासुर का वध

सप्तश्रृंगी की महाकाली, महालक्ष्मी व महासरस्वती के त्रिगुण स्वरूप में भी आराधना की जाती है। पौराणिक कथानुसार, महिषासुर राक्षस के विनाश के लिए सभी देवी-देवताओं ने मां की आराधना की थी तभी देवी मां सप्तश्रृंगी अवतार में प्रकट हुईं और इसी जगह पर उन्होंने महिषासुर का वध किया था।

काली घाट मंदिर: 51 शक्तिपीठों में से एक

जहां गिरी थी मां सती के पांव की अंगुली

कोलकाता के उत्तर में विवेकानंद पुल के पास दक्षिणेश्वर काली मंदिर है। ये विश्व में मां काली का सबसे प्रसिद्ध मंदिर है। भारत के सांस्कृतिक धार्मिक तीर्थ स्थलों में भी दक्षिणेश्वर काली मंदिर सबसे खास माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि जान बाजार की महारानी रासमणि ने सपना देखा था, जिसके मुताबिक मां काली ने उन्हें निर्देश दिया कि मंदिर का निर्माण किया जाए। इस भव्य मंदिर में मां की मूर्ति श्रद्धापूर्वक स्थापित की गई है।

दक्षिणेश्वर मां काली के मुख्य मंदिर के भीतरी भाग में चांदी से बनाए गए कमल के फूल की हजार पंखुड़ियां हैं। इस पर मां काली शस्त्रों सहित भगवान शिव के ऊपर खड़ी हुई हैं। काली मां का मंदिर नवरत्न की तरह बना है। इस विशाल मंदिर के चारों ओर भगवान शिव के बारह मंदिर स्थापित किए गए हैं।

देवी काली की प्रतिमा

दक्षिणेश्वर काली मंदिर में देवी काली के प्रचंड रूप की मूर्ति मौजूद है। इस मूर्ति में देवी काली भगवान शिव की छाती पर पैर रखी हुई हैं। उनके गले में नरमुण्डों की माला है। उनके हाथ में खड्ग तथा कुछ नरमुण्ड है। उनके कमर में भी कुछ नरमुण्ड बंधे हुए हैं। उनकी जीभ निकली हुई है। उनके जीभ से रक्त की कुछ बूंदें भी टपक रही हैं।

अद्भूत रामायण में बताया इस रूप के बारे में

अद्भूत रामायण ग्रंथ के मुताबिक एक और रावण था जिसे के हजार सिर थे। श्रीराम जब उस रावण से लड़ने गए तब उन्हें तीर लग गया और वो मुर्छित हो गए। ये देख सीताजी को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने काली रूप में उस रावण का वध कर उसके सिर काट दिए और उनके मुंडो की माला पहन ली। उनका गुस्सा शांत नहीं हो रहा था तो शिवजी उनके सामने लेट गए। इसके बाद सीता स्वरूप देवी कालिका शांत हुई। इसलिए गुस्से को शांत करने के लिए इस रूप की पूजा की जाती है।

मां सती की गिरी थी पांव की 4 अंगुली

शास्त्रों के अनुसार माना जाता है की इस जगह सती मां के दांए पांव के चार अंगुलियां गिरी थी इसी कारण इसे शक्ति के 51 शक्तिपीठो में माना जाता है ।

मां की प्रंचड मूरत

इस मंदिर में मां काली की प्रचंड मूरत के दर्शन होते है जो विशालकाय है। काली मां की लम्बी जीभ जो सोने की बनी हुई है बाहर निकली हुई है और हाथ और दांत भी सोने से ही बने हुए है।

इस अवतार में है मां काली

काली माता की मूर्ति का चेहरा श्याम रंग में है और आंखे और सिर सिन्दुरिया रंग में है। सिन्दुरिया रंग में ही मां काली के तिलक लगा हुआ है और हाथ में एक फांसा भी इसी रंग में रंगा हुआ है।

स्नान कराते समय बांध दी जाती है पुरोहित की आंखो में पट्टी

देवी को स्नान कराते समय धार्मिक मान्यताओं के कारण प्रधान पुरोहित की आंखों पर पट्टी बांध दी जाती है। मां कालिका के अलावा शीतला, षष्ठी और मंगलाचंडी के भी स्थान है।

साल 1809 में हुआ इस मंदिर का निर्माण

माना जाता है की यह मंदिर 1809 के करीब बनाया गया था । इस शक्तिपीठ में स्थित प्रतिमा की प्रतिष्ठा कामदेव ब्रह्मचारी (सन्यासपूर्व नाम जिया गंगोपाध्याय) ने की थी।

23 अक्टूबर को दुर्गा विसर्जन

दशहरा पर विदा नहीं होंगी माताराणी

दुर्गा विसर्जन 2023 ?

इस साल दुर्गा विसर्जन महानवमी के दिन करना उचित है। इस बार महानवमी 23 अक्टूबर दिन सोमवार को है। ऐसे में दुर्गा विसर्जन भी 23 अक्टूबर को करें। 24 को मंगलवार होने के कारण दुर्गा विसर्जन दशहरा पर नहीं करें।

शारदीय नवरात्रि में जो लोग अपने घर पर या पंडाल में मां दुर्गा की मूर्तियां रखते हैं, वे महानवमी के अगले दिन दशहरा पर दुर्गा विसर्जन करते हैं, जबकि घरों में दुर्गा विसर्जन महानवमी को होता है। मां दुर्गा को खुशी-खुशी विदा करते हैं ताकि वे फिर अगले साल पधारें और जीवन में खुशहाली आए। हालांकि इस साल दुर्गा विसर्जन दशहरा के दिन नहीं होगा। काशी के इस वर्ष दशहरा 24 अक्टूबर मंगलवार के दिन पड़ रहा है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, मंगलवार के दिन बेटी को विदा नहीं करते हैं, ऐसे में मां दुर्गा की विदाई मंगलवार को कैसे कर सकते हैं। आइए जानते हैं कि इस वर्ष दुर्गा विसर्जन कब है? दुर्गा विसर्जन का समय क्या है? मां दुर्गा किस वाहन पर सवार होकर विदा होंगी?

कब है दुर्गा विसर्जन 2023?

इस साल दुर्गा विसर्जन महानवमी के दिन करना उचित है। इस बार महानवमी 23 अक्टूबर दिन सोमवार को है। ऐसे में दुर्गा विसर्जन भी 23 अक्टूबर को करें। 24 को मंगलवार होने के कारण दुर्गा विसर्जन दशहरा पर नहीं करें। दुर्गा विसर्जन अक्षत और मंत्र से होगा, लेकिन ध्यान रखें कि घरों में कलश और पंडाल में दुर्गा मूर्ति को स्थान से हटाया नहीं जाएगा। दशहरा को कलश और दुर्गा मूर्ति अपने स्थान पर रहेंगे। 25 अक्टूबर बुधवार को सूर्योदय बाद से दुर्गा मूर्ति और कलश को स्थान से हटाएं। दुर्गा मूर्ति को नदी, तालाब, पोखर आदि में विसर्जित कर दें।

महानवमी की तिथि कब से कब है?

पंचांग के अनुसार, इस साल शारदीय नवरात्रि की नवमी तिथि की शुरूआत 22 अक्टूबर को शाम 07 बजकर 58 मिनट पर होगा और यह तिथि 23 अक्टूबर को शाम 05 बजकर 44 मिनट तक रहेगी। उदया तिथि की मान्यता के आधार पर महानवमी 23 अक्टूबर को है।

रवि और सर्वार्थ सिद्धि योग में दुर्गा विसर्जन

महानवमी के दिन रवि योग और सर्वार्थ सिद्धि योग बन रहे हैं। सर्वार्थ सिद्धि योग प्रातःकाल में 06:27 बजे से शुरू हो जाएगा और शाम 05:14 बजे तक रहेगा, जबकि रवि योग पूरे ही दिन है। ऐस में दुर्गा विसर्जन रवि और सर्वार्थ सिद्धि योग में होगा।

दुर्गा विसर्जन का समय 2023

महानवमी के दिन आप मां सिद्धिदात्री की पूजा और नवरात्रि का हवन करें। यदि 9 दिन का व्रत हैं तो पूजा के बाद पारण करें। फिर दोपहर में 2 बजे से लेकर दोपहर 03:30 बजे के मध्य कभी भी अक्षत और मंत्र से दुर्गा विजर्सन करें। फिर 25 अक्टूबर को घरों में स्थापित नवरात्रि कलश को स्थान से हटा दें। विधि विधान से मां दुर्गा को विदा करें। उनकी मूर्तियों का विसर्जन करें।

इस साल मुर्गे पर विदा होंगी मां दुर्गा

इस बार दशहरा मंगलवार को है, इसलिए मां दुर्गा के विदा होने का वाहन मुर्गा है। मां दुर्गा मुर्गे पर सवार होकर विदा होंगी। जब मां दुर्गा मुर्गा पर विदा होती हैं तो वह लोगों के कष्ट को बढ़ाने वाला हो सकता है। लोगों की परेशानियों में बढ़ोत्तरी हो सकती है।

नवरात्रि का सातवां दिन

मां कालरात्रि की आराधना से हर तरह का भय होगा नष्ट

मां कालरात्रि दुर्गा का सातवां स्वरूप है । यह स्वरूप काल का नाश करने वाला है, इसी वजह से इन्हें कालरात्रि कहा जाता है। इनका वर्ण अंधकार की भांति एकदम काला है। बाल बिखरे हुए हैं और इनकी माला बिजली की भांति देदीप्यमान है। इन्हें तमाम आसुरिक शक्तियों का विनाश करने वाला बताया गया है।

वाहन व स्वरूप

इनका वाहन गर्दभ अर्थात गधा है। माता कालरात्रि के तीन नेत्र और चार हाथ हैं। एक हाथ में खड्ग है तो दूसरे में लौहास्त्र, तीसरे हाथ में अभय-मुद्रा है और चौथे हाथ में वर-मुद्रा है।

महत्त्व

मां कालरात्रि की आराधना के समय भानु चक्र जाग्रत होता है। हर प्रकार का भय नष्ट होता है। जीवन की हर समस्या को पलभर में हल करने की शक्ति प्राप्त होती है।

॥स्तुति मंत्र॥

वामपादोल्लसल्लोह, लताकंटकभूषणा।
वर्धनमूर्धध्वजा कृष्णा, कालरात्रिभयंकरी।।

(अपने बाएं पैर में चमकने वाली लौह लता व कांटों की तरह आभूषण पहनने वाली, बड़े ध्वजा वाली और भयंकर लगने वाली कालरात्रि मां हमारी रक्षा करें)

भोग : उपवास के बाद माता को गुड़ का भोग लगाने से आने वाले शोक और आकस्मिक संकट से मुक्ति मिलती है

400 साल पुराना मां का वो मंदिर जिसके नाम पर बसा है मुंबई शहर

आज हम आपको मुंबई के एक बहुत अनोखे मंदिर के बारे में बताने जा रहे हैं। जिसमें शहरवासियों की गहरी आस्था है। कहा जाता है कि मुंबई का नाम भी इसी के नाम पर ही रखा गया है। चलिए जानते हैं मंदिर से जुड़े रोचक बातें।

मुंबई का ये प्रसिद्ध मुंबा देवी मंदिर है जो सबसे पहले साल 1737 में मेंजिस नाम की एक जगह पर बना था जहां आज विक्टोरिया टर्मिनस बिल्डिंग है, लेकिन फिर अंग्रेजो ने इसे मरीन लाइन्स-पूर्व क्षेत्र में बाजार के बीचों-बीच स्थापित कर दिया। उस वक्त मंदिर के तीनों ओर बड़े-बड़े तालाब थे जिन्हें पाट कर अब मैदान बना दिया गया है। आपको जानकर हैरानी होगी कि, इस मंदिर का इतिहास करीब 400 साल पुराना है।

कहते है ये मंदिर मछुआरों ने स्थापित किया था। उनका मानना था कि मुंबा देवी समुद्र से उनकी रक्षा करती हैं। मुंबा देवी मंदिर को बनाने के लिए पांडू सेठ ने जमीन दान की थी। इसलिए सालों उनका परिवार ही मंदिर की देख-रेख करता रहा था। फिर मुंबई हाई कोर्ट ने फैसला देते हुए कहा कि अब मंदिर की देख-रेख मुंबा देवी मंदिर न्यास करेगा। बता दें कि मां मुंबा हर दिन अलग-अलग वाहनों पर सावर होती है जिन्हें चांदी से बनाया गया है। इस मंदिर में प्रतिदिन 6 बार आरती होती है।

इन्होंने दान की थी जमीन

यह मंदिर अपने मूल रूप में उस जगह बना था, जहां आज विक्टोरिया टर्मिनस बिल्डिंग है। इसका निर्माण साल 1737 में हुआ था। बाद में अंग्रेजों के शासन के दौरान मंदिर को मैरीन लाइन्स-पूर्व क्षेत्र में बाजार के बीच में स्थापित किया। उस मंदिर के तीन ओर एक बड़ा तालाब था, जो अब पाट कर बराबर कर दिया गया है। इस मंदिर की भूमि पांडु सेठ ने दान की थी। शुरू में मंदिर की देखरेख भी उन्हीं का परिवार करता था।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

सेवा के प्रति पुलिसकर्मियों की अटूट प्रतिबद्धता : प्रधानमंत्री

नईदिल्ली। 'पुलिस स्मृति दिवस' के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को चुनौतिपूर्ण परिस्थितियों में भी पुलिसकर्मियों के समर्पण और नागरिकों का मार्गदर्शन करने के लिए उनकी प्रशंसा की। ड्यूटी के दौरान अपना जीवन बलिदान करने वाले पुलिसकर्मियों को श्रद्धांजलि देने के लिए 'पुलिस स्मृति दिवस' मनाया जाता है। वर्ष 1959 में आज के ही दिन 10 बहादुर पुलिसकर्मियों ने लद्दाख के हॉट स्प्रिंग में भारी हथियारों से लैस चीनी सुरक्षाबलों का मुकाबला करते हुए अपने प्राण न्योछावर कर दिए थे। मोदी ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, हम अपने पुलिसकर्मियों के अथक समर्पण की प्रशंसा करते हैं। वे सहयोग, चुनौतिपूर्ण परिस्थितियों में नागरिकों का मार्गदर्शन करने और सुरक्षा सुनिश्चित करने में मजबूत स्तंभ रहे हैं। उन्होंने कहा, ''सेवा के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता वीरता की सच्ची भावना का प्रतीक है। अपना जीवन बलिदान करने वाले उन तमाम पुलिसकर्मियों को भावभीनी श्रद्धांजलि।

मप्र में भाजपा उम्मीदवारों की एक और लिस्ट जारी

नईदिल्ली। भारतीय जनता पार्टी ने शनिवार को आगामी मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए 92 उम्मीदवारों की सूची जारी किया। सिंधिया परिवार से पूर्व राज्यसभा सांसद माया सिंह ग्वालियर पूर्व से चुनाव लड़ेंगी। शिवपुरी से ज्योतिरादित्य सिंधिया की बुआ यशोधरा राजे सिंधिया की जगह देवेंद्र कुमार जैन को टिकट दिया गया है। यशोधरा राजे चुनाव लड़ने से इनकार कर चुकी है। वहीं, इंदौर-3 सीट से बीजेपी के वरिष्ठ नेता कैलाश विजयवर्गीय के बेटे आकाश विजयवर्गीय का टिकट कट गया है। उनकी जगह राकेश गोलू शुक्ल को मैदान में उतारा गया है। आकाश विजयवर्गीय का टिकट कटना निश्चित लग रहा था, क्योंकि कैलाश विजयवर्गीय को पार्टी पहले ही चुनाव में उतार चुकी है। मध्य प्रदेश में 230 सदस्यीय विधानसभा के लिए चुनाव 17 नवंबर को होना है, जबकि वोटों की गिनती 3 दिसंबर को होगी।

भाजपा के साथ वाले मामले पर नीतीश का आया बयान

पटना। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने बयान से छिड़े सियासी चर्चे पर बड़ा बयान दिया है। शनिवार को मीडिया से बातचीत के दौरान सीएम ने साफ शब्दों में यह कहा कि भाजपा को लेकर मोतिहारी के कार्यक्रम में दिए उनके बयान का गलत मतलब निकाला गया है। उन्होंने एक कार्यक्रम के दौरान भाजपा नेताओं को उन दिनों की याद केवल दिलाई जब वो सरकार में साथ थे। सीएम बोले कि शुरू से कितना काम हुआ है हम वो याद दिलाते रहे हैं।भाजपा के साथ होने का वह बयान बिल्कुल नहीं था। वहीं बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव भी इस दौरान सीएम के पीछे खड़े थे। डिप्टी सीएम के कंधे पर हाथ रखकर मुख्यमंत्री ने उनके लिए भी बयान दिए। शनिवार को सीएम नीतीश कुमार ने मोतिहारी में दिए अपने बयान को गलत तरीके से पेश करने को लेकर नाराजगी जतायी। सीएम ने स्पष्ट किया कि भाजपा के साथ होने का बयान बिल्कुल नहीं था।

आप के स्टार प्रचारकों की सूची में सिसोदिया-संजय का नाम

नईदिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) ने नवंबर में होने वाले छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के लिए अपने स्टार प्रचारकों की सूची जारी की है। 37 सदस्यीय सूची में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, राघव चड्ढा और हरभजन सिंह सहित अन्य के नाम हैं। भ्रष्टाचार के आरोप में जेल में बंद मनीष सिसोदिया और संजय सिंह का भी नाम सूची में है। दिल्ली शराब नीति मामले में सीबीआई ने इस साल 26 फरवरी को सिसोदिया को गिरफ्तार किया था इस बीच, संजय सिंह को ईडी ने 4 अक्टूबर को राष्ट्रीय राजधानी में उनके आवास पर तलाशी के बाद दिल्ली उत्पाद शुल्क नीति मामले में गिरफ्तार किया था। इसको लेकर भाजपा ने आम आदमी पार्टी पर तंज कसा है। दिल्ली भाजपा ने एक्स पोस्ट पर लिखा कि गजब अरविंद केजरीवाल, शराब घोटाले के आरोपी तिहाड़ जेल में बंद कट्टर भ्रष्टाचारी मनीष सिसोदिया और संजय सिंह छत्तीसगढ़ व मिजोरम के लिये बने स्टार प्रचारक! मगर सवाल ये कि तिहाड़ जेल से प्रचार करेंगे कैसे।

चुनाव की मांग करते हुए भाजपा पर बरसे उमर अब्दुल्ला

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के विपक्षी दल लगातार केंद्रशासित प्रदेश में चुनाव कराने की मांग कर रहे हैं। इसको लेकर उनके निशाने पर भाजपा है। आज एक बार फिर से जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने केंद्र शासित प्रदेश में चुनाव कराने के मुद्दे पर भारतीय जनता पार्टी पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि लोग पीड़ित हैं क्योंकि उन्हें निर्वाचित सरकार के उनके अधिकार से वंचित किया जा रहा है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि जनता का गुस्सा बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि आज जब हमें लगभग हर रोज बताया जाता है कि स्थिति में काफी सुधार हुआ है। यह सामान्य के करीब है... मेरा मानना है कि, दुर्भाग्य से, जम्मू और कश्मीर वह जगह है जहां भारत में लोकतंत्र दफन होने जा रहा है। इस बीच जम्मू-कश्मीर में चुनाव के मुद्दे पर गुलाम नबी आज़ाद ने भी कहा कि हमने हर जगह यही मांग की है कि चुनाव यहां जरूरी हैं...विधानसभा के चुनाव होने चाहिए।

उग्रवाद में 65 फीसदी की कमी आई : अमित शाह

पूर्वोत्तर और जम्मू कश्मीर में आई शांति

नई दिल्ली। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा है कि किसी भी देश में सीमाओं पर और आंतरिक सुरक्षा बिना चौकन्नी पुलिस के बिना संभव नहीं है। अमित शाह ने नेशनल पुलिस मेमोरियल में दिए अपने संबोधन में ये बात कही। बता दें कि आज पुलिस स्मृति दिवस है और इस मौके पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह नई दिल्ली स्थित नेशनल पुलिस मेमोरियल पहुंचे।

अपने संबोधन में अमित शाह ने कहा कि मैंने देखा है कि पुलिस की ड्यूटी, देश में सेवारत अन्य लोगों की तुलना में सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण है। किसी भी मौसम, त्योहार में पुलिस के जवान हमेशा ड्यूटी पर तैनात रहते हैं ताकि कानून व्यवस्था को कायम रखा जा सके। चाहे वो आतंकवाद हो, अपराध हो या फिर बड़ी भीड़ को नियंत्रित करना, पुलिस आम लोगों की सुरक्षा के लिए हमेशा मौजूद रहती है। हमारे देश की पुलिस ने अपने आप को हमेशा साबित किया है।

अमित शाह ने कहा कि पूर्वोत्तर में आतंकवाद, वामपंथी उग्रवाद और अन्य उग्रवादी घटनाओं में 65

फीसदी की कमी आई है। देश में वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित राज्य, पूर्वोत्तर और जम्मू कश्मीर में शांति आ रही है। राष्ट्रीय पुलिस स्मारक पर शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए गृह मंत्री ने कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार ने आतंकवाद के खिलाफ जीरो टोलरेंस की नीति अपनाई है और सख्त कानून बनाए हैं। पुलिस के आधुनिकीकरण के लिए पुलिस प्रौद्योगिकी मिशन की स्थापना करके दुनिया में सबसे अच्छा आतंकवाद विरोधी बल बनाने की दिशा में भी काम किया गया है।

एनडीआरएफ की तारीफ करते हुए अमित शाह ने कहा कि चाहे कितनी भी बड़ी आपदा क्यों न हो, जब एनडीआरएफ के जवान वहां पहुंचते हैं तो लोगों को विश्वास हो जाता है कि अब कोई समस्या नहीं होगी। शाह ने पुलिस कल्याण के लिए चलाई जा रही योजनाओं का भी जिक्र किया। देश की आजादी के बाद से देश की सेवा करते हुए अब तक 36250 पुलिसकर्मियों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया है। अमित शाह ने पुलिस स्मृति दिवस के मौके पर इन सभी बलिदानी पुलिसकर्मियों को श्रद्धांजलि अर्पित की। बता दें कि हर साल 21 अक्तूबर को पूरे देश में पुलिस स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है। साल 1959 में अपनी सीमाओं की रक्षा करते हुए चीन के साथ हुई लड़ाई में जान गंवाने वाले 10 पुलिसकर्मियों के बलिदान की याद में पुलिस स्मृति दिवस का आयोजन किया जाता है। यह दिन पुलिस कर्मियों के समर्पण और कड़ी मेहनत को भी दर्शाता है।

कमलनाथ के बयान पर अखिलेश यादव ने किया पलटवार

रामगोपाल ने कहा- ये छुटवइये नेता हैं

लखनऊ। समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के बीच तकरार कम होने का नाम नहीं ले रहा है। मध्य प्रदेश में गठबंधन नहीं बन पाने की स्थिति में दोनों दल आमने-सामने है। मामला इतना बिगड़ गया है कि दोनों ओर से एक दूसरे पर आरोप लगाए जा रहे हैं। समाजवादी पार्टी ने गठबंधन नहीं हो पाने को लेकर कांग्रेस के रुख पर नाराजगी व्यक्त की तो कमलनाथ ने पलटवार में कहा कि छोड़िए ना अखिलेश वखिलेश को। मध्य प्रदेश में कांग्रेस की लहर है। अब इसी को लेकर अखिलेश यादव की ओर से पलटवार किया गया है। उन्होंने कहा कि ये तो सही कहा उन्होंने कि वखीलेश कौन है? अखिलेश वहीं हैं। अगर वे इस तरह की बातें कहते हैं तो समाजवादी पार्टी भी कह सकती है, लेकिन हम इसमें शामिल नहीं होना चाहते।

समाजवादी पार्टी प्रमुख ने आगे कहा कि कमल नाथ से हमारे रिश्ते बहुत अच्छे हैं. उसका नाम बहुत अच्छा है। जिनके नाम में कमल है वो सिर्फ वखिलेश को ही बुलाएंगे, अखिलेश को नहीं। अखिलेश यादव ने कहा कि हमें बुलाया ही क्यों था जब गठबंधन नहीं करना था... हमें बता देते कि प्रदेश स्तर पर नहीं लोकसभा चुनाव के समय गठबंधन होगा... मुझे कांग्रेस के लोग बोल दें कि सपा के साथ उन्हें गठबंधन नहीं करना है, हमसे साजिश और षड्यंत्र न करें। समाजवादी पार्टी पर कमलनाथ समेत कांग्रेस नेताओं के बयानों के बारे में पूछे जाने पर जब सपा सांसद रामगोपाल यादव ने कहा, हमें इनपर कुछ नहीं कहना है, ये छुटवइये नेता हैं।

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता शिवपाल यादव ने कांग्रेस पर जबरदस्त तरीके से निशाना साधा है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि कांग्रेस बिना समाजवादी पार्टी के उत्तर प्रदेश में भाजपा को किसी भी कीमत पर नहीं हरा सकती। शिवपाल ने कहा कि

यदि वे (कांग्रेस) भारत गठबंधन को मजबूत करना चाहते हैं और भाजपा को हराना चाहते हैं, तो उन्हें सभी विपक्षी दलों को एक साथ लाना चाहिए। तभी भाजपा को हटाया जा सकता है। शिवपाल ने कांग्रेस पर कहा कि उन्हें मध्य प्रदेश में किए गए वादे पर कायम रहना चाहिए था, तभी इंडिया गठबंधन मजबूत होगा और बीजेपी हारेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को इन छोटे नेताओं(अजय राय) पर रोक लगानी चाहिए। अगर इंडिया गठबंधन को मजबूत करना है और भाजपा को हटाना है तो सभी विपक्ष के लोगों को इकट्ठा करके गठबंधन को मजबूत करना चाहिए।

जाति जनगणना को लेकर अखिलेश ने कांग्रेस पर साधा निशाना

लखनऊ। मध्य प्रदेश में गठबंधन से इनकार से नाराज समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने राष्ट्रव्यापी जाति-आधारित जनगणना की मांग को लेकर कांग्रेस पर निशाना साधा और कहा कि यह एक चमत्कार है कि सबसे पुरानी पार्टी ने इस तरह की कवायद का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि उनके इंडिया गठबंधन सहयोगी जाति जनगणना की मांग का समर्थन करते हैं क्योंकि पिछड़ी जातियों के समर्थन के बिना आप सफल नहीं होंगे। उन्होंने कहा कि यह वही कांग्रेस पार्टी है जिसने जाति जनगणना के आंकड़े नहीं दिये थे। यह एक चमत्कार है क्योंकि अब हर कोई जानता है कि जब तक आपको पिछड़ी जातियों का समर्थन नहीं मिलेगा तब तक आप सफल नहीं होंगे। अखिलेश ने कहा कि वे जो वोट खोज रहे थे वे उनके समर्थन में नहीं थे। उन्होंने कहा, यह एक चमत्कार है कि अब कांग्रेस पार्टी जाति जनगणना चाहती है। कांग्रेस को अब पता चल गया है कि जिस वोट की उन्हें तलाश थी वह अब उनके पास नहीं है।

राहुल तो कागजी शेर हैं, उन्हें राज्य की समझ नहीं : कविता

हैदराबाद। तेलंगाना विधानसभा चुनावों को लेकर तमाम राजनीतिक दलों ने कमर कस ली है। अपनी-अपनी जीत का दावा करते हुए पार्टी के नेताओं ने राज्य चुनावी रैलियों को संबोधित किया। कांग्रेस की जीत पर भरोसा जताते हुए राहुल गांधी भी तेलंगाना के तीन दिवसीय दौरे पर पहुंचे थे। वहीं भाजपा के वरिष्ठ नेताओं ने भी राज्य में चुनावी रैलियों को संबोधित किया। आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति के बीच एक-दूसरे पर जमकर कटाक्ष किए जा रहे हैं। जहां एक तरफ राहुल गांधी ने बीआरएस की सरकार को भ्रष्ट करार दिया था। जिसके बाद से मुख्यमंत्री चंद्रशेखर राव की बेटी और बीआरएस एमएलसी के. कविता ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर

जमकर हमला किया।

राहुल गांधी पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने कहा, राहुल गांधी कागजी शेर हैं। उन्हें स्थानीय राजनीति की समझ नहीं है। राहुल गांधी बब्बर शेर नहीं हैं, वे सिर्फ एक कागजी शेर हैं। क्योंकि कोई भी उन्हें कुछ भी लिखकर देगा, वही एकमात्र चीज है, जिसे वह पढ़ेंगे और लेकर चले जाएंगे। वह इस क्षेत्र की स्थानीय परंपराओं या संस्कृति की समझ नहीं रखते हैं। वहीं राहुल गांधी पर तीखा हमला करते हुए हुए कहा, कृपया तेलंगाना आएं, लेकिन सार्वजनिक रूप से आप जो कह रहे हैं उसकी समीक्षा करें। उन्होंने कहा, ध्यान रहे तेलंगाना सबसे ज्यादा राजनीतिक जागरूकता वाला राज्य है क्योंकि हमने अपने राज्य के लिए लड़ाई लड़ी। हमने अपने राज्य के लिए अपनी जान दे दी।

बीआरएस नेता के. कविता ने राहुल गांधी पर बोलते हुए कहा, अगली बार आप जब भी राज्य में आए तो डोसा स्टॉल में डोसा खाने के बजाए शहीद मां के पास जाएं। आपको उनके दर्द का पता चलेगा। आपको तेलंगाना का मुद्दा समझ आएगा। बता दें कि राहुल गांधी अपने तीन दिवसीय दौरे पर तेलंगाना पहुंचे थे। जहां उन्होंने एक दुकान पर पहुंचकर डोसा खाया। जिस पर के. कविता का बयान सामने आया है।

भारतीय चुनाव आयोग (ईसीआई) ने नौ अक्तूबर को घोषणा की थी कि तेलंगाना विधानसभा चुनाव 30 नवंबर को होंगे। वहीं वोटों की गिनती तीन दिसंबर को होगी। तेलंगाना में आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा, सत्तारूढ़ भारत राष्ट्र समिति और कांग्रेस के बीच त्रिकोणीय मुकाबला होने वाला है।

खेल
प्रमुख समाचार

विश्वकप में आज भारत और न्यूजीलैंड के बीच भिड़ंत

नईदिल्ली। विश्वकप के अहम मुकाबले में 22 अक्टूबर को भारत और न्यूजीलैंड के बीच मैच खेला जाएगा। मैच दोपहर 2 बजे से शुरू होगा। यह मैच टूर्नामेंट के लिए बहुत ही खास है क्योंकि प्वाइंट टेबल में पहले और दूसरे नंबर की टीम की कल भिड़ंत होगी। दोनों ही टीम विश्वकप के अबतक के अपने सफर में अजेय रही है। भारत और न्यूजीलैंड ने अबतक चार-चार मैच खेले हैं। प्वाइंट टेबल में न्यूजीलैंड नंबर वन पोजिशन पर है क्योंकि उनका नेट रन रेट भारत से अधिक है। अगर आज भारत जीत दर्ज करता है तो वह एक बार फिर विश्वकप के प्वाइंट टेबल में नंबर वन बन जाएगा, साथ ही सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए उनकी दावेदारी और मजबूत हो जाएगी।

भारतीय टीम ने ऑस्ट्रेलिया को हराकर विश्वकप में अपने अभियान की शुरुआत की थी। वहीं न्यूजीलैंड ने इंग्लैंड को हराकर अपने अभियान की शुरुआत की थी। न्यूजीलैंड और भारत दोनों ही विश्वकप की प्रबल दावेदार टीम है। लेकिन भारत के लिए एक चिंता यह है कि उनके ऑल राउंडर हार्दिक पांड्?या चोटिल हैं और इस मैच में वे टीम का हिस्सा नहीं होंगे। ऐसे में उनकी जगह टीम में किसको शामिल किया जाएगा यह बड़ा प्रश्न है। संभावना जताई जा रही है कि ईशान किशन या सूर्य कुमार यादव में से किसी एक को टीम में जगह दी जाएगी। शार्दुल ठाकुर अगर टीम में होंगे तो उन्हें अपनी स्पेल पूरी करनी होगी।

वहीं न्यूजीलैंड की टीम भारत के साथ भी अपने कप्तान केन विलियमसन के बिना ही उतरेगी। इस बात का कितना फायदा टीम इंडिया को मिलेगा यह तो आने वाला समय ही बताएगा। विलियमसन के अंगूठे में फ्रैक्चर है इसलिए वे अभी आराम कर रहे हैं। बावजूद इसके न्यूजीलैंड की टीम में डेवोन कॉनवे, रचिन रविंद्र , टॉम लैथम, विल यंग, ग्लेन फिलिप्स और डेरिल मिशेल जैसे खिलाड़ी हैं, जो गेमचेंजर हो सकते हैं।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

लार्सन एंड टूब्रो ने आईआईटी इंदौर से मिलाया हाथ

नईदिल्ली। इंजीनियरिंग और निर्माण क्षेत्र की दिग्गज कंपनी लार्सन एंड टुब्रो ने शनिवार को कहा कि उसने रिन्यूएबल एनर्जी मैनेजमेंट और कंट्रोल सॉफ्टवेयर जैसे विभिन्न क्षेत्रों में ज्वाइंट रिसर्च और डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स शुरू करने के लिए आईआईटी इंदौर के साथ एक समझौता किया है। लार्सन एंड टुब्रो कंस्ट्रक्शन के पावर ट्रांसमिशन और डिस्ट्रीब्यूशन बिजनेस की डिजिटल एनर्जी सॉल्यूशन ब्रांच द्वारा समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। कंपनी ने एक बयान में कहा, संबद्धता के विभिन्न मार्गों पर स्थापित ढांचे के माध्यम से गतिविधियों का पता लगाने और उन पर काम करने के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे। यह पहल रिन्यूएबल एनर्जी इंटीग्रेशन और कंट्रोल टेक्नोलॉजीज में रिसर्च और डेवलपमेंट को आगे बढ़ाने के लिए उद्योग-अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देगी।

प्लाजा वायर्स के शेयर लगभग 100% ऊपर चढ़ा

नईदिल्ली। दलाल स्ट्रीट पर इलेक्ट्रिकल केबल कंपनी प्लाजा वायर्स के शेयर रॉकेट की तेजी से भाग रहे है। शुक्रवार यानी 20 अक्टूबर के कारोबार में प्लाजा वायर्स के शेयर बीएसई पर लगातार छठे दिन 5 प्रतिशत के अपर सर्किट के साथ 107.49 रुपये पर बंद हुए। इलेक्ट्रिकल केबल कंपनी का शेयर प्राइस इसके इश्यू प्राइस 54 रुपये प्रति शेयर के मुकाबले लगभग दोगुना या 99 प्रतिशत बढ़ गया है। कंपनी ने 12 अक्टूबर को शेयर बाजार में अपनी शुरुआत की थी। बीएसई और एनएसई पर संयुक्त रूप से 6,54,445 इक्विटी शेयरों की अदला-बदली हुई और लगभग 10 लाख शेयरों के खरीद आदेश लंबित थे। वर्तमान में, प्लाजा वायर्स बीएसई पर ट्रेड फॉर ट्रेड सेगमेंट के तहत कारोबार कर रहा है। टी2टी सेगमेंट में, प्रत्येक व्यापार के परिणामस्वरूप डिलीवरी होती है और पोजीशन की कोई इंट्रा-डे नेटिंग नहीं होती है।

येस बैंक का शुद्ध मुनाफा 225 करोड़ रुपये पर पहुंचा

नईदिल्ली। येस बैंक ने 21 अक्टूबर को वित्त वर्ष 2024 की दूसरी तिमाही के अपने नतीजों का ऐलान कर दिया है। बैंक की तरफ से शेयर बाजारों को दी गई सूचना में कहा गया है कि सालाना आधार पर बैंक का शुद्ध मुनाफा 47 फीसदी बढ़कर 225.21 करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। एक साल पहले की समान अवधि में यह 152.82 करोड़ रुपये था। समीक्षाधीन तिमाही में बैंक की परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार हुआ है। येस बैंक का ग्रोस गैर-निष्पादित परिसंपत्ति अनुपात 2 प्रतिशत और नेट एनपीए अनुपात 0.9 प्रतिशत रहा। येस बैंक की शुद्ध ब्याज आय सालाना आधार पर 3.3 प्रतिशत की गिरावट के साथ 1,925 करोड़ रुपये रह गई। वित्त वर्ष 24 की दूसरी तिमाही के लिए शुद्ध ब्याज मार्जिन सालाना आधार पर लगभग 30 आधार अंक और तिमाही आधार पर 20 बीपीएस की गिरावट के साथ 2.3 प्रतिशत पर है।

कोटक महिंद्रा बैंक का नेट प्रॉफिट 24 फीसदी बढ़ा

नईदिल्ली। प्राइवेट सेक्टर के प्रमुख बैंकों में से एक कोटक महिंद्रा बैंक ने 21 अक्टूबर को अपनी दूसरी तिमाही के नतीजों का ऐलान कर दिया है। दूसरी तिमाही में बैंक का नेट प्रॉफिट 24 फीसदी बढ़कर 3,191 करोड़ रुपये हो गया। एक साल पहले की समान अवधि में बैंक का नेट प्रॉफिट 2,581 करोड़ रुपये था। कोटक महिंद्रा बैंक ने 3092 करोड़ रुपये के बाजार अनुमान से ज्यादा का नेट प्रॉफिट दर्ज किया है। बैंक का शुद्ध ब्याज आय 6,297 करोड़ रुपये रहा, जो पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही के 5,099 करोड़ रुपये से 23.49 प्रतिशत अधिक है। शुद्ध ब्याज आय भी बाजार अनुमान 6,226 करोड़ रुपये से थोड़ा अधिक है। बैंक की सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति 1.72 प्रतिशत रही, जो पिछले साल की समान तिमाही में दर्ज 2.08 प्रतिशत से कम है।

सफलतापूर्वक इसरो ने लॉन्च की गगनयान की पहली टेस्ट फ्लाइट

प्रीतिश सहाय

अंतहीन अनंत अंतरिक्ष की असीम रहस्यों को उजागर करने की दिशा में अब भारत भी कदम बढ़ा रहा है। इसी कड़ी में आज यानी शनिवार को इसरो ने इतिहास रचते हुए स्वदेसी गगनयानी की पहली टेस्ट फ्लाइट को सफलतापूर्वक लॉन्च कर दिया है।

अंतरिक्ष में मानव भेजने का नये भारत का यह पहला सफल परीक्षण है। मिशन की सफलता से यह भी साफ हो गया है कि आने वाले समय में स्वदेशी तकनीक के सहारे भारतीय अंतरिक्ष में दुनिया के अन्य देशों को टक्कर देंगे।

इससे पहले महत्वाकांक्षी गगनयान मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम से जुड़े पेलोड के साथ उड़ान भरने वाले परीक्षण यान का कल यानी शनिवार को सफल प्रक्षेपण किया गया। रॉकेट का प्रक्षेपण पहले शनिवार सुबह आठ बजे के लिए निर्धारित था, लेकिन बाद में इसे दो बार कुल 45 मिनट के लिए टाला गया। इसरो प्रमुख एस सोमनाथ ने बाद में बताया कि किसी विसंगति के कारण प्रक्षेपण तय कार्यक्रम के अनुसार नहीं हो सका। उन्होंने कहा कि टीवी-डी1 रॉकेट का इंजन तय प्रक्रिया के अनुसार चालू नहीं हो सका था।

दो घंटे की देरी और टीवी-डी1 इंजन के शुरुआत में तय प्रक्रिया के तहत चालू नहीं हो पाने के बाद पैदा हुई घबराहट के बीच इसरो के वैज्ञानिकों ने रॉकेट का सटीक प्रक्षेपण किया। यान के क्रू मॉड्यूल एवं क्रू एस्केप पृथक्करण का लक्ष्य हासिल करते ही श्रीहरिकोटा स्थित मिशन नियंत्रण केंद्र में सांसें थाम कर बैठे वैज्ञानिकों ने तालियां बजाकर उनका स्वागत किया। इसरो ने घोषणा की कि टीवी-डी1 मिशन पूरी तरह सफल रहा। तय योजना के अनुसार पेलोड

बाद में समुद्र में सुरक्षित तरीके से गिर गए।

इसरो ने एकल-चरण तरल प्रणोदक वाले रॉकेट के इस प्रक्षेपण के जरिये मानव को अंतरिक्ष में भेजने के अपने महत्वाकांक्षी कार्यक्रम गगनयान की दिशा में आगे कदम बढ़ाया। इसरो का लक्ष्य तीन दिवसीय गगनयान मिशन के लिए मानव को 400 किलोमीटर की पृथ्वी की निचली कक्षा में अंतरिक्ष में भेजना और पृथ्वी पर सुरक्षित वापस लाना है। इसरो ने शुक्रवार को कहा था कि इस परीक्षण उड़ान की सफलता शेष परीक्षणों और मानवरहित मिशन के लिए आधार तैयार करेगी, जिससे पहला गगनयान कार्यक्रम शुरू होगा।

बता दें, इसरो एकल-चरण तरल प्रणोदक वाले रॉकेट के इस प्रक्षेपण के जरिये मानव को अंतरिक्ष में भेजने के अपने महत्वाकांक्षी कार्यक्रम गगनयान की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इस दौरान प्रथम क्रू मॉड्यूल के जरिये अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का परीक्षण किया जाएगा। इसरो का लक्ष्य तीन दिवसीय गगनयान मिशन के लिए मानव को 400 किलोमीटर की पृथ्वी की निचली कक्षा में अंतरिक्ष में भेजना और उन्हें सुरक्षित रूप से पृथ्वी पर वापस लाना है।

क्रू मॉड्यूल रॉकेट में पेलोड है, और यह अंतरिक्ष यात्रियों के लिए अंतरिक्ष में पृथ्वी जैसे वातावरण के साथ रहने योग्य जगह है। इसमें एक दबाव युक्त धात्विक आंतरिक संरचना और थर्मल सुरक्षा प्रणालियों के साथ एक बिना दबाव वाली %बाहरी संरचना% शामिल है।

गगनयान का क्रू मॉड्यूल की डिजाइन पूरी तरह आधुनिक है। इसमें कई तरह की खास सुविधाएं लगाई गई हैं। जैसे नेविगेशन सिस्टम, फूड हीटर, फूड स्टोरेज, हेल्थ सिस्टम। यह अंतरिक्ष यात्रियों की सुविधा के लिए बनाये गये हैं।

इसरो अपने मिशन गगनयान के तहत अंतरिक्ष यात्रियों को धरती से 400 किलोमीटर दूर अंतरिक्ष में भेजेगा। इस दौरान अंतरिक्ष यात्री तीन दिनों तक धरती की कक्षा के चक्कर लगाएंगे। इसके बाद इसके बाद इन अंतरिक्ष यात्रियों को सुरक्षित धरती पर लैंड कराया जाएगा।

कांग्रेस की टिकट में चली क्षत्रपों की

कहा जा रहा है कि कई सर्वे और फीड बैक के बाद भी कांग्रेस की टिकटों के बंटवारे में क्षत्रपों की ही चली। हाईकमान ने तो केवल मुहर लगाने का काम किया। ईडी की जद में आने के बाद भी देवेंद्र यादव को भिलाई नगर से फिर टिकट मिल गई। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने अपने करीबी अटल श्रीवास्तव को कोटा, छाया वर्मा को धरसींवा, गिरीश देवांगन को राजनांदगांव और शैलेश नितिन त्रिवेदी को बलौदाबाजार से प्रत्याशी बनवा दिया। इनके अलावा उनकी पसंद के और भी लोगों को टिकट मिली। खबर है कि मुख्यमंत्री ने नहीं चाहा तो खुज्जी से छन्नी साहू का पत्ता साफ़ हो गया। इसी तरह उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव ने अपने विरोधी विधायक बृहस्पति सिंह और चिंतामणि महाराज को भी पटरी से उतार दिया। सिंहदेव ने रामानुजगंज सीट से डॉ अजय तिर्की को टिकट दिलवाकर पार्टी के भीतर ताकत दिखा दी। कहते हैं सरगुजा इलाके में टिकट बांटने में तो सिंहदेव की खूब चली। विधानसभा अध्यक्ष डॉ चरणदास महंत भी टिकट बांटने में पीछे नहीं रहे। पामगढ़ से

शेषराज हरबंश, अकलतरा से राघवेंद्र सिंह,तखतपुर से रश्मि सिंह, बेलतरा से विजय केशरवानी को टिकट दिलवा ही दिया।

किस्मत वाले प्रत्याशी

ओपी चौधरी को किस्मत वाला प्रत्याशी कहा जा रहा है। ओपी चौधरी ने खरसिया छोड़कर रायगढ़ विधानसभा सीट से चुनाव लड़ना चाहा, तो वहां से टिकट मिल गई। कहते हैं ओपी चौधरी चाहते थे कि तारण प्रकाश सिन्हा रायगढ़ कलेक्टर के पद से हट जाएं, वैसा ही हुआ। अब रायगढ़ के कलेक्टर कार्तिकेय गोयल बन गए हैं। कहा जा रहा है कि जब ओपी चौधरी जांजगीर-चांपा के कलेक्टर थे, तब कार्तिकेय गोयल उनके प्रोबेशनर और सक्ती के एसडीएम थे। रायगढ़ सीट से कांग्रेस ने वर्तमान विधायक प्रकाश नायक को ही टिकट दे दिया। प्रकाश नायक को ओपी चौधरी के मुकाबले कमजोर प्रत्याशी माना जा रहा है।दोनों एक ही समाज से हैं। शक्रजीत नायक और प्रकाश नायक को छोड़कर अधिकांश समय इस सीट से अग्रवाल विधायक रहे हैं। इसे कहते हैं भाग्य का खेल। अब ओपी चौधरी की इच्छा विधायक बनने की है। इसके लिए तीन दिसंबर तक इंतजार करना पड़ेगा।

भाजपा में परिवारवाद

विधानसभा चुनाव के लिए टिकट वितरण में भाजपा का परिवारवाद उभरकर सामने आ गया। 2023 के चुनाव में पूर्व मुख्यमंत्री डॉ रमनसिंह के परिवार से तीन लोग प्रत्याशी हैं। रमन सिंह राजनांदगांव से प्रत्याशी हैं। खैरागढ़ के प्रत्याशी विक्रांत सिंह और पंडरिया की प्रत्याशी भावना बोहरा भी डॉ रमन सिंह के रिश्तेदार हैं। वहीं भाजपा ने जूदेव परिवार से भी दो लोगों को टिकट दिया है। जूदेव परिवार की बहू संयोगिता सिंह, चंद्रपुर विधानसभा से और कोटा से प्रबल प्रताप सिंह जूदेव प्रत्याशी हैं। अभनपुर विधानसभा के भाजपा प्रत्याशी इंद्रकुमार साहू को पूर्व मंत्री चंद्रशेखर साहू का रिश्तेदार बताया जा रहा है।

कलेक्टर की दादागिरी

कहते हैं एक कलेक्टर चुनाव के नाम पर दादागिरी पर उतर आई हैं। कहा जा रहा है कि कलेक्टर मेडम ने चुनाव कार्य के लिए सरकारी और व्यवसायिक वाहनों को छोड़कर अभी से निजी वाहनों का अधिग्रहण शुरू कर दिया है। चर्चा है कि इस जिले के अफसर हर छोटे-मोटे काम के लिए कारखाना मालिकों से वाहन लेने के आदि हो गए हैं। कहा जा रहा है कि एक फैक्ट्री वाले ने चुनाव कार्य के लिए किराये का वाहन दिलाने में थोड़ी आनाकानी की, तो कर्मचारी का निजी वाहन ही अधिग्रहित करने का आदेश जारी कर दिया गया। अब चुनाव अवधि में जिले के अफसर शेर हो गए हैं, उन्हें रोके तो रोके कौन ?

पहले प्रत्याशी, फिर भाजपा वोटर

कहते हैं भाजपा के करीब आधे दर्जन प्रत्याशी पहली बार भाजपा को वोट डालेंगे। भाजपा ने इस बार कई पैराशूट प्रत्याशी के साथ दूसरे दलों से आए कुछ लोगों को प्रत्याशी बनाया है। भाजपा में गुरु खुशवंतसिंह,अनुज शर्मा,रामकुमार टोप्पो, योगेश्वर राजू सिन्हा को पैराशूट प्रत्याशी माना जा रहा है। तखतपुर के प्रत्याशी धर्मजीत सिंह और राजिम के प्रत्याशी रोहित साहू अब भाजपा से चुनाव लड़ने के कारण कमल निशान पर बटन दबाएंगे। परंपरागत रूप से कांग्रेसी धर्मजीत सिंह ने पिछला चुनाव जोगी कांग्रेस से लड़ा था, उसके पहले कांग्रेस की टिकट पर मैदान में उतरते रहे हैं। रोहित साहू भी जोगी कांग्रेस से भाजपा में आए हैं। बसना के प्रत्याशी संपत अग्रवाल भी 2018 में निर्दलीय चुनाव लड़े थे। संपत अग्रवाल के खिलाफ पिछली बार दिया गया डॉ रमन सिंह का भाषण खूब वायरल हो रहा है। वैसे वे पहले भाजपाई रहे हैं।

भाजपा में ब्राम्हणों का संतुलन

भाजपा ने इस बार अब तक पांच ब्राम्हणों को प्रत्याशी बनाया है, जिनमें एक बिहारी, एक राजस्थानी, एक उड़िया और दो छत्तीसगढ़ी ब्राम्हण हैं। पेंडिंग सीट बेमेतरा और बेलतरा से भी ब्राम्हण दावेदार ताल ठोंक रहे हैं। इन दो सीटों पर भी भाजपा ने ब्राम्हण प्रत्याशी उतार दिए तो संख्या सात हो जाएगी। वैसे इस बार भाजपा ने सोशल इंजीनियरिंग के तहत काम किया है। दो कलार, दो यादव, एक अघरिया के साथ कुर्मी और साहू में भी संतुलन साधा है। हालाँकि पिछली बार की तुलना में कुछ कम साहू मैदान में उतारे हैं। चार सीटें पेंडिंग हैं , देखते हैं उन सीटों में किन वर्गों के लोगों को उतारते हैं।

भाजपा -कांग्रेस के असंतुष्टों पर सबकी निगाह

कांग्रेस ने अब तक अपने 18 वर्तमान विधायकों के टिकट काट दिए हैं ,वहीं कांग्रेस के टिकट के कई दावेदार भी प्रत्याशी नहीं बनाए जाने से नाराज हैं। भाजपा ने अपने सभी वर्तमान विधायकों को टिकट तो दे दिया है, लेकिन कई जगह प्रत्याशियों को लेकर नाराजगी है और दावेदार असंतुष्ट हैं। अब भाजपा-कांग्रेस के असंतुष्टों पर सबकी निगाह है। टिकट कटने के बाद कांग्रेस विधायक अनूप नाग ने निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर नामांकन भर दिया। चर्चा है कि बृहस्पत सिंह और दूसरे विधायक भी निर्दलीय चुनाव लड़ सकते हैं। भाजपा के नाराज नेताओं में विजय अग्रवाल और डॉ विमल चोपड़ा के निर्दलीय मैदान में उतरने की खबर चल रही है। अब देखते हैं, नाराज लोगों को दोनों दलों के दिग्गज नेता किस तरह मना पाते हैं।

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

'जी गारंटी का नहीं जी घोटाले का' कोई लिमिट नहीं: गौरव भाटिया

रायपुर. भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया ने कांग्रेस पर जमकर हमला बोला है. लूट-खसोट भ्रष्टाचार को बढ़वा दे रहे हैं. राजनीति में प्रतिद्वंद्वी होते हैं, दुश्मन नहीं होते. साथ ही गांधी परिवार पर हमला बोला, उन्होंने कहा, गांधी परिवार कह रहा है, जितना समय बचा है लूट लो, कोई लिमिट नहीं है. भूपेश जी को मंथली टारगेट देते हैं गांधी परिवार, लूटो और भेजो. कांग्रेस के लिए त्न गारंटी का नहीं त्न घोटाले का है.

आगे गौरव भाटिया ने भाजपा नेता की हत्या पर कहा, हम लोग आहत हैं, छत्तीसगढ़ की जनता ने अपना भाई खोया है. लोकतंत्र का महापर्व है, जनता के हाथ सारी शक्ति केंद्रित है. बिरझु तारम को हम श्रद्धांजलि देते हैं. यहां कानून व्यवस्था ध्वस्त है और सरकार मस्त है. मुख्यमंत्री ने एक शब्द नहीं बोला अभी तक. सरकार कानून व्यवस्था में विफल रही है. छत्तीसगढ़ की पहचान जनजती समुदाय की संस्कृति है, जो पहचान है. जनजाति समुदाय को निशाना बनाया जाए शर्मनाक है. मुख्यमंत्री कुछ दिन के मेहमान हैं.

जनजाति संस्कृति को नष्ट किया जा रहा है. धर्मांतरण करवाया जा रहा है. कार्यकर्ताओं और लीडर को टारगेट किया जा रहा है, क्योंकि बीजेपी जनजाति समुदाय के साथ खड़ी है. मुख्यमंत्री तो बीजेपी कांग्रेस सभी के होते हैं, फिर सरंक्षण क्यों दे रहे?

आगे गौरव भाटिया ने कहा, इन्हें सट्टा से प्यार है, भ्रष्टाचार से मोहब्बत है, पैसा जो दिल्ली पहुंचाना है. इनसे सत्ता ले लेना चाहिए. पूरे देश का मीडिया छत्तीसगढ़ की तरफ देख रहा है.

नक्सली, माओवादी को राज्य सरकार प्रोटेक्ट कर रही है.युवाओं को लेकर कहा गौरव भाटिया ने कहा, पीएससी के एग्जाम चिंताजनक है. पीएससी का मतलब कांग्रेसियों के बच्चें, सरकार के करीबी जिनकी योग्यता न भी हो, लेकिन सरकार के करीब हो नियुक्ति हो जाएगी ।जो उत्तर सही दे रहे हैं, उन युवाओं का सलेक्शन नहीं हो रहा है. उच्च न्यायालय ने नियुक्ति पर रोक लगाई.

करोड़पति होते हुए भी मोहन मरकाम के पास नहीं है 1 ग्राम सोना

रायपुर. कोंडागांव विधानसभा सीट से कांग्रेस ने मंत्री मोहन मरकाम को टिकट दी है. लेकिन आप ये जानकर हैरान हो जाएंगे कि करोड़पति होते हुए भी मोहन मरकाम के पास 1 ग्राम सोना-चांदी नहीं है. लेकिन उनकी दोनो पत्नियां ललिता और मैना मरकाम के पास खूब सोना है. चुनाव आयोग को दी अपनी संपत्ति की जानकारी के मुताबिक उनके पास 5 लाख 78 हजार 453 रूपए कैश है. जबकि उनकी पत्नी ललीता के पास 3 लाख 72 हजार 356 रूपए और पत्नी मैना मरकाम के पास 9 लाख 92 हजार 788 रूपए कैश मौजूद है. सोने की बात करें तो उनकी पत्नी ललिता के पास 250 ग्राम गोल्ड और 3.5 किलो चांदी है. जबकि पत्नी मैना मरकाम के पास 200 ग्राम गोल्ड और 2.5 किलो चांदी है.इसके अलावा उनके बेटे अरमान मरकाम के पास 100 ग्राम गोल्ड, बेटी अंजली मरकाम के पास 50 ग्राम गोल्ड है. जबकि दो बेटे अमन और वैभव मरकाम के पास कोई गोल्ड नहीं है. हलफनामे के मुताबिक मोहन मरकाम की कुल चल संपत्ति 1 करोड़ 66 लाख 91 हजार 123 रूपए, पत्नी ललिता मरकाम की कुल चल संपत्ति 66 लाख 96 हजार 578 रूपए और पत्नी मैना मरकाम की कुल चल संपत्ति 43 लाख 83 हजार 90 रूपए है. इसके अलावा भी मोहन मरकाम ने अपने परिवार की अचल संपत्ति का ब्योरा विस्तार से दिया है. हलफनामे के मुताबिक मोहन मरकाम के पास एक सेंट्रो कार, 1 स्कार्पियो, 1 हीरो होंडा स्प्लेंडर, 1 टीवीएस स्कूटी, एक रॉयल इंफिल्ड, इनोवा कार, और एक ऑयल टेंकर भी है।

भाजपा प्रत्याशी का तूफानी प्रचार, ठोस आधार लेकर मैदान पर उतरे पुरंदर मिश्रा

रायपुर. विधानसभा चुनाव का बिगुल बजते ही प्रत्याशियों के दौरे और जनसंपर्क ने रफ्तार पकड़ ली है. रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी पुरंदर मिश्रा को जिताने के लिए माहौल बनाने में उनके समर्थक और भाजपा कार्यकर्ता दिन-रात एक कर रहे हैं. पुरंदर मिश्रा स्वयं भी घर-घर जाकर लोगों से मुलाकात कर रहे हैं और बहुमत के साथ यह चुनाव जिताने की अपील कर रहे हैं.

अपने पक्ष में मजबूत माहौल तैयार करने के लिए पुरंदर मिश्रा खाली हाथ नहीं बल्कि ठोस आधार के साथ निकल रहे हैं, जिसमें क्षेत्र का विकास करने के साथ ही सबसे बड़ा मुद्दा उत्तर विधानसभा क्षेत्र में नशामुक्ति और कानून-व्यवस्था में सुधार करना है. संभवत: यह मुद्दों का भी प्रभाव है कि उत्तर विधानसभा क्षेत्र में हर दिन सैकड़ों की तादाद में लोग मिश्रा के मुद्दों का समर्थन कर रहे हैं और चुनाव में बहुमत के साथ उन्हें विजयी बनाने का विश्वास दिला रहे हैं।

शहर के वार्डों से मुहल्लों तक बैठकों का दौर जारी है. जनसंपर्क अभियान के दौरान रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी पुरंदर ने शनिवार को शंकर नगर मंडल अंतर्गत गुरु गोविंद सिंह वार्ड पंडरी के जगन्नाथ नगर में जनसंवाद किया.। कार्यकर्ताओं से मुलाकात की.

जगन्नाथ नगर में हुई बैठक में पुरंदर मिश्रा ने कहा, रायपुर उत्तर की जनता अब भली-भांति यह समझ चुकी है कि कांग्रेस की सरकार धोखेबाज सरकार निकली, इसीलिए लोगों ने 5 साल तक छत्तीसगढ़ की दुर्गति करने वाली कांग्रेस सरकार को उखाड़ फेंकने और एक बार फिर छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बनाने का मन बना लिया है. उत्तर विधानसभा की जनता एक ही पुकार कर रही है कि उन्हें कांग्रेस से आजादी चाहिए.

पुरंदर मिश्रा ने उत्कल समाज के प्रमुखों के साथ भी बैठक की. इस दौरान बैठक में शामिल सैकड़ों समर्थकों और भाजपा कार्यकर्ताओं ने आने वाले विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के साथ कदम से कदम और कंधे से कंधा मिलाकर चलने का संकल्प लिया. बैठक में मुख्य रूप से रायपुर उत्तर विधानसभा चुनाव संयोजक नलनिश ठोकने, लोकेश कावड़िया, सत्यशरण जीत, शंकर नगर मंडल अध्यक्ष अनुप खेलकर, प्रीतम महानंद, मखमूर खान, विपिन पटेल शामिल हुए।

प्रमुख समाचार छत्तीसगढ़/राजधानी

5 सीटों के साथ बनेगी भरोसे की सरकार: दीपक बैज

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कहा कि 75 सीटों के साथ प्रदेश में फिर से कांग्रेस की भरोसे की सरकार बनेगी। पहले और दूसरे चरण दोनों में ही कांग्रेस को बहुमत मिलेगा। किसानों को 2640 रू. में धान खरीदी, राजीव गांधी किसान न्याय योजना, आरक्षण संशोधन विधेयक पर भाजपा धोखेबाजी तथा कांग्रेस सरकार की योजनाएं कांग्रेस के तरफ से चुनावी मुद्दा है। भाजपा के पास तो जनता के पास जाने के लिये मुद्दे ही नहीं है।हमारी सरकार ने अपने जन घोषणा पत्र के 95 प्रतिशत वायदों को पूरा किया है। छत्तीसगढ़ में भाजपा मुद्दाविहीन है। इसके विपरीत कांग्रेस के पास अपनी सरकार के साढ़े चार सालों के काम की लंबी फेहरिस्त है। 400 यूनिट तक बिजली बिल आधा किया, स्वामी आत्मानंद स्कूल, गोधन न्याय योजना, राजीव गांधी किसान न्याय योजना, राजीव गांधी ग्रामीण कृषि मजदूर न्याय योजना, गोधन न्याय योजना, दाई दीदी क्लिनिक, हाट बाजार क्लिनिक, मुख्यमंत्री शहरी स्वास्थ्य योजना, मुख्यमंत्री स्वास्थ्य सुविधा योजनाओं से प्रदेश के आम आदमी का भरोसा कांग्रेस के प्रति बढ़ा है। जनता, कांग्रेस सरकार बनाम भाजपा के 15 साल की तुलना कर रही है। भाजपा ने 2003 में आदिवासियों को 10 लीटर दूध वाली गाय देने का वायदा किया था, हर आदिवासी परिवार से एक को सरकारी नौकरी का वायदा किया था, पूरा नहीं किया।

असल में भाजपा नेताओं को किसानों से नफरत है: ठाकुर

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की सरकार की छत्तीसगढ़ मॉडल से किसानों को धान की कीमत 2640 रुपए एवं 2660 रुपए प्रति क्विंटल मिला। चालू खरीफ सीजन में 20 क्विंटल धान प्रति एकड़ लगभग 2800 रु क्विंटल की दर पर खरीदी करेगी। जबकि मोदी के गुजरात मॉडल वाली डबल इंजन की सरकारें जहाँ है वहाँ के किसान औने पौने दाम में धान बेचने मजबूर है। प्रधानमंत्री के गृह राज्य गुजरात में किसानों को धान की कीमत 1315 रु मध्यप्रदेश में गुना में 1250 रु जबलपुर में 814 रु मंडला में 1800 रु यूपी के बाराबंकी में 970 रु और नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में 1150 रु में धान मिल रहा है ।प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल सरकार के द्वारा की जा रही धान खरीदी का झूठा श्रेय लेने किसान विरोधी भाजपा नेता झूठ और भ्रम फैला रहे हैं प्रधानमंत्री भी छत्तीसगढ़ आकर झूठ बोलते हैं कि धान खरीदी केंद्र सरकार कर रही है जबकि सच्चाई यह है कि यदि केंद्र सरकार धान खरीदी करती है तो गुजरात के किसान 1315 रुपए के भाव में धान क्यों बेच रहे हैं? वाराणसी में किसानों को धान के कीमत 1150 रुपए प्रति क्विंटल क्यों मिल रहा है?भारतीय जनता पार्टी के नेताओं का झूठा भाजपा शासित राज्यों में किसानों की खस्ता हाल बया कर रही है। असल में भाजपा नेताओं को किसानों से नफरत है। क्योंकि भाजपा की पूर्व रमन सरकार ने और केंद्र की मोदी सरकार ने किसानों से किए वादे को पूरा नहीं किया है।

बिरजू के हत्या में भाजपा की संलिप्तता तो नहीं : शुक्ला

रायपुर। राजीव भवन में पत्रकारों से चर्चा करते हुये प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि भाजपा प्रवक्ता टार्गेट किलिंग, भ्रष्टाचार केंद्र की सहायता तमाम विषयों पर आरोप लगाकर गये। वे भी भाजपा की झूठ की श्रृंखला को आगे बढ़ाने आये थे। भाजपा के प्रवक्ता गौरव भाटिया टार्गेट किलिंग की बात कर रहे थे उनके बयानो से भाजपा का एक बार फिर से गिद्ध वाला चरित्र उभरकर सामने आया है। भाजपा लाशों पर राजनीति कर रही है। भाजपा की आदत बन गई है लाशों पर राजनीति करना। भाजपा जिस प्रकार से टारगेट किलिंग की बात कर रही उससे आशंका पैदा हो रही, बिरजू तारम की हत्या की जांच होनी चाहिये। इससे भाजपा की संलिप्तता की भी जांच होनी चाहिये। राजनैतिक फायदे के लिये यह घटना तो नहीं हुई? ईश्वर साहू को प्रत्याशी बनाने के बाद साफ हो गया कि भाजपा किसी भी स्तर तक गिर सकती है। बिरजू तारम मामले में भाजपा के बयानों से साफ हो रहा इसमें भाजपा की सीधी संलिप्तता है। जब केंद्र सरकार ने भाजपा के 24 नेताओं को खोज-खोज कर सुरक्षा प्रदान की तो बिरजू तारम को ही सुरक्षा क्यों नहीं दी गयी? भाजपा बतायें 24 नेताओं को सुरक्षा देने का क्या पैमाना था? बिरजू तारम को सुरक्षा नहीं देने का क्या पैमाना था? आज भाजपा के लोग दावा कर रहे बिरजू तारम को खतरा था तो यह बात उन्होंने पहले क्यों नहीं बताया था?

प्रदेश की शांत फिजा में कांग्रेस जहर घोल रही : केदार गुप्ता

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता केदार गुप्ता ने भाजपा कार्यालय एकात्म परिसर में आयोजित प्रेस ब्रीफ में कल मोहला-मानपुर विधानसभा क्षेत्र में भाजपा कार्यकर्ता बिरजू तारम की हत्या की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए कहा कि ये एक दुखद घटना है। छत्तीसगढ़ में टार्गेट किलिंग, सुपारी किलिंग हो रही है। बस्तर क्षेत्र एवं आदिवासियों के बीच अपना जनाधार खो चुकी कांग्रेस पार्टी लगातार भाजपा कार्यकर्ताओं की टारगेट किलिंग, सुपारी किलिंग करवा रही है। बीते कुछ महीनों में बस्तर क्षेत्र में 6 भाजपा कार्यकर्ताओं की हत्या हो चुकी है। कल मोहला मानपुर में सनातनी भाई, भाजपा कार्यकर्ता बिरजु तारम पूर्व मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह की सभा से लौट रहे थे। हथियारबंद लोगों ने उनकी हत्या कर दी । उस इलाके में देवी की मूर्ति को हटाकर तालाब में फेंक दिया गया था और ये धमकी दी गई थी कि गांव में कोई भी देवी की पूजा नहीं करेगा और न ही वहां कोई मूर्ति लगेगी। मिली जानकारी के अनुसार बिरजू ने अपने लोगों से कहा कि उन्होंने पुन: मूर्ति की स्थापना कर दी हैं और पूजा भी कर रहे है। सभी को पूजा करने बुलाया भी था और वह पूजा करने जा रहे थे तभी उसकी गोली मारकर हत्या कर दी गई। इसके पूर्व भी कांग्रेस विधायक इंद्र शाह के सामने आदिवासी नेता सरजू टेकाम ने कहा था कि कोई भाजपा का नेता यहां चुनाव प्रचार करने आएगा तो उसका गला काट देंगे। कांग्रेस इस हत्या से दो संदेश देना चाहती हैं कि जो भी धर्मांतरण का विरोध करेगा।

कांग्रेस नेताओं की संदिग्ध हत्या की जांच कराए: संजय

रायपुर। भाजपा प्रदेश प्रवक्ता संजय श्रीवास्तव ने कांग्रेस संचार विभाग की पत्रकार वार्ता में भाजपा कार्यकर्ता बिरजू तारम की मोहला मानपुर में हुई नृशंस हत्या के मामले में भाजपा की संलिप्तता की जांच की जरूरत बताए जाने पर पलटवार करते हुए कहा कि यह कांग्रेस का ही चरित्र है, जो उसके मीडिया विभाग के मुखिया के मुख से निकल रहा है। कांग्रेस अपना इतिहास उठाकर देखे या न देखे, छत्तीसगढ़ की जनता देख रही है। उन्होंने कहा कि झीरम का सच सामने इसलिए नहीं आ रहा क्योंकि इसमें जिनकी संलिप्तता की जांच होनी चाहिए, वे सरकार में बैठे हैं। भूपेश बघेल कहते थे कि झीरम के सबूत उनकी जेब में हैं। सरकार चलाते भूपेश बघेल को 5 साल बीत गए। अब तक उनकी जेब से झीरम के सबूत क्यों नहीं निकले। कांग्रेस की राजकुमारी कहती हैं कि झीरम के शहीदों के परिवार को न्याय मिलेगा। भूपेश बघेल झीरम पर राजनीति करते हैं और झीरम के एक शहीद की विधवा और एक शहीद के बेटे की टिकट काट दी तो एक और शहीद की विधवा की टिकट भी काट दी गई। कांग्रेस के मीडिया विभाग को अपने मुख्यमंत्री से सवाल करना चाहिए कि झीरम के सबूत छिपाने पर उनकी जांच क्यों नहीं होना चाहिए।भाजपा प्रदेश प्रवक्ता संजय श्रीवास्तव ने कहा कि कांग्रेस का इतिहास उसके नेताओं की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत के मामलों से भरा पड़ा है।

कौशल्या माता मंदिर में भूपेश सरकार ने सिर्फ़ पोताई की: डॉ. रमन

रायपुर। कौशल्या माता मंदिर की पुताई कर दी भूपेश ने, सैकड़ों साल पुराना मंदिर है. भूपेश बघेल की कोई उपलब्धि नहीं. राम वन गमन पथ में एक रुपए भूपेश सरकार ने नहीं लगाया. नक्शा बनाने भर से नहीं हो जाता. पेपर में अपनी फोटो देकर वह खर्च करते हैं. कांग्रेस भेष बदल कर हिंदुत्व का चोला पहनना चाहती है, वहीं कांग्रेस भगवान राम के अस्तित्व पर शंका करती है, सुप्रीम कोर्ट में एफिडेविट देती है. वही कांग्रेस कालनेमि की तरह राम-राम बोल रही है. यह बात डॉ. रमन सिंह ने लल्लूराम डॉट कॉम-न्यूज 24 के रेसिडेंट एडिटर आशीष तिवारी से खात बातचीत में कही.

विधानसभा चुनाव के लिए राजनीतिक दलों के नेताओं का चुनाव प्रचार पूरे शबाब पर है. पहले चरण के लिए दिन-रात चुनाव प्रचार में जुटे पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने आशीष तिवारी से खास बातचीत में कहा कि पूरे बस्तर से सरगुजा तक पूरे छत्तीसगढ़ में घूमने के बाद मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि राज्य में स्थिति स्पष्ट हो गई है. बीजेपी इस चुनाव में कांग्रेस से बहुत आगे हैं. स्पष्ट बहुमत के साथ राज्य में बीजेपी की सरकार बन रही है. मुद्दे स्पष्ट हैं. कांग्रेस की असफलता साफ है. जन घोषणा पत्र में किए वादे अधूरे हैं. पांच साल में भूपेश सरकार ने राज्य को अपराध ग्रस्त बना दिया.उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार में सरकार आकंठ डूबी है. कोल से चारा और गौठान घोटाला करने वाली यह सरकार है. छत्तीसगढ़ के युवाओं के साथ भूपेश सरकार ने छल किया. 25 लाख 50 लाख रुपए की बोली सरकारी नौकरी में लगाई है. महादेव एप चलाने वालों को संरक्षण सीएम हाउस से मिलता रहा. अरबों रुपए का सट्टा घोटाला बताता है कि करप्शन कहां तक पहुंच गया है.

पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि बीजेपी अपने मुद्दों को जनता तक पहुंचाने में सफल हुई है. 15 साल की सरकार को जनता ने देखा. कानून व्यवस्था देखी, भाईचारा देखा, प्रेम देखा. स्वर्णिम काल राज्य की जनता ने देखी है. सरकार बनने के बाद राज्य को विकास की पटरी पर दोबारा बीजेपी लेकर आएगी.

उन्होंने कहा कि जन घोषणा पत्र में कांग्रेस ने झूठ बोलकर जनता की आंख में धूल झोका, वोट लिया, सरकार बनाई, लोगों को छला गया. आज लोग पछता रहे हैं. लोग सरकार से बदला लेने के लिए तैयार है. बीजेपी ने जो विश्वास 15 सालों तक जनता का जीता था, उस पर खरी उतरेगी. युवा, महिला, मजदूर, हर किसी की सुध सरकार लेगी. बीजेपी के घोषणा पत्र में सारे मुद्दों को डाला जाएगा. अपराधियों पर कार्रवाई, पीएससी के भ्रष्टाचारियों को सजा, भ्रष्टाचार से निजात दिलाने जैसे वादे हम अपने घोषणा पत्र में करेंगे.

महादेव एप को बंद क्यों नहीं कर रही मोदी सरकार: सीएम बघेल

रायपुर. महादेव ऑनलाइन सट्टा एप को लेकर ईडी के चालान पर सीएम भूपेश बघेल ने केंद्र सरकार पर आरोप लगाया है कि चुनावी फंड ले लिया होगा, इसलिए एप बंद नहीं करवा रही. भाजपा ने महादेव सट्टे का पैसा दाउद और पाक के जरिए कांग्रेस को मिलने का आरोप लगाया है. इस पर सीएम ने कहा कि मुर्खतापूर्ण बात कह रहे हैं. इससे हास्यास्पद बात और क्या हो सकती है. पूरे देश में शायद किसी राज्य ने कार्रवाई की तो छत्तीसगढ़ में हमने की. 450 लोगों की गिरफ्तारी हुई और हमने खुद होकर लुक आउट नोटिस जारी करने लिखी. एप के संचालक को गिरफ्तार करने कहा, जो विदेश में है.सीएम बघेल ने मीडिया से चर्चा में कहा, केंद्र सरकार एप बंद क्यों नहीं करती. एप बंद करने का काम केंद्र का है, राज्य का नहीं. चुनावी फंड तो नहीं ले लिया, केंद्र सरकार महादेव एप क्यों बंद नहीं कर रहे. यह एप पूरे देश में चल रहा है. उसमें आप ही के लोग (भाजपा) तो बैठते हैं. केक काट रहे, पार्टी कर रहे, उसकी गिरफ्तारी क्यों नहीं कर रहे. हमने कार्रवाई की, आप नहीं कर रहे. आपके क्या संबंध हैं. सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि सबसे बड़ी बात यह है कि सट्टा आम लोग खेलते हैं. पैसा वो वसूल रहे, लोगों को बर्बाद कर रहे और ये जीएसटी लगा रहे, कार्रवाई नहीं कर रहे. कर रहे तो हमारे लोगों को पकड़ रहे, सलाहकार को पकड़ रहे, जहां कुछ नहीं मिला. केवल बदनाम करने कार्रवाई कर रहे, संचालक को क्यो नहीं पकड़ रहे. बघेल ने कहा कि हिम्मत है तो इन सवालों के जवाब दे देना.

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.